

**Press Information Bureau
Government of India
Prime Minister's Office**

12-January-2016 19:28 IST

Text of PM's address at the National Youth festival through video conferencing

भारत के कौने-कौन से आए मेरे नौजवान साथियों।

आज 12 जनवरी स्वामी विवेकानंद जी की जन्म जयंती हम युवा दिवस के रूप में मनाते हैं। इस देश में दो महापुरुषों को इस देश का युवा विशेष रूप से नमन करता रहा है। अगर कोई हमारे सामने भगत सिंह का नाम लें या कोई हमें स्वामी विवेकानंद की याद दिला दें तो उसी पल हमारा माथा उन महापुरुषों के चरणों में झुक जाता है। बहुत ही छोटी आयु में कोई क्या कर सकता है। अगर जीवन में संकल्प का सामर्थ्य हो, संकल्प के लिए समर्पित भाव हो और जीवन आहूत करने की अदम्य इच्छा हो, तो व्यक्ति के लिए उम्र कोई मायना नहीं रखती। मेरे सामने देश के हजारों युवक बैठे हैं, वो हिंदुस्तान के कौने-कौने से आए हैं। उनका लालन-पालन अलग-अलग हुआ है। उनकी खान-पान की आदतें अलग हैं, उनकी बोली अलग है, उनका पहनाव अलग है, लेकिन उसके बावजूद भी ये सारे नौजवान इस एक बात से जुड़े हुए हैं। उनके मन मंदिर में एक मंत्र लगातार गूंजता रहा है। और वह ही हम सब की प्रेरणा है। और वो मंत्र क्या है? आजादी के आंदोलन के समय जिस वंदे मातरम की गूंज ने कश्मीर से कन्या कुमारी अटक से कटक पूरे हिंदुस्तान को आजादी के आंदोलन में पिरो दिया है। एक मंत्र होता है जो जीवन में कुछ कर दिखाने की प्रेरणा बन जाता है। आज वही मंत्र चाहे उसको भारत मां की जय के रूप में कहते हो, चाहे वंदे मातरम के रूप में कहते हो। पहले मां भारती को गुलामी की जंजीरों से मुक्त कराने के लिए वो हमारी ताकत बन गया था। और आज आजाद हिंदुस्तान में भारत को नई ऊंचाईयों पर ले जाने के लिए, विकास की नई ऊंचाईयों को सिद्ध करने के लिए, समस्याओं से मुक्ति दिलाने के लिए, हिंदुस्तान के गांव, गरीब किसान, मजदूर उनके जीवन में बदलाव लाने के लिए यही मंत्र हमारी प्रेरणा बनता है। पहले देश के लिए मरने की प्रेरणा देता था। आज वही मंत्र हमें देश के लिए जीने की प्रेरणा देता है। और आप सब नौजवान अपने लिए नहीं, देश के लिए कुछ करने के इरादे से किसी न किसी संकल्प से बंधे हुए हैं। आप कुछ करना चाहते हैं। और यह देश प्रगति तब करता है जब सवा सौ करोड़ देशवासी किसी न किसी संकल्प से बंधे हो। उस संकल्प की पूर्ति के लिए कुछ कदम चलने के लिए प्रयासरत हो। मंजिल को पाने के लिए अविरत कोशिश करते हो, तो देश अपने आप उस मंजिलों को पार कर जाता है।

आज पूरे विश्व का परिवेश देखे पूरा विश्व आज भारत की तरफ एक बड़ी आशा भरी नजर से देख रहा है। क्यों ? इसलिए कि हिंदुस्तान एक संभावनाओं का देश है। आपार अवसर जहां इंतजार कर रहे हैं। दुनिया इसलिए हिंदुस्तान की तरफ देख रही है, क्योंकि आज हिंदुस्तान विश्व का सबसे युवा देश है। 65 प्रतिशत जनसंख्या 35 से कम आयु की हो, वो देश कितना सौभाग्यशाली है कि जिसके पास कोटि-कोटि युवा लोग हैं। और जहां युवा होता है, वहां संकल्पों की कोई मर्यादाएँ नहीं होतीं, सीमाएँ नहीं होतीं। कभी-कभार हमारे देश में युवा की परिभाषा को लेकर अलग-अलग हमें बातें सुनने को मिलती है। शासत्रों से ले करके अब तक युवा की परिभाषा बहुत हो चुकी है। हर किसी का अपना नजरिया होता है। कुछ लोगों के लिए उम्र का दायरा यह युवा की पहचान के रूप में माना जाता है। मैं कभी-कभी सोचता हूँ कि युवा यह परिस्थिति का नाम नहीं है। युवा यह मनस्थिति का नाम है। मनस्थिति है, जो युवा की परिचायक होती है। जब कोई व्यक्ति अपने बीते हुए पल को बार-बार याद करता है, दोहराता रहता है तो मैं यह सीधा-सीधा अर्थ निकालता हूँ कि वो अपनी युववाणी खो चुका है। वो बुढ़ापे की आरे

चल चुका है। लेकिन जो बीते हुए कल को बार-बार दोहराने की बजाय आने वाले कल के सपने संजोता रहता है, वो उसके लिए मेरा मन हमेशा कहता है वो सच्चे अर्थ में युवा है। अगर आप अपने आप को युवा मानते हो तो युवा वो है जो बीते हुए कल की बातों को दोहरा करके अपने समय को बर्बाद नहीं करता है, लेकिन जो आने वाले सपनों को संजोने के लिए पल-पल प्रयास करता है और हर सपने को साकार करने के लिए अपने आप को खपा देता है।

देशभर से आए हुए युवा उन सपनों का सम्पुट है। हम देशभर के लोग विविधताओं के बीच यहां बैठे हैं, क्या कारण है। वो कौन सा कारण हमें जोड़ रहा है। सद्भावना यह अपने आप में एक बहुत बड़ी शक्ति होती है। क्या हमारे अंदर एक दूसरे के प्रति आदर-भाव न होता, सद्भाव न होता। अपनेपन का कोई नाता न होता, तो हम इतनी अपने आप से जुड़ सकते? भारत विकास करना चाहता है और इस बार आपकी इस युवा परिषद का विषय भी बड़ा महत्वपूर्ण है। एक तरफ व्यक्ति का, उसके सामर्थ्य का और युवा से जुड़े हुए विषय को ले करके आया है उसका एक पहलू है skill, दूसरा है भारत का क्या हो तो कहते हैं विकास। और तीसरी बात आपने कही है कैसे हो तो वो है सद्भाव। क्या, क्यों, कैसे? इस बात को ले करके इस समारोह को आप चार दिन चर्चा के लिए आज प्रारंभ कर रहे हैं। अगर हमारे देश में एकता नहीं होगी, जन-जन के प्रति सद्भाव नहीं होगा, आदर भाव नहीं होगा, दूसरे की परंपराएं, दूसरे के विचार, उसके प्रति अगर सम्मान का भाव नहीं होगा, तो शायद भारत को प्रगति में रुकावटें आएंगी, विकास में रुकावटें आएंगी और इसलिए समय की मांग है और हर नौजवान के जीवन का एक व्यवहार है कि हम शांति, एकता, सद्भावना, जो भारत जैसे विविधताओं से भरे हुए देश के लिए प्रगति की गारंटी है। भारत के पास सब कुछ हो, धन हो, दौलत हो, बेशुमार पैसे हों, हर नौजवान को नौकरी हो, हर परिवार में सुख और सम्पन्नता हो, लेकिन, लेकिन अगर देश में शांति, एकता और सद्भावना नहीं होगी, तो वो सारी सम्पत्ति किसी के काम नहीं आएगी। न वो देश का गौरव बढ़ाएगी, न आने वाली पीढ़ियों के लिए भविष्य का कोई रास्ता बनाएगी। और इसलिए हम विकास कितना ही करें, कितनी ही ऊंचाइयों को पार करें, लेकिन शांति, एकता और सद्भावना, ये भारत की पहली आवश्यकता रहती है।

और भारत ने दुनिया को दिखाया है कि जिस देश के पास सैंकड़ों बोलियां हो, अनेक भाषाएं हों, अनेक परम्पराएं हों, अनगिनत विविधताएं हों, उसके बाद भी साथ जीने-मरने का स्वभाव हो, ये हमारी बहुत बड़ी विरासत हैं जो हमारे पूर्वजों ने हमें दी हैं, स्वामी विवेकानंद जैसे महापुरुषों ने दी हैं और इसे हमने संजो के रखना है।

वेद से विवेकानंद तक और उपनिषद से उपग्रह तक हम इसी परम्परा में पले-बढ़े हैं। उस परम्पराओं को बार, बार, बार, बार स्मरण करते हुए, संजोते हुए भारत को एकता के सूत्र में बांधने के लिए सद्भावना को सेतु उसको हम जितना बल दें, देते रहना होगा।

उसी प्रकार से अगर व्यक्ति के जीवन में सामर्थ्य नहीं होगा तो राष्ट्र के जीवन में सामर्थ्य कहां से आएगा? 21वीं सदी एशिया की सदी है कहते हैं, 21वीं सदी हिंदुस्तान की सदी बन सकती है कैसे? जब हम, हमारे देश के युवा शक्ति के समर्थ को पहचानेंगे। विकास यात्रा में उसको पिरोयें और विकास की ऊंचाइयों को पार करने के लिए उसे हम अपना भागीदार बना लें। तब जा करके, तब जा करके हम राष्ट्र के सपनों को पूरा कर सकते हैं। अनेक मार्ग हैं, उसमें एक महत्वपूर्ण मार्ग है हुनर, skill development, हमारे देश के नौजवान के हाथ में सिर्फ कागज और कलम होगी तो देश आगे नहीं बढ़ सकता है। अपार ज्ञान का भंडार तो हो ही हो, कागज और कलम का सामर्थ्य तो हो ही हो, लेकिन देश को आगे बढ़ने के लिए हुनर चाहिए, skill चाहिए, बदले हुए युग में जहां technology एक महत्वपूर्ण रोल अदा कर रही है, भारत के एक manufacturing hub बनने की संभावना है। अगर भारत दुनिया का एक manufacturing hub बन सकता है तो उसका पहला कारण ये नहीं है कि हमारे पास raw material है, पहला कारण ये नहीं है कि हमारे पास market है, पहला कारण ये नहीं है कि हमारी आवश्यकता है, पहला कारण ये है कि हमारे देश के पास, नौजवानों के पास अगर हुनर है तो वो सबसे बड़ी ताकत है। और

इसलिए हमारी सरकार ने skill को, हुनर को बहुत महत्व दिया है।

देश की आजादी के बाद पहली बार skill development एक अलग ministry बनाई गई, skill development की अलग policy बनाई गई, skill development के लिए अलग बजट बनाया गया और हिन्दुस्तान में एक ऐसी जाल बिछाने की कोशिश है कि गरीब से गरीब व्यक्ति, अनपढ़ से अनपढ़ व्यक्ति भी अपने जीवन में कुछ करने के लिए इच्छा करता है तो उसको सीखने का अवसर मिलना चाहिए, उसके हाथ में कोई हुनर होना चाहिए और वो हुनर को प्राप्त कराने के लिए सरकार पुरजोर प्रयास कर रही है।

हमारे छत्तीसगढ़ में रमन सिंह जी ने तो skill को एक अधिकार के रूप में develop किया है। उन्होंने कानूनी व्यवस्था का प्रयास किया है। मैं पिछली बार जब छत्तीसगढ़ आया था तो skill development किस प्रकार के उन्होंने काम की रचनाएं की हैं उसको मैंने अपनी आंखों से देखा। जहां नक्सलवाद, नौजवानों को गुमराह करने के लिए भरपूर कोशिश करता है, उसी इलाके में, उसकी छाती पर, skill development के द्वारा सपनों को संजोने के प्रयास छत्तीसगढ़ में हो रहे हैं। ये बधाई के पात्र हैं। और जब आप छत्तीसगढ़ में हैं तो आपको बहुत सी बातें सुनने को मिलेंगी कि नौजवानों के विकास के लिए क्या-क्या वहां हो रहा है।

मैं ये ही आपसे कहना चाहता हूं कि हम भी इस बात को ले करके आगे बढ़ना चाहते हैं कि देश में skill development को कैसे बल दिया। skill development से मैं एक बात आप नौजवानों से कहना चाहता हूं, दुर्भाग्य से हमारे देश में हम लोगों ने एक ऐसी मनस्थिति बना ली है जो दिमाग से काम करता है वो बड़ा है और जो हाथ से काम करता है वो छोटा है। इस मनस्थिति को बदलना पड़ेगा। हम हमारी मां का इतना सम्मान करते हैं, मां का आदर करते हैं, हमारी मां कहा है। बहुत कम लोग होंगे जिसकी मां को दिमाग से काम करने का अवसर मिला है। बाकी सब लोग हम ऐसे हैं जिनकी मां हाथ से काम करती है, कपड़े धोती हैं, खाना पकाती है, झाड़ू लगाती है, और उस मां का हम सम्मान करते हैं, मां का गौरव करते हैं। लेकिन समाज में हाथ से काम करने वाला हमें छोटा लगता है, बढ़िया कपड़े पहन करके टेबल-कुर्सी पर बैठा हुआ बाबू हमें बड़ा लगता है, लेकिन हमें कोई ऑटो-रिक्शा का ड्राइवर हमें छोटा लगता है। कोई plumber, कोई mechanic, कोई turner, कोई fitter, कोई wireman, कोई फूलों का गुलदस्ता बनाने वाला, ये हमें छोटे लगते हैं, हमारी ये मानसिकता हमें बदलनी होगी। हमें उनके प्रति भी सद्भाव पैदा करना होगा और सद्भाव तब होगा जब शुरूआत समभाव से होगी। मेरे में और उसमें कोई अन्तर नहीं है, हमारे और उसके बीच में एक समभाव है। जब समभाव होगा तो सद्भाव अपने-आप पनपने लग जाएगा और इसलिए white collar job and blue collar job, ये शब्द हमारे यहां चल रहे हैं। जो अपने पैरों पर खड़ा है। जो अपने पैरों पर खड़ा है। जो अपने हाथ की ताकत से अपनी जिंदगी बनाता है। जिसकी उंगलियों में नया करने का दम होता है। उससे बड़ा गौरव करने के लिए क्या हो सकता है। और इसलिए हम skill development पर बल देना चाहते हैं। हम समाज में एक मनोवैज्ञानिक बदलाव लाना चाहते हैं। कोई काम छोटा नहीं होता और इसलिए हमने एक movement चलाया है। श्रम एव जयते। dignity of labor हम बल दे रहे हैं उस पर और इसलिए कभी-कभी क्या लगता है। कितना ही गरीब व्यक्ति हो, उसके मन में मनोवैज्ञानिक प्रभाव पैदा हो गया है कि जब तक बेटा graduate नहीं होता, मां-बाप को भी संकोच होता है कि कोई रिश्तेदारों को परिचय क्या करवाएं। और इसलिए उसको लगता है कि graduate होना बहुत अनिवार्य है। लेकिन क्या सातवीं कक्षा पास, 10वीं कक्षा पास बेटा ITI में गया हो। और Technically बड़ा सामर्थ्यवान हो तो उनको संकोच होता है, परिचय करवाने में। यह psychology को बदलना है। यह आवश्यक नहीं है कि हमारे पास graduate होने का प्रमाण पत्र हो और बेरोजगारी की जिंदगी हो। हम सातवीं क्यों न पास हो, 10वीं पास क्यों न हो, हमारे हाथ में हुनर होना चाहिए और अपने पसीने से पैसों को पैदा करने की ताकत होनी चाहिए। ऐसे समाज की अवस्था होनी चाहिए और इसलिए नौजवानों में बल देने का प्रयास हम कर रहे हैं। हम विकास की ओर जाना चाहते हैं। और विकास का मेरा सीधा-सीधा मतलब है। देश के गरीबों की

जिंदगी में बदलाव, हिंदुस्तान के गांवों की जिंदगी में बदलाव। गांव में अच्छी शिक्षा हो, गांव में अस्पताल हो, बच्चों को पढ़ने के लिए अच्छा टीचर हो। बूढ़े अगर बीमार हैं तो अच्छा डॉक्टर हो। सस्ती दवाइयां हो, रहने के लिए अच्छा घर हो। गांव में आने-आने के लिए अच्छे रास्ते हो, पीने के लिए शुद्ध पानी हो। आजादी के इतने सालों के बाद भी हम इसको पूरा नहीं कर पाए हैं और उसको पूरा करना हमारा एक दायित्व है। और विकास, यही विकास है। विकास यानी यह नहीं है कि हम कितने बड़े-बड़े भवन बनाते हैं। और कितनी बड़ी संख्या में बाबूओं को तैयार करते हैं। और इसलिए हमारा विकास का मॉडल सामान्य मानव की जिंदगी में बदलाव लाना है। और सामान्य मानव की जिंदगी में बदलाव लाने के लिए हमने skill development को महत्व दिया है।

आने वाले दिनों में चार दिन के बाद 16 तारीख को हमें एक कार्यक्रम को लॉन्च कर रहे हैं – Startup India Standup India हमारे देश के नौजवानों के पास कल्पकता के वो धनी हैं, अनेक नई चीजों की उनके पास सोच है, समस्याओं के समाधान के लिए वो रास्ते खोजते हैं। हमारे यहां गांव में हमने देखा होगा खेत में काम करने वाला व्यक्ति भी अपने आप Technology develop कर देता है और उस Technology से अपना काम कर लेता है। अपनी एक ही मोटर साइकिल होगी, उस मोटरसाइकिल से दस प्रकार के काम लेना गांव का आदमी जानता है। इसका मतलब कि हमारे पास innovative सोच, innovation यह भारत के पास हैं। लेकिन उसे प्रतिष्ठा कैसे मिले, पुरस्कार कैसे मिले, प्रोत्साहन कैसे मिले, आगे बढ़ने के लिए रास्ता कैसे मिले। उस दिशा में सरकार एक गंभीरता से सोच करके उस योजना को लागू कर रही है। 16 तारीख को जब यह बड़ा कार्यक्रम होगा आप भी अपने-अपने इलाके में कहीं पर वीडियो कॉन्फ्रेंस के द्वारा अगर इस कार्यक्रम में शरीक होते हैं, तो आपने शरीक होने का प्रयास करना चाहिए। और skill development का next stage होता है Startup India उसी प्रकार से सरकार ने मुद्रा योजना घोषित की है। प्रधानमंत्री मुद्रा योजना।

हमारे देश में बहुत लोग हैं जिनके पास कुछ करने की इच्छा है। लेकिन पैसे के आभाव में कर नहीं पाते। वो unfunded है। बैंकों के दरवाजे उनके लिए खुले नहीं थे। हमने बदलाव लाया और बैंकों के दरवाजों को खोल दिया।

बैंकों को, दरवाजों को खोल करके मुद्रा योजना के तहत उन नौजवानों को पैसे देने का प्रयास शुरू किया है और मुझ खुशी है कि बहुत ही कम समय में ये जो योजना बनाई गई, प्रधानमंत्री मुद्रा योजना, करीब-करीब दो करोड़ लोगों को बैंक से बिना कोई गारंटी, पैसे दिए गए। इतने कम समय में बैंकों के द्वारा दो करोड़ लोगों को पैसे मिल रहा है और करीब-करीब 80 हजार करोड़ रुपये नौजवानों के हाथ में रख दिए हैं। नौजवानों पर मेरा भरोसा है। देश की युवा शक्ति पर भरोसा है। देश के सपने अगर कहीं पर निवास करते हैं तो देश के युवा दिलों में रहते हैं। और इसलिए उस पर हमने ध्यान केंद्रित किया है। मैं चाहता हूं कि जो लोग कुछ कर गुजरना चाहते हैं, वे नौकरी की तलाश क्यों करें, अपने पैरों पर खड़े क्यों न हों। मैं नहीं चाहता हूं मेरे देश का नौजवान job seeker बने, मैं चाहता हूं मेरे देश का नौजवान job creator बने। मैं ऐसी जिंदगी जिऊंगा कि दो-चार और पांच लोगों को मैं कोई न कोई रोजगार दूंगा, ये भी हमारा सपना होना चाहिए। मैं रोजगार के लिए तड़पने वाला नौजवान नहीं हो सकता हूं, मैं रोजगार देने वाला एक साहसिक नौजवान हो सकता हूं। और ये ही तो जिंदगी का लक्ष्य होना चाहिए कि मैं ओरों के लिए कुछ कर सकता हूं। और एक बार ये सपना ले करके चलोगे तो कर भी पाओगे। और इसलिए आप अगर उस बात को ले करके चलते हैं तो मेरा आपसे अनुरोध है, मैं आपको विश्वास दिलाना चाहता हूं, मैं आपके साथ हूं। ये सरकार आपके साथ है, ये पूरा हिन्दुस्तान आपके साथ है। आप उस लिए सपने संजो करके ले करके निकलिए। और इसीलिए skill development का अपना एक महत्व है, start-up India, stand up India का महत्व है, प्रधानमंत्री मुद्रा योजना का महत्व है।

मैंने अभी एक स्वच्छता का अभियान चलाया है। 15 अगस्त को मैंने लालकिले से कहा था, लेकिन मैं आज गर्व से कह सकता हूं कि वो स्वच्छता अभियान किसी प्रधानमंत्री का अभियान नहीं है, वो नरेंद्र मोदी का अभियान नहीं है। देश के हर नागरिक ने

इसको अपना बना लिया है। हर कोई उसमें कुछ न कुछ करना चाहता है। अभी मैंने कहा 26 जनवरी को हमारे महापुरुषों के जितने statue हैं, उसकी सफाई एक नागरिक के नाते हम क्यों न करें? और मेरे पास खबरें हैं कि देश भर में इतने नौजवान आगे आए हैं, इतने स्कूल कॉलेज आगे आए हैं, इतने संगठन आगे आए हैं, even मुझे बताया गया नेहरू युवा केंद्र हो, NCC हो, NSS हो, ये सब लोग मैदान में आए हैं। सबने तय कर लिया है कि अब हमारे गांव में महापुरुषों के statue और वो परिसर हम गंदा नहीं रहने देंगे। कुछ लोगों ने तो 26 जनवरी का भी इंतजार नहीं किया है और already काम शुरू कर दिया है। यही तो देश की ताकत होती है। लेकिन पहला एक समय था, हम सब देखते थे हां ये महापुरुष की प्रतिमा है, फिर बात भी करते देखो यार कितना गंदा है, कोई संभालता नहीं है। आज, आज हर कोई चर्चा करता है, यार ये हमारे गांव के अंदर ये छह महापुरुषों के पुतले हैं उसकी सफाई हम करेंगे। एक नया माहौल बना है। नेहरू युवा केंद्र के और NSS के नौजवानों ने इसका बीड़ा उठाया है। मुझे विश्वास है बहुत बड़ी सफलता मिलेगी।

इस बार आप पिछले करीब 20 साल से ये समागम करते आए हैं, मेरी आपसे आग्रह है, मेरा आपसे अनुरोध है, इस बार जाने से पहले आप 2019 का कोई संकल्प ले करके जा सकते हैं क्या और 2019 तक हम इतना करेंगे। मैं 2019 इसलिए कह रहा हूं कि 2019 महात्मा गांधी की 150वीं जयंती है। महात्मा गांधी को स्वच्छता बहुत पसंद थी। 2019 तक का हमारा कोई time table बना करके हम जा सकते हैं क्या। और हम हर महीने उसका लेखा-जोखा लें, हिसाबा-किताब करें, संकल्प तय करें, योजना बनाएं, रोडमैप बनाएं और आंखों को दिखने वाला परिवर्तन ला करके रहें और दूसरा सपना 2022 का हम लें।

एक 2019 का हमारा रोडमैप और दूसरा 2022 का रोडमैप हम लें। 2022 इसलिए कि भारत की आजादी के 75 साल हो रहे हैं। हिंदुस्तान की आजादी के 75 साल हम कैसे मनाएं। अभी से हम कैसी तैयारियां करेंगे। हम अपने आप को उसके लिए उसको कैसे तैयार करेंगे। हमारी अपनी संस्था हो, हमारा परिवार हो, हम व्यक्ति हो, हम खुद क्या कर सकते हैं। इस पर हम सोचते हैं। और इसलिए रायपुर से आप जब निकले तब 2019 और 2022 कोई न कोई लक्ष्य निर्धारित करके उसका रोडमैप तय करके निकलिए। उसके लिए कौन समय देगा, कितने घंटे देगा। यह संकल्प ले करके चलिए। उसी प्रकार से मैं विशेष रूप से नौजवानों का एक बात के लिए आभार व्यक्त करना चाहता हूं कि आज के इस युवा समारोह के लिए मैंने देश के नौजवानों को आग्रह किया था कि आप मुझे नरेंद्र मोदी एप आप मोबाइल पर उसको download कर सकते हैं। नरेंद्र मोदी एप पर अपने सुझाव भेजिए। मुझे इस बात का गर्व है कि देश के हर कौने से हजारों नौजवानों ने मुझे हजारों सुझाव भेजे। देश का नौजवान कितना जागरूक है और नरेंद्र मोदी एप मेरे लिए एक सरल माध्यम बन गया है कि मैं सीधे आपसे जुड़ जाता हूं। मैं उन सभी नौजवानों का अभिनंदन करना चाहता हूं, जिन्होंने समय निकाल करके, सोच करके देश के काम आने के लिए अपने विचारों से मुझे लाभान्वित कराया। हजारों नौजवानों ने मुझे सुझाव भेजे, मैं उन सबका आभारी हूं।

26 जनवरी मैंने देश के सामने, देश के नौजवानों के सामने एक विषय रखा है और आग्रह किया है कि हमारे यहां एक चर्चा होनी चाहिए। अधिकार और कर्तव्य। भारत के संविधान ने हमें दोनों जिम्मेदारियां दी हैं। लेकिन आजादी के बाद ज्यादातर हम लोगों की प्राथमिकता अधिकार पर रही है। कर्तव्य ज्यादातर व्यक्तिगत स्वभाव से जुड़ गया, समाज स्वभाव से छूट गया। कर्तव्य सामाजिक स्वभाव बनाना है। कुछ लोगों को कर्तव्य में रूचि हो, कर्तव्य करते रहे इससे देश नहीं चल सकता। सवा सौ करोड़ देशवासियों का कर्तव्य का भी स्वभाव बनना चाहिए। और अगर एक बार कर्तव्य की हवा बन जाती है तो अधिकारों की रक्षा अपने आप हो जाती है। मैं चाहूंगा कि 26 जनवरी को मैंने पिछली मन की बात में इस बार तो कहा, कईयों ने इस बात को आगे बढ़ाया है। आप भी इस बात को आगे बढ़ाएं ऐसी मैं अपेक्षा करता हूं। छत्तीसगढ़ का प्यार छत्तीसगढ़ की मेहमाननवाजी, आप सबको बहुत याद रहेगी। मेरा सौभाग्य रहा मुझे छत्तीसगढ़ में बहुत लम्बे अर्से तक रहने का अवसर मिला है, इसलिए मैं उनके प्यार को भली-भांति समझता हूं। उनके स्वागत करने की परंपरा को भली-भांति समझता हूं। लेकिन मैं इस बार इसका आनंद नहीं ले पा रहा हूं। क्योंकि कुछ जिम्मेदारियां यहां भी मेरे सिर पर रहती हैं। लेकिन मैं मन से

आपके साथ हूं। इस समारोह की मैं सफलता के लिए शुभकामनाएं देता हूं और देख सकते हैं कि संकटों के बीच में भी कैसी जिंदगी गुजारी जा सकती है। छत्तीसगढ़ कुछ वर्षों से नक्सलवाद के कारण परेशान है। माओवाद के कारण परेशान है। और मैं नौजवानों को कहता हूं। हमारे हाथ में हुनर होना चाहिए, हत्या करने के लिए हमारा हाथ कभी काम नहीं आना चाहिए। यह हाथ हुनर से नए सपनों को संजोने के लिए काम आना चाहिए। यह हाथ किसी के सपनों को समाप्त करने के लिए हत्या का कारण नहीं बनना चाहिए। छत्तीसगढ़ के नौजवानों ने माओवाद की इस भयानकता के बीच भी छत्तीसगढ़ को भरपूर बढ़ाने का प्रसास किया है। छत्तीसगढ़ को नई ऊंचाईयों पर ले जाने की कोशिश की है। संकटों के बीच भी समाधान के रास्ते निकाले जा सकते हैं। संकटों के बीच में भी विकास की यात्रा की जा सकती है। संकटों के बीच भी संकल्पों को पूरा किया जा सकता है। यह छत्तीसगढ़ से हम अनुभव कर सकते हैं। आज उस धरती में हैं, रायपुर में हैं। आपको प्रेरणा मिलेगी। मेरी आप सबको बहुत-बहुत शुभकामनाएं। और हमारे खेल मंत्री श्रीमान सोनेवाल जी, वो आपके बीच में हैं। बड़े उत्साही हैं। जरूर उनका लाभ मिलेगा आपको। आप सबको बहुत-बहुत शुभकामनाएं, बहुत बहुत धन्यवाद।

अतुल कुमार तिवारी/ शाहबाज़ हसीबी /सतीश/ तारा/ निर्मल

**Press Information Bureau
Government of India
Prime Minister's Office**

02-January-2016 21:33 IST

Text of PM's address at Centenary Celebrations of Jagadguru Dr. Sri Shivarathri Rajendra Mahaswami ji of Sri Suttur Math

मुझे पूछ रहे थे कि मैं हिन्दी में बोलू तो यहां translation करने की जरूरत है क्या? स्वामी जी स्वयं बताए कि कोई जरूरत नहीं, यहां सब हिन्दी समझते हैं। ये मेरा सौभाग्य है कि इस पवित्र उपक्रम में मुझे सरीक होने का अवसर मिला है। इतनी बड़ी संख्या में संतों की हाजिरी हो, इतने वरिष्ठ संत, इस उम्र में, इस समारोह में उपस्थित हो, ऐसा सौभाग्य कहां मिलता है।

कुछ दिन पहले मैं लंदन गया था। लोकतंत्र की बातें, मानवतावाद की बातें, women empowerment की चर्चाएं, दुनिया के देशों को लगता है ये सारे विचार वहीं पर शुरू हुए, वहीं पर पैदा हुए और दुनिया को वहीं से मिले। जहां इस प्रकार की सोच है वहां पर मुझे उस महापुरुष के statue का अनावरण करने का सौभाग्य मिला। वे बसेश्वर जी, social reformers कैसे होते हैं, women empowerment क्या होता है, grass root level democracy की ताकत क्या होती है, सदियों पहले इसी धरती के महापुरुष बसेश्वर जी ने दुनिया को करके दिखाया। स्वीडन के पार्लियामेंट के स्पीकर उस अवसर पर मौजूद थे और जो मैंने समाज सुधार का महान काम करने वाले बसेश्वर जी की बातें सुनाई तो उनके लिए तो आश्चर्य था कि सदियों पहले भारत में महापुरुष का ऐसा चिंतन हुआ करता था और वो सिर्फ विचार नहीं व्यवहार भी था, आचरण भी था और करके दिखाया था। आज उसी परंपरा की एक कड़ी के साथ मुझे जुड़ने का सौभाग्य मिला है। मैं अपने आप को बहुत भाग्यशाली मानता हूं।

सारे विश्व में, इस बात के विषय में बहुत कम जानकारी है और कभी-कभी तो विश्व छोड़ो हमारे देश में भी एक बहुत बड़ा वर्ग ऐसा है जो अपने आप को बहुत बड़ा बुद्धिमान मानता है, बड़ा elite class मानता है। उन्हें अंदाजा नहीं है कि भारत में ऋषियों ने, मुनियों ने, संतों ने, मंतों ने समाज हित के लिए कितने बड़े-बड़े काम किए हैं। उनका उस तरफ ध्यान ही नहीं है और इसलिए जहां-तहां हमारी इस महान परंपरा की आलोचना करते रहना यही कुछ लोगों की आदत बन गई है। इस देश की विशेषता है कि हजारों साल पुराने इस समाज जीवन में समय-समय पर किसी न किसी बुराई ने प्रवेश कर दिया है। समाज में विकृति आई, गलत चीजें घुस गई, गलत परंपराएं घुस गई, जिसने इस समाज की आत्मा को भी तहस-तहस कर दिया लेकिन उसके बाद यही समाज की ताकत देखिए कि इसी समाज में से संत पैदा हुए, समाज सुधारक पैदा हुए, ऋषि-मुनि पैदा हुए और उन्होंने समाज के विरोधों के बावजूद भी समाज सुधार का बीड़ा उठाया और समाज की बुराइयों से समाज को मुक्त कराने का अविरत प्रयास किया।

हजारों साल से ये देश, ये परंपराएं, ये संस्कृति इसलिए बची है कि हर युग में जब-जब संकट आया, जब-जब हमारे भीतर बुराइयां आई, हमारे भीतर से ही एक नई ऊर्जा पैदा हुई, नया नेतृत्व पैदा हुआ, नई ताकत पैदा हुई, नई परंपरा पैदा हुई और समाज सुधार का काम चलता रहा और इसलिए मैं आज जब His Holiness जगतगुरु श्री डॉ. शिवराथरी राजेन्द्र महास्वामी जी के शताब्दी समारोह में आया हूं, उस महाने परंपरा को नमन करने के लिए आया हूं, जिस महान परंपरा ने समाज के हितों की, समाज के कल्याण की, चिंता करने में कभी कोई कमी नहीं की।

हम आजादी के आंदोलन को देखे, इस तरफ हमारे लोगों का ध्यान बहुत कम जाता है। लेकिन अगर हम आजादी के

आंदोलन को देखे तो 19वीं शताब्दी में और 18वीं शताब्दी, ये दो शताब्दी पर हम नजर गड़े तो हमारे ध्यान में आएगा कि 20वीं शताब्दी में जो आजादी के आंदोलन की तीव्रता पैदा हुई, उसके पीछे 19वीं शताब्दी और 18वीं शताब्दी में हमारे संतों महंतों ने, जिसको हम भक्ति युग कहते हैं, उस भक्ति युग में जो चेतनाएं जगाई गईं, भारत की आत्मा को जगाने का प्रयास हुआ और हिन्दुस्तान के हर क्षेत्र, इलाके में, पूर्व हो, पश्चिम हो, उत्तर हो, दक्षिण हो, हर भाषा-भाषी ने, कोई तो एक संत पैदा हुआ जो संत, मठ-मंदिरों से बहार निकला, एक सामूहिक जागरण का अभियान चलाया। पूरे देश में फिर से एक बार समाज की आत्मा को जगाने का काम दो शताब्दी तक हमारे संतों ने, हमारे महापुरुषों ने किया और वो चेतना जगी। जिस चेतना में से 1857 के स्वतंत्रता संग्राम की ज्योति जगी। वही एक तरह से 1947 में, देश आजादी को प्राप्त कर सका। आजादी के आंदोलन की पीठिका ऐसे महापुरुषों ने रची। जिसको आगे महात्मा गांधी का नेतृत्व मिला और देश ने महात्मा गांधी को भी कभी राजनेता के रूप में नहीं देखा था। उसी संत परंपरा की एक कड़ी के रूप में देखा था, तभी तो उनको महात्मा कहा था। जो बात संतों-महंतों के लिए कही जाती थी, वो बात महात्मा गांधी के लिए कही जाती थी। उसी परंपरा का नेतृत्व मिला और तब जाकर के देश को आजादी प्राप्त हुई और इसलिए भारत ने समाज जीवन के हर कबीला-कबिलाई, कबीलों से मुक्ति दिलाने का काम हमारे संतों के द्वारा हुआ है।

उसी प्रकार से, आज हम इस पीठ को देखते हैं। मुझे तो यहां पहले भी आने का सौभाग्य मिला है। शिक्षा के क्षेत्र में कितना बड़ा काम किया है। करीब एक लाख विद्यार्थियों की जिन्दगी, यहां बदल रही है। एक प्रकार से सरकार का काम संत कर रहे हैं। सरकार का बोझ भी हल्का कर रहे हैं और समाज की शक्ति बढ़ा रहे हैं।

आज यहां इस शताब्दी समारोह में knowledge Resource Centre का आरंभ हो रहा है। ये बात सत्य है कि पिछली शताब्दियों में राष्ट्र की शक्ति को नापने का आधार या तो धन शक्ति हुआ करता था या तो सैन्य बल शक्ति द्वारा। इस देश के पास कितना military power है और कितना money power है उसके आधार पर विश्व में उस देश की ताकत को नापा जाता था। उसी के आधार पर वो देश कितना शक्तिशाली है और उसके आधार पर विश्व में उसकी स्वीकृति बनती थी। लेकिन वक्त बदल चुका है, आज धन बल हो या सैन्य बल हो, इतने से गाड़ी चलती नहीं है। 21वीं सदी ज्ञान की सदी है, knowledge की century है। जिसके पास ज्यादा information होगी, ज्यादा knowledge होगा, समय के अलग सोचने वाले innovations होंगे, दुनिया पर उसी देश की चलने वाली है। और इसलिए 21वीं सदी की ताकत को संतों ने पहचाना है और उस ताकत को वैज्ञानिक तरीके से रंग देने के लिए आज knowledge Resource Centre का आरंभ हो रहा है।

पिछली अनेक शताब्दियों में मानव जाति ने ज्ञान के आधार पर, विज्ञान के आधार पर, technology के आधार पर जो प्रगति की है, आज हर घंटे, हर दिन, हर महीने, हर साल विज्ञान के नए अविष्कार, ज्ञान का सर्वश्रेष्ठ प्रभाव, technology का प्रभुत्व, समाज जीवन को इतनी तेजी से बदल रहा है, जो पिछली शताब्दियों में कभी नहीं हुआ था। जिस गति से दुनिया बदल रही है, technology विज्ञान और ज्ञान के आधार पर उसको cope-up करने के लिए कभी-कभी मानव की कल्पना शक्ति भी कम पड़ जाती है। कहीं एक जगह पर लोग आगे बढ़े तो हम सोचते रह जाते हैं कि भई हम वहां कहां पहुंचेंगे। दुनिया इतनी तेजी से ज्ञान-विज्ञान और technology के सहारे बदल रही है। क्या भारत इंतजार करता रहेगा क्या? क्या भारत यही सोचता रहेगा क्या कि कोई महापुरुष, संत, महात्मा के आशीर्वाद मिल जाएंगे और देश महान हो जाएगा। संत भी ऐसा नहीं मानते हैं, संत भी मानते हैं कि knowledge Resource Centre बनाने चाहिए।

नए innovations होने चाहिए। पिछले दिनों आपको पता होगा पेरिस में दुनिया के सभी देशों के लोग इकट्ठे आए थे। एक बड़ा विश्व का कुंभ मेला लगा था और वे सब ब्रह्मांड की चर्चा करने में लगे थे, Global warming के लिए, Global warming से कैसे मानव जात को बचाया जाए, विश्व को बचाया जाए, पृथ्वी को बचाया जाए, इसकी चिंता हो रही थी। लेकिन वहां पर दो

बातें हुईं। एक भारत, अमेरिका, फ्रांस, इनके initiative थे, innovation पर बल देने के लिए योजना बने और इस संकट का सामना करना होगा, तो नए अनुसंधान करने पड़ेंगे, innovations करने पड़ेंगे और उसके लिए एक सामूहिक रूप से प्रयास करने की आवश्यकता है और दूसरा वाला निर्णय हुआ। जो देश जहां 300 दिवस से ज्यादा सूर्य प्रकाश उपलब्ध होता है, ऐसे देश इकट्ठे आएँ। विश्व में करीब 122 countries ऐसे हैं कि जहां Solar Radiation काफी मात्रा में हैं और इससे भारत के प्रयासों से, भारत के नेतृत्व में दुनिया के 122 देश जहां 300 दिवस से ज्यादा सूर्य प्रकाश रहता है इकट्ठे आएँ और सूर्य शक्ति का मानव जात में कैसे उपयोग हो, उस पर एक संगठन का निर्माण किया है।

इन चीजों का आने वाले युगों तक प्रभाव रहने वाला है। उसके मूल में ज्ञान है, विज्ञान है, technology है, innovation है और वही, वही बदलाव आया है और बदलाव को लाने की दिशा में एक उत्तम कदम है। और मैं मानता हूँ कि शताब्दी समारोह तक पूज्य स्वामी जी को उत्तम से उत्तम श्रद्धांजलि, इस एक उत्तम कदम के द्वारा दी जा रही है और इसके लिए आप सब बधाई के पात्र हैं, अभिनंदन के पात्र हैं।

भारत सरकार की तरफ से इन उत्तम प्रयासों के लिए हमेशा-हमेशा के लिए कंधे से कन्धा मिलकर के देश, दिल्ली में बैठी हुई सरकार आपके साथ चलेगी और नए innovations समाज-जीवन के काम आएँ, ज्ञान का भंडार, मानव जात के कल्याण का कारण बनें, उस दिशा में हम प्रयास करते रहें।

आज जब मैं इस पवित्र कार्यक्रम में आया हूँ, मैं देश के जवानों का गर्व करना चाहता हूँ, देश के सुरक्षा बलों का गर्व करना चाहता हूँ, उनका अभिनंदन करना चाहता हूँ। जब युद्ध होते हैं तो दुश्मन देश, अपने सामने वाले देश की सैन्य शक्ति पर घात करने के प्रयास करता है। आज मानवता के दुश्मनों ने जो भारतीय प्रगति को देखने की उनको परेशानी हो रही है, ऐसे तत्वों ने ऐसी ताकतों ने पठानकोट में हिंदुस्तान की सैन्य शक्ति का अंग Airbase देने का प्रयास किया है। मैं देश के सुरक्षा बलों को बधाई देता हूँ कि दुश्मनों के उन इरादों को उन्होंने खाक में मिला दिया। उनको सफल नहीं होने दिया और जिन जवानों ने शहादत दी है, उनकी शहादत को मैं नमन करता हूँ और देशवासियों को मैं विश्वास दिलाता हूँ कि हमारे सुरक्षा बलों में वो सामर्थ्य है कि दुश्मनों की कोई भी नापाक इरादों को उठते ही वो खत्म करने की ताकत रखते हैं और देश को सुरक्षा प्रदान करते हैं। उन जांबाज जवानों को बधाई देता हूँ, उन सुरक्षा बलों को अभिनंदन करता हूँ और ऐसे समय राष्ट्र का आत्मविश्वास, राष्ट्र का धैर्य और राष्ट्रीय एकता एक स्वर में राष्ट्र जब बोलता है तो दुश्मन के घर नष्ट हो जाते हैं। उस संकल्प लेकर के आगे बढ़ें। इसी एक अपेक्षा के साथ बहुत-बहुत धन्यवाद आपका। पूज्य स्वामी जी के श्री चरणों में प्रणाम करता हूँ और ये knowledge Resource Centre 21वीं सदी में हमें नई ताकत दें, इसी अपेक्षा के साथ बहुत-बहुत धन्यवाद।

अतुल कुमार तिवारी/ अमित कुमार/ मनीषा/ मुस्तकीम खान

**Press Information Bureau
Government of India
Prime Minister's Office**

02-January-2016 19:23 IST

Text of PM's address at the Avadhoota Datta Peetham in Mysuru

गुरुदेव दत्त! दत्त पीठ में मैं पहली बार आया हूँ, लेकिन इस परंपरा से मैं काफी सालों से जुड़ा हुआ हूँ। जो भी नर्मदा तट पर अपना समय बीताते हैं तो नर्मदा तट पर अगर किसी को साधना करने का अवसर मिलता है तो गुरुदेव दत्त के बिना न वो साधना आरंभ होती है, वो साधना की पूर्णावृत्ति है। चाहे आप नरेश्वर जाएं, चाहे गुरुदेश्वर जाएं, दत्त कृपा से ही वो पूरा क्षेत्र प्रभावित है और पूरी नर्मदा की साधना जो है। जो नर्मदा के साधक होते हैं, जो नर्मदा की परिक्रमा करते हैं वे सुबह-शाम दो ही मंत्र बोलते हैं, नर्मदा हरे और गुरुदेव दत्त। ये ही दो मंत्र होते हैं जो पूरी साधना का हिस्सा होते हैं। मुझे खुशी हुई, पिछले सप्ताह गुरु जी गुजरात होकर के आए, कच्छ के रेगिस्तान में होकर के आए। 'रण उत्सव' तो देखा लेकिन सबसे बड़ी बात है। वहां पर Kalo Dungar पर गुरुदेव का जन्मस्थल, तीर्थस्थान है और गुरुदेव दत्त की जयंती पर वहां पर एक बहुत बड़ा समारोह होता है, हिंदुस्तान का वो आखिरी स्थान है। उसके बाद रेगिस्तान और रेगिस्तान के उस पार पाकिस्तान है। उस स्थान पर गुरुदेव दत्त का स्थान है और अभी-अभी दत्त जयंती गई तो दत्त जयंती को मनाने के लिए गुरुदेव वहां गए थे और बड़ी प्रसन्नता मुझे भी व्यक्त कर रहे थे। मेरा भी सौभाग्य है, आज मुझे दत्त पीठ आने का अवसर मिला।

इस परंपरा ने जो सामाजिक काम तो किए ही हैं, लेकिन हमारे देश में संतों के द्वारा, ऋषियों के द्वारा, मुनियों के द्वारा जो भी होता है, समाज हित में ही होता है, समाज के लिए होता है, समाज के लिए समर्पित होते हैं लेकिन उसकी पहचान नहीं होती है क्योंकि उनको लगता है कि ये तो मेरे कर्तव्य का हिस्सा है इसलिए वो कभी ढोल नहीं पीटते हैं और उसके कारण दुनिया में एक छवि है कि भारत के संत-महंत, साधु-महात्मा या उनका मत-संदर्भ और उनका पूजा-पाठ और उसी में व्यक्त करते हैं लेकिन अगर हम देखेंगे तो हमारे देश में सारी ऋषि परंपरा, संत परंपरा ये समाज उद्धार के लिए लगी हुई है, समाज-सेवा में लगी हुई है। पूज्य स्वामी जी के जितने परिकल्प हैं चाहे वो पर्यावरण की रक्षा का हो या पंखियों की चेतना को समझने का प्रयास हो या उनकी नाद ब्रह्म की उपासना हो, नाद ब्रह्म की उपासना अप्रतिम मानी जाती है। नाद ब्रह्म के सामर्थ्य को हमारी परंपराओं ने स्वीकार किया है और इसलिए बहुत कम लोग होते हैं जो नाद ब्रह्म की उपासना कर पाते हैं। ब्रह्म का ये रूप जिसको feel किया जा सकता है बाकी ब्रह्म के रूप को feel नहीं किया जाता है। नाद ब्रह्म है, जिस ब्रह्म के रूप को हम feel कर सकते हैं, अनुभव कर सकते हैं और उसकी साधना के द्वारा सामान्य जन को ब्रह्म तक पहुंचाने के लिए नाद का माध्यम, ये स्वामी जी ने करके दिखाया है और विश्व के बहुत बड़े फलक पर, हमारी इस महान परंपरा को from known to unknown, क्योंकि सामान्य मानवी गीत और संगीत तो जानता है लेकिन उसे आध्यात्मिक रूप को जानना और उसको ब्रह्म से जोड़ना, एक अविरत काम पूज्य स्वामी जी के द्वारा हुआ है, विश्व के अनेक स्थानों पर हुआ है। मुझे भी कुछ ऐसे स्थानों पर जाने का अवसर हुआ है लेकिन मूल स्थान पर आने का आज पहली बार अवसर मिला है, तो मेरे लिए सौभाग्य है।

मैं स्वामी जी को प्रणाम करता हूँ और उनकी समाज-सेवा के लिए जो काम गिरी है, जो काम चल रहा है, उसको भगवान दत्त के आशीर्वाद मिलते रहे और गरीब से गरीब, सामान्य से सामान्य व्यक्ति की सेवा में ये शक्ति काम है। ये ही मेरा प्रार्थना है, गुरुदेव दत्त!

अतुल तिवारी/अमित कुमार/ मुस्तकीम खान

**Press Information Bureau
Government of India
Prime Minister's Office**

21-February-2016 13:24 IST

Text of PM's address at the centenary celebration of Gaudiya Mission at Kolkata

पश्चिम बंगाल के राज्यपाल श्रीमान केसरी नाथ जी त्रिपाठी, त्रिपुरा के राज्यपाल, श्रीमान तथागत राय, केन्द्र में मंत्री परिषद में मेरे साथी श्रीमान बाबुल सुप्रियो जी, पश्चिम बंगाल के मंत्री श्रीमान हकीम जी, गौड़िया मिशन अध्यक्ष श्रीमंत भक्ति शौर्य परिराज गोस्वामी महाराज जी, मायापुर से चैतन्य मठ के आचार्य, श्रीमंत भक्ति प्रज्ञानज्योति महाराज जी, भजन कुटीर वृंदावन के आचार्य श्रीमान भक्ति गोपनन्द बोन महाराज जी, देवानन्द गौड़िया मठ के आचार्य श्रीमंत भक्ति वेदांत प्रजाटक महाराज जी, गौड़िया मिशन के सचिव भक्ति सुंदर सन्यासी महाराज जी, गौड़िया संघ के आचार्य श्रीमंत भक्ति प्रसून साधू महाराज, नई दिल्ली के पहाड़गंज से गौड़िया मठ के भक्ति विष्णु विचार विष्णु महाराज जी, श्यामवेदी गौड़िया मठ विजयवाड़ा के प्रभारी भक्ति, विदभगता भागवत महाराज जी और विशाल संख्या में पधारे हुए गौड़िया मठ के सभी अनुयायी भक्तजन।

कुछ समय पहले महाराज जी मेरे पास आए थे। उनका आग्रह था कि शताब्दी वर्ष का समारोह है, आप उसमें आइए। मेरा ये बड़ा सौभाग्य है कि मुझे इस महान परम्परा के सभी प्रतिनिधियों का एक साथ दर्शन करने का मुझे सौभाग्य मिला है। भारत दुनिया के लोगों को एक अचरज रहा है क्या कारण है इतने घाव और इतने आघातों के बाद भी यह देश आज भी खड़ा है। इस जहां से पता नहीं कौन-कौन मिट गए सारी हम कविताएं पढ़ते रहते हैं। क्या बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी। काल के प्रहारों के बीच वो ही टिक पाता है, जिसके भीतर एक अंतर्भूत आत्मिक शक्ति होती है। इस विशाल भारत की अंतर्भूत आत्मिक शक्ति तो उसका अध्यात्म है। शायद दुनिया में ऐसी आध्यात्मिक परम्परा कहीं नजर नहीं आएगी, जहां पर इस महान विचार को मानने वाले, स्वीकार करने वाले, इतनी विविधताओं से भरे हुए हों। ये समाज इतना विशाल है, व्यापक है, गहन है, गहरा है कि जहां मूर्ति पूजा को मानने वाला भी उसका गौरव गान करता है और मूर्ति पूजा का घोर विरोध करने वाला भी उसकी प्रशंसा करता है।

जो साकार को स्वीकार करता है वो भी इस राह पर चलता है, जो निराकार को समर्पित है वो भी उसी प्रकार से चल रहा है। जो परमात्मा की पूजा करता है वो भी इसे शिरोधार्य मानता है। जो प्रकृति की पूजा करता है वो भी इसे शिरोधार्य मानता है। और ऐसी कौन सी ताकत है? वो ताकत पूजा पाठ सिर्फ नहीं है, सिर्फ ग्रंथ नहीं है, सिर्फ वाणी नहीं है। वो ताकत हमारी आध्यात्मिक चेतना में है। हम सम्प्रदायों से बंधे हुए लोग नहीं हैं। समय रहते सम्प्रदाय आते हैं, जाते हैं, पंथ और परम्पराएं विकसित होती हैं। लेकिन हम अध्यात्मता के एक अटूट नाते के साथ जुड़े हुए लोग हैं और वही शक्ति है, जो हमें सतकर्म की ओर प्रेरणा देती है। चैतन्य महाप्रभू भक्ति के प्रणेता थे। भक्ति युग के पुरोधा थे। भक्त बनना आसान नहीं होता है। हाथ में माला है। मुंह में ईश्वर का जाप है। इतने मात्र से दुनिया की नजर में तो हम भक्त बनते हैं। लेकिन भक्त बनना है, तो भक्त वही होता है, जो विभक्त नहीं होता। जहां मुझ में और मुझ को बनाने वाले के बीच कोई विभक्त नहीं है। मैं और वो दोनों ही एकरूप हैं, तब मैं भक्त बनता हूं और चैतन्य महाप्रभू भक्त थे। जहां कोई विभक्त को स्थान नहीं था, वे कृष्ण में डूबे हुए थे। कृष्ण उनमें समाहित हो चुका था और तब जाकर के ये भक्ति आंदोलन खड़ा होता है। भारत की विशेषता रही है कि अनेक आक्रांत आए, शासकीय व्यवस्थाओं में जय-पराजय की घटनाएं घटती रही। अत्याचार, जुल्म चलते रहे। लेकिन उसके बावजूद भी देश की आध्यात्मिक धारा को खरोंच तक नहीं आई।

अगर हम भारत के आजादी के आंदोलन को देखें तो आजादी की लड़ाई लड़ने वाले महापुरुष हमारे सामने आते हैं। उनका बलिदान, उनका त्याग, तपस्या को कोई कम नहीं आंक सकता है। लेकिन इस बात को हम भूल नहीं सकते कि भारत के

आजादी के आंदोलन की पीठिका अगर किसी ने तैयार की थी, तो इस भक्ति आंदोलन ने की थी। चाहे चैतन्य महाप्रभू हों, चाहे आचार्य शंकर देव हों, चाहे तिरुवल्लुवर हों, चाहे बशवेश्वर हों। अनगिनत ऐसे संत पुरुषों, ऐसे भक्ति मार्गी आध्यात्मिक चेतना से भरे हुए दिव्यांश ऐसे हमारे महात्मा, जिन्होंने भक्ति आंदोलन के माध्यम से भारत की उस आध्यात्मिक धारा को सदा-सर्वदा चेतनमंत रखा। उसको खरोंच तक नहीं आने दी और उसके स्वाभिमान को टिकाए रखा उसके सत्व को टिकाए रखा। और तभी जाकर के जब आजादी के आंदोलन ने विराट रूप लिया, तो ये ताकत उसके साथ एक बहुत बड़ी पीठिका के रूप में काम आ गई।

कभी-कभी हम लोग यहां वैष्णव आंदोलन की चर्चा कर रहे हैं। लेकिन जब हम 'वैष्णव जन तो तेने रे कहिये' ये जब गाते हैं या सुनते हैं, हम में से कभी किसी को विचार नहीं आया होगा कि जो 'वैष्णव जन तो तेने रे कहिये' में गा रहा हूं जिसको मैं सुनता हूं तो मुझे परिचित लगता है। वो किस भाषा में लिखा गया है। ये सवाल कभी किसी के मन में उठा नहीं है। यहां बैठे हुए लोगों को भी मैं दावे से कहता हूं आपके मन में भी 'वैष्णव जन तो तेने रे कहिये' ये सुनने के बाद कभी ये सवाल नहीं उठा होगा कि किस भाषा में लिखा गया है? कहने का तात्पर्य यह है कि उसके भाव के साथ हम इतने घुल-मिल गये हैं, उसमें हम इतने विलीन हो चुके हैं कि भाषा हमारे लिए कारण नहीं रही है। भाव ही हैं जो हमें प्रेरणा देते रहते हैं। और ये 'वैष्णव जन तो तेने रे कहिये' उसी काल में लिखा गया जब चैतन्य महाप्रभू जिस आंदोलन को चलाते थे, गुजरात की धरती पर नरसिंह मेहता, अस्पृश्यता के खिलाफ लड़ाई लड़ते थे। और उन्होंने गीत लिखा और महात्मा गांधी को बहुत प्रिय था। लेकिन मैंने कुछ उसमें छेड़छाड़ करने कोशिश की थी कभी। हक तो नहीं है मुझे। सैंकड़ों साल पहले जो महापुरुष पैदा हुए, उन्होंने जो बात कही उसको हाथ लगाने का हक तो नहीं है, लेकिन लोगों को समझाने के लिए मुझे सरल रहता था। तो मैं कभी उसका उपयोग करता था पहले। मैं कहता था 'वैष्णव जन तो तेने रे कहिये जो पीर पराई जाने रे, पर दुखे उपकार करे तोहे मन अभिमान ना आने रे।' तो मैंने कहा कि जो आज जनप्रतिनिधि हैं ये वैष्णव जन की जगह प्रतिनिधि शब्द लिख देना चाहिए। 'जनप्रतिनिधि तेने रे कहिए जो पीड़ पराई जाने रे, पर दुखे उपकार करे तोहे मन अभिमान ना आने रे।' वाछ-काछ मन निश्चल राखे, पर धन नवजाले हाथ रे।' यानी चार सौ साल पहले भी करप्शन की चिंता थी। पर धन नवजाले हाथ रे, लोक प्रतिनिधि तो तेने रे कहिए। वैष्णव की बात नरसिंह मेहता जी की बात गांधी जी को क्यों इतनी प्यारी लगी होगी तो मुझे उसके एक-एक शब्द में ताकत नजर आती है। और कृष्णा एक ऐसा विराट रूप, न जाने कितना कुछ लिखा गया है। न जाने कितना कुछ कहा गया है। उसमें शास्त्र की भी अनुभूति होती है और शस्त्र का भी अहसास होता है। कोई ऐसा व्यक्तित्व जिसके हर रूप को भक्त पसंद करते हों और हर रूप की अलग भक्त धारा हो। कुछ लोग हैं जिनको मक्खन चोरी करने वाला ही कन्हैया प्यारा लगता है। तो कुछ लोग हैं जिनको सुदर्शनधारी से नीचे कृष्ण अच्छा नहीं लगता है। उनको तो सुदर्शन चक्रधारी चाहिए। और कुछ लोग हैं जो बांसुरी बजाने वाला, राधा के साथ गोपियों के साथ रास करने वाला कृष्ण पसंद आता है। कितनी विविधता है कितने स्वरूप और हर किसी को मानने वाला एक तबका एक जीवन की ऐसी प्रेरणा दे सकता है, उसका हम अंदाज कर सकते हैं और जिस गीता की रचना हुई, शायद विश्व में ऐसी कोई रचना नहीं है, जो युद्ध भूमि में रची गई हो। यानी निर्लिप्त जीवन क्या होता है अपने पास पड़ोस में क्या चल रहा है, उससे भी परे एक व्यक्तित्व की ऊंचाई क्या होती है कि जहां युद्ध होता हो, अपने मरते हों अपने को मरते देखते हो और उस समय एक शास्त्र का सृजन होता हो ये कौन सी ताकत होगी कि जो युद्ध भूमि में पैदा हुई और इसलिए और युद्ध के समय भी जहां जय और पराजय के संघर्ष के बावजूद भी अलिप्तता की चर्चा जिस संदेश में कही गई हो। गीता का संदेश वो ताकत तो देता है। और उस अर्थ में गौड़िया मिशन के द्वारा वैष्णव परम्परा को जीवित रखते हुए और आखिर ये परम्परा जैसा अभी महाराज जी बता रहे थे। दरीद्र नारायण की सेवा, 'सेवा परमो धर्मः' यही तो हमारा जीवन का उद्देश्य रहा होना चाहिए। जो औरों के लिए जीना जानता है। जो औरों के लिए अपने आपको आहूत करना जानता है। जो औरों के लिए अपने आपको खपाना जानता है। और हमारे देश के महान महापुरुषों की सारी माला देख लें, उस माला में यही तो संदेश है। हम कभी-कभी एक चिंतन सुनते हैं दुनिया में Live and let Live 'जिओ और जीने दो।' ये देश उससे एक कदम आगे है। ये कहता है जिओ और जीने दो और अगर उसके जीने की क्षमता नहीं है, तो उसको जीने के लिए मदद करो। गुजराती में बहुत अच्छा शब्द है 'जीवो अने जिवाड़ो।' औरों को जीने के लिए हम जो कुछ भी कर सकते हैं करें। सिर्फ उसको उसके नसीब पर न छोड़ें। इस महान विचार और चिंतन को लेकर के हम निकले हुए लोग हैं

और वैष्णव एक प्रकार से विश्व को अपने-आप में समाने की बात करता है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' ये मंत्र उसी बात का परिचायक है कि जिसमें पूरे ब्रह्माण्ड को अपने में समाने की चर्चा होती है। ऐसी इस महान परम्परा को मैं प्रणाम करता हूँ। दुनिया में समय रहते व्यक्ति में जैसे दोष आते हैं, व्यवस्था में जैसे दोष आते हैं, वैसे समाज में भी दोष आते हैं, बहुत सी पुरानी बातें समाज के लिए कालबाह्य होती हैं। और कभी-कभी उसको लेकर के चलना समाज के लिए बोझ बन जाता है। समाज के लिए संकट बन जाता है। लेकिन बहुत कम समाज ऐसे होते हैं कि जहाँ अपने अंदर आ रही बीमारियों को पहचान पाएँ, अपने अंदर आ रही बुराइयों के खिलाफ आवाज़ उठाने की हिम्मत करें और समाज में भी ऊँचाई देखिए कि समाज के भीतर घुसी हुई बुराइयों के खिलाफ लड़ने वालों को समाज आध्यात्मिक रूप में स्वीकार करता है, उनकी पूजा करता है। भारत में हर सदी में आपने देखा होगा कि समाज की कोई न कोई बुराई के खिलाफ हिन्दू समाज में से ही कोई सुधारक पैदा हुआ। उसने उस समाज को रोका, टोका, बुराइयों से बचने के लिये निकलने के लिए कहा और प्रारंभ में उसको सहना पड़ा। यही तो बंगाल की धरती है। राजा राममोहन राय सती प्रथा के खिलाफ इतनी बड़ी लड़ाई लड़े। ईश्वर चंद विद्यासागर समाज की बुराइयों के प्रति कितनी जागरूकता लाए थे। ये हमारी सदियों पुरानी परम्परा रही है कि हर कालखंड में जब-जब समाज में विकृति आई, समाज में दोष आए बुराइयाँ आईं। कोई न कोई महापुरुष निकला, इसी समाज में से निकला और उसने समाज को कोसा, डांटा, सुधारने का प्रयास किया और समाज ने उसको महात्मा के रूप में स्वीकार किया, महापुरुष के रूप में स्वीकार किया। दोनों तरफ ताकत नजर आती है। जो समाज सुधार को स्वीकार नहीं करता है। जो समाज कालबाह्य बोझ से मुक्ति पाने का सामर्थ्य नहीं रखता है, वो समाज कभी टिक नहीं सकता, जी नहीं सकता, न कभी प्राणवान अवस्था में रह सकता है। एक मुर्दे की तरह वो समय बिताता है।

हमारे समाज में हर कालखंड में, हर भू-भाग में बुराइयों के खिलाफ लड़ने वाले चैतन्य पुरुष मिले हैं हमें। और यही तो हमारी ताकत है। इसी ने तो इस समाज को चैतन्यवत रखा है। और इसलिये गौड़िया संगठन, गौड़िया मिशन को शताब्दी का पर्व एक प्रकार से सामाजिक सुधार के आंदोलन की शताब्दी है। समाज में भक्ति चेतना जगाने के आंदोलन की शताब्दी है। समाज में 'सेवा परमो धर्म' को साकार करने का संस्कार अविरत चलाए रखने का, प्रज्ज्वलित रखने का उस महान कार्य की शताब्दी है। ऐसी महान व्यवस्था को, महान परम्परा को इन सभी संतो, महंतों की जिन्दगी को, जिसके कारण ये सतत् परम्परा चली है, मैं आदर पूर्वक नमन करता हूँ। चैतन्य महाप्रभू का पुण्य स्मरण करता हूँ। इस महान परम्परा के सभी योगी पुरुषों का मैं नमन करता हूँ। आप सब का बहुत-बहुत धन्यवाद।

डॉ. अतुल तिवारी, शाहबाज असीबी, सुरेन्द्र कुमार, शौकत अली, निर्मल शर्मा

**Press Information Bureau
Government of India
Prime Minister's Office**

14-February-2016 20:17 IST

Text of PM's address at Swami Dayanand Saraswati Janmotsav

हिमाचल प्रदेश के राज्यापाल श्रीमान आचार्य देवव्रत जी, D.A.V. कॉलेज management कमेटी के अध्यक्ष डॉ. पूनम सूरी जी और विशाल संख्या में पधारे हुए सभी आर्य पुत्र-पुत्रियां,

मैं आर्य समाज की इस महान परंपरा और उस से संबंधित सभी महानुभाव का हृदय से आभार व्यक्त करता हूं। इस विशाल शक्ति स्रोत का, संस्कार की धारा का, आचमन लेने का मुझे सौभाग्य मिला है। मुझे पूनम जी बता रहे थे कि आर्य समाज में दो मुख्य धाराएं पिछले 130 साल से चल रही थी और 130 साल के बाद आज यह पहला अवसर आया है कि जब दोनों धाराएं मिल करके आगे बढ़ने का संकल्प कर रही है। यह बात मेरे लिए इतनी गौरवपूर्ण है, इतनी आनंददायक है, जिसका मैं शब्दों में बयान नहीं कर सकता। जब यह दोनों शक्तियां, दोनों संस्कार प्रवाह एक बन करके नई दिशा, नया संकल्प ले करके चलेंगे तो राष्ट्र का कितना कल्याण होगा, इसका मैं भलिभांति अनुमान लगा सकता हूं। और इसके लिए मैं इस निर्णय प्रक्रिया से जुड़े हुए सभी महानुभावों का अंतःकरण पूर्वक हृदय से धन्यवाद करता हूं, साधुवाद करता हूं।

पूनम जी बता रहे थे कि गुजरात की धरती ने स्वामी दयानंद जी दिए, लेकिन इस बात में आज चलते-चलते वो मेरे तक पहुंच गए। उस महापुरुषों के नामों की श्रृंखला में मुझ जैसे सामान्य व्यक्ति का नाम जुड़े, ऐसा कोई हक मेरा बनता नहीं है। वो महापुरुष इतने बड़े थे उनके चरण ले करके हम कुछ अच्छा पा सके, उनका आशीर्वाद मिले और हम सबको जिस समय जो दायित्व मिलता है, उस दायित्व को पूर्ण समर्पण के भाव से हम निभाएं, यही शक्ति हमें मिलती रहे, ताकि हम देश का अच्छा कल्याण कर पाएं।

1857 इस देश ने स्वतंत्रता संग्राम के द्वारा अपनी आत्मिक शक्ति का दर्शन कराया था। शताब्दियों की गुलामी के बाद एक चेतना प्रकट हुई थी और वह भी छुटपुट नहीं, दो-पांच-पचास आजादी के दिवानों के पराक्रम तक सीमित नहीं। एक प्रकार से पूरा देश उठ खड़ा हुआ था, लेकिन इच्छित परिणाम प्राप्त नहीं हुए। विदेशी ताकतों ने देश को फिर से एक बार दबोच दिया। उस पार्श्व भूमि को हम देखें, 1857 के स्वातंत्र संग्राम के बाद के उन दिनों को याद करें, इतिहास के पन्नों को देखें। तब ध्यान आता है कि 1875 में आर्य समाज की स्थापना क्यों हुई होगी। उसकी पार्श्व भूमि वो 1857 का स्वातंत्र संग्राम है।

स्वामी दयानंद जी ज्ञान मार्ग के प्रणेता थे। वेद के प्रकाश में सत्य को पा करके, सत्य के प्रकाश को आने वाली पीढ़ियों को परिचित कराने का स्वामी दयानंद जी ने प्रयास किया था। वे स्वभाव से क्रांतिकारी थे और क्रांतिकारी होने के नाते वे अंधविश्वास के खिलाफ लड़ना, परंपराओं को चुनौती देना और वो भी परिस्थितियों से भाग करके नहीं, अपने आप को महान हिन्दू संस्कृति आर्य परंपरा का सिपाही मानते हुए, उसके भीतर रहते हुए, उन्हीं गेरूए वस्त्रों को धारण करते हुए, उसी समाज की बुराइयों के खिलाफ लड़ाई लड़ना यह बहुत बड़ी ताकत लगती है। व्यवस्था से बाहर जा करके आलोचना करना, अपने आप को बड़ा बताना अलग बात है। व्यवस्था के भीतर रह करके उसी परंपराओं का गौरव करते हुए जो काल बाह्य चीजें हैं उसको चुनौती देने के लिए एक अनन्य प्रकार की शक्ति लगती है और उस शक्ति के स्रोत पूज्य स्वामी दयानंद जी थे।

और उस महा पारस के विचार प्रक्रिया, चिंतन के प्रति समर्पण, ज्ञान के अधिष्ठान पर विचार, मनन, चिंतन उसके आधार पर निरंतर प्रजा जीवन में purification होता रहे इस बात को उन्होंने ने बल दिया और उसी का परिणाम है कि महर्षि जी के जाने के बाद भी उतनी ही तीव्रता से, उतने ही समर्पण भाव से यह आंदोलन आज भी चल रहा है। और इसलिए उस विचार बीज की वो ताकत है। उस विचार बीज का वो सामर्थ्य है कि उसके कारण आर्य समाज रूपी एक विशाल वट वृक्ष आज पूरे देश को छाया दे रहा है। हमारे सपनों को पनपने का अवसर दे रहा है। चुनौतियों से जुझने का सामर्थ्य दे रहा है। और इसलिए मैं आज इस महान परंपरा, महान संगठन, इस महान आंदोलन को नमन करता हूं और पूज्य महर्षि स्वामी दयानंद जी के चरणों में भी वंदन करता हूं।

इतना बड़ा विशाल परिवार, 20 लाख छात्र हो, 60 हजार से ज्यादा आचार्य-प्राचार्य हो। और जैसे परम जी बता रहे थे कि करीब दो करोड़ परिवारों से तो हमारा रोज का नाता रहता है। और एक शताब्दी से ज्यादा समय से सेवा जिस संस्था ने की हो, तो उसका एल्युमिनाई भी कितना बड़ा होगा। यहां तो आपने 40 लाख लिखा है, लेकिन मैं नहीं मानता हूं कि 40 लाख होगा। वो बहुत बड़ा विशाल परिवार होगा। यह सब मिल करके हर वर्ष एक विषय तय करे और पूरी शक्ति उस विषय पर लगा दे। आप देखिए नतीजे नजर आने लगेंगे। दुनिया को ध्यान आएगा, अगर D.A.V. तय कर ले कि 2020 में जब ओलंपिक होगा तब D.A.V. का छात्र Gold medal ले करके आएगा, मैं कहता हूं कर सकते हैं।

नये संकल्प क्या हो सकते ? नये संकल्प यही हो कि भारत की विश्व में गरिमा कैसे बढ़े। D.A.V. का सिर्फ हिंदुस्तान में डंका क्यों बजे, दुनिया में क्यों न बजे? और इसलिए जब आर्य समाज को 150 वर्ष होंगे, 2025 में। 1875 में प्रारंभ हुआ आर्य समाज, 2025 में एक सौ पचास वर्ष होंगे। क्या, अभी से गुरुकुल परंपरा हो, D.A.V हो, आर्य समाज की और संगठन हो। यह कोई पांच सूत्री, 10 सूत्री कार्यक्रम बना सकते हैं कि आर्य समाज के 150 वर्ष जब मनाएं, तब तक हम 2025 तक यह जो हमारे पास 10-11 साल है, 8-9 साल है उसका उपयोग इन बातों को हम परिणाम तक ला करके रहेंगे। ऐसा संकल्प किया जा सकता है? और तब मैं मानता हूं स्वामी दयानंद सरस्वती जी को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

और इसलिए अभी से एक रोड मैप बने। आर्य समाज को यह कहने की जरूरत नहीं है क्या करो, क्या न करो? उनकी मूल धारा ही राष्ट्र के कल्याण के लिए साथ जुड़ी हुई है। जिसमें भारत का भला हो उसी में आर्य समाज को भलाई दिखती है। और इसलिए भारत का भला और 21वीं सदी का भारत, 18वीं शताब्दी का भारत नहीं, आधुनिक भारत, वैज्ञानिक भारत, विश्व का नेतृत्व करने का सामर्थ्य रखने वाला भारत, उस भारत के सपनों को पूरा करने के लिए हमने अपने आप को तैयार करना होगा। उसी प्रकार से अभी पूनम जी मुझे बता रहे थे कि हमें एक काम दीजिए आप और हम उसको करके दिखाना चाहते हैं। सामान्यतः ऐसे किसी function में जाते हैं तो वो जो बुलाने वाले लोग होते हैं बुलाते समय तो हमें बहुत बताते हैं कि आप बहुत बड़े आदमी हो, आप आइये, हमारी शोभा बढ़ेगी, हमारा यह होगा, हमारा वो होगा। और जब जाते हैं तो memorandum पकड़ा देते हैं कि हमारे लिए यह करो, हमारे लिए वो करो। यह अकसर हमारा अनुभव रहता है और वो गलत है ऐसा मैं नहीं कहता हूं। स्वाभाविक भी है, लेकिन यहां मेरा अनुभव अलग हो रहा है। यहां मुझसे कुछ मांगा नहीं जा रहा है। मुझे कहा जा रहा है कि मोदी जी हमें कोई काम बताओ। मैं इस बात को छोटी नहीं मानता हूं, बहुत बड़ी बात है यह मेरे लिए कि कोई मेहमान के रूप में कहीं जाए और बुलाने वाला हमसे कुछ मांगे नहीं। और ऊपर से यह कहे कि हमारे लिए कोई काम बताइए तो मैंने पूनम जी को कहा, क्या लगता है, क्या कर सकते हैं आप? तो उन्होंने कहा क्या गंगा सफाई का जो आपका सपना है, क्या उसमें हम जुड़ सकते हैं क्या ? हम हमारे D.A.V. के छात्रों को गंगा सफाई के काम से जोड़ेंगे। हमारे शिक्षकों को जोड़ेंगे, हमारे अभिभावकों को जोड़ेंगे। गंगा सफाई का अभियान करते-करते कई सरकारें आई और चली गई, पूरा नहीं हुआ। लेकिन आज मुझे लगता है कि गंगा सफाई होकर रहेगी, अगर मुझे ये साथ मिल जाए।

जब जनता-जनार्दन के आशीर्वाद होते हैं तो कोई समस्या, समस्या नहीं रहती है। वो समस्या अपने आप में अवसर में पलट जाती है और आज मैं देख रहा हूँ कि D.A.V. की यह शक्ति, आर्य समाज की शक्ति, गुरुकुलों की शक्ति, आर्य समाज से जुड़े हुए सभी साधु महात्माओं की शक्ति, यह सब जब गंगा सफाई के आंदोलन का हिस्सा बन जाए तो फिर तो गंगा सफाई, मैं नहीं मानता हूँ वो सपना कभी अधूरा रह सकता है और यही नया संकल्प है। गंगा साफ हो तो सिर्फ वहाँ पर जाने-आने वालों के लिए या नजदीक में रहने वालों के लिए ही नहीं, पूरी दुनिया में हिन्दुस्तान का गौरव बढ़ाने वाली वो घटना होगी।

एक काम हम शुरू करें, हम गंगा को गंदी नहीं होने देंगे। एक बार हम तय कर ले कि हम गंगा को गंदी नहीं होने देंगे तो गंगा में अपने आप ताकत है, सफाई तो वो अपने आप कर लेगी। आज मुसीबत गंगा की वो नहीं है, मुसीबत हम है जो उसे गंदा करते हैं। एक बार गंगा तट पर रहने वाले सभी, एक बार संकल्प कर ले। गंगा के दर्शन के लिए आने वाले लोग संकल्प कर ले कि हम गंगा को गंदी नहीं होने देंगे तो गंगा सफाई सफल होने में कोई कठिनाई नहीं आएगी। यह मेरा विश्वास है और D.A.V. का यह दो करोड़ का परिवार लग जाए तो मैं नहीं मानता हूँ कि हमारी गंगा अशुद्ध रह सकती है। जब हम आर्य समाज के डेढ़ सौ साल मनाएँ, तब हम इस भारत माँ के चरणों में शुद्ध गंगा कैसे दें, साफ-सुथरी गंगा कैसे दें? यह सपने लेकर चले, यह मैं आपसे अनुरोध करता हूँ।

दुनिया कहती है 21वीं सदी एशिया की सदी है। कुछ कहते हैं 21वीं सदी भारत की सदी है। सदियों से यह पाया गया है कि जब-जब मानव जाति ज्ञान युग में प्रवेश किया है, भारत विश्व का नेतृत्व करता रहा है। 21वीं सदी भी ज्ञान की सदी है और जब 21वीं सदी ज्ञान की सदी हो, स्वयं दयानंद जी ज्ञानमार्गी हो और भारत के अंदर 65 प्रतिशत जनसंख्या 35 साल से कम उम्र की हो। हिन्दुस्तान आज दुनिया में सबसे जवान है और जो देश दुनिया में सबसे जवान होता है, उस देश के सपने भी जवान होते हैं, इरादे भी जवान होते हैं, संकल्प भी जवान होते हैं और इसलिए इस देश की युवा शक्ति जो आज मेरे सामने मैं देख रहा हूँ। यह 65 प्रतिशत जनसंख्या, यह भारत का भाग्य ही नहीं, विश्व का भाग्य बदलने के लिए ताकतवर है। इसलिए हमारी कोशिश है कि हमारे देश की अमूल्य विरासत, यह अनमोल संपदा, इसको राष्ट्र के कल्याण के लिए कैसे लाया जाए? राष्ट्र को आगे बढ़ाने के लिए युवा शक्ति पर ध्यान केन्द्रित कैसे किया जाए? और इसलिए सरकार ने कई महत्वपूर्ण निर्णय उठाए हैं।

Skill development, हम जानते हैं हम graduate हो जाएँ, अच्छे से अच्छे marks ले आएँ, बढ़िया से बढ़िया इंस्टीट्यूट का सर्टिफिकेट हो, लेकिन जब समाज के अंदर पढ़ाई पूरी कर करके जीवनचर्या करने का प्रारंभ करते हैं। कहीं पर जाते हैं नौकरी पाने के लिए, नौकरी देने वाला पूछता है – कोई experience है क्या? सबसे पहला सवाल पूछता है, आपका कोई experience है क्या? और उसका जवाब हम नहीं दे पाते हैं। हमें यह पूछते हैं कि आपके पास सर्टिफिकेट तो है लेकिन कुछ और आता है क्या? तब भी हम मुंडी नीचे कर लेते हैं। हम नहीं चाहते कि हमारे देश का नौजवान इस प्रकार से अपने आप को अनुपयोगी समझने लग जाए। तो उसके हाथ में सर्टिफिकेट होना काफी नहीं है, उसके हाथ में हुनर होना आवश्यक है। और इसलिए हमने Skill development का अभियान चलाया है। देश के नौजवानों के पास कोई न कोई हुनर होना चाहिए और अपने पैरों पर खड़े रहने की उसमें ताकत होनी चाहिए और मुझे विश्वास है कि हमारे देश के नौजवानों को अगर सही अवसर मिल जाए तो वो परिणाम प्राप्त कर करके ले सकते हैं, दे सकते हैं।

पूरे देश में Skill development का अभियान चलाया है। हमारी सरकार बनने के बाद Skill development अलग ministry बना दी गई, अलग बजट निकाला गया, अलग अफसरों की फौज लगा दी गई, ताकि हिन्दुस्तान के कोटि-कोटि नौजवानों को Skill development का लाभ मिले। आने वाले दिनों में, 2030 में, दुनिया का हाल यह होने वाला है कि कई देश ऐसे होंगे कि जहाँ पर नौजवान ही नहीं होंगे। सारे बूढ़े-बूढ़े परिवार ही रहते होंगे, ऐसी स्थिति आने वाली है। सारी दुनिया को एक work

force की जरूरत होगी और दुनिया को जो work force की जरूरत है वो work force supply करने की ताकत अगर किसी में होगी, तो हिन्दुस्तान में होगी। हमारे हिन्दुस्तान का नौजवान अपने बलबूते पर दुनिया का भाग्य बदल दे, ऐसे दिन आने वाले हैं।

हमने एक योजना शुरू की - मुद्रा योजना। हमारे देश के आर्थिक विकास में हमेशा दो विषयों की चर्चा चली है, या तो प्राइवेट सेक्टर या पब्लिक सेक्टर। आर्थिक कारोबार चलाने के दो ही तरीके सामने आए हैं - प्राइवेट सेक्टर, पब्लिक सेक्टर। हमने नया विचार किया है। यहां जो बात आई है, नई दिशा। हमने कहा, प्राइवेट सेक्टर अपना काम करे, पब्लिक सेक्टर अपना काम करे। फले-फूले बहुत आगे बढ़े, लेकिन देश को आगे बढ़ाने के लिए एक तीसरे सेक्टर की जरूरत है, और उसको हमने कहा है - पर्सनल सेक्टर। हर व्यक्ति में वो सामर्थ्य हो, अपने बलबूते पर खड़ा रहे और वो job-seeker न बने, job-creator बने। दो को, पांच को, सात को, रोजगार देने वाला बने और इसलिए हम वो ताकत खड़ी करना चाहते हैं।

समाज के छोटे-छोटे लोग, जिनको कभी बैंक के अंदर प्रवेश तक नहीं मिलता था। हमने मुद्रा योजना के तहत कहा है कि जो सामान्य लोग हैं, बाल काटने वाला नाई होगा, धोबी होगा, अखबार बेचने वाला होगा, दूध बेचने वाला होगा, चाय बेचने वाला होगा, सामान्य लोग समाज के, मुद्रा योजना से उनको पैसे दिए जाएंगे और किसी भी प्रकार की गारंटी के बिना पैसे दिए जाएंगे, ताकि वो साहूकारों के ब्याज के चक्कर से मुक्त हो जाए और उसको 50 हजार, लाख, दो लाख, पांच लाख रुपया चाहिए तो वो अपना कारोबार बढ़ा सकता है। आज अगर वो दो लोगों को रोजगार देता था तो पांच को दे सकता है। कोई और काम नहीं कर सकता है तो नई शुरूआत कर सकता है। कोई ऑटो रिक्शा लाकर के अपनी गाड़ी चला सकता है। परिवार को अपने पैरों पर खड़ा कर सकता है और इसलिए मुद्रा योजना शुरू की है।

मुझे खुशी है कि हमने कोई ढोल नहीं पीटे, बड़े-बड़े मेले नहीं लगाए, राजनीतिकरण नहीं करने दिया। दो करोड़ से ज्यादा लोगों को अब तक मुद्रा योजना का पैसा दिया जा चुका है और करीब-करीब एक लाख करोड़ रुपया कोई भी गारंटी के बिना इस देश के लोगों पर भरोसा करके देने का हमने निर्णय किया, कर दिया काम। वो देश की आर्थिक स्थिति को चलाएंगे। हमारी सरकार की नई दिशा यही है कि हम सामान्या मानविकी पर भरोसा करते हैं। हिन्दुस्तान की सरकार, हिन्दुस्तान के नागरिकों पर आशंका करे, ये दूरियां मिटनी चाहिए और हमने तय किया कि हम नागरिकों के प्रति विश्वास करेंगे, भरोसा करेंगे।

आपको पता होगा, यहां जो टीचर बैठें होंगे उनको तो बराबर याद होगा। पढ़ाई आप करे, मेहनत आप करे, रात-रात जागकर के पढ़ाई आप करे, परीक्षा आप दे, marks आप लाए, position आपको प्राप्त हो। लेकिन जब कहीं नौकरी चाहिए, सरकार में अर्जी करनी है तो आपका सर्टिफिकेट तब तक नहीं माना जाता है जब तक उस नगर का कोई राजनेता उस पर ठप्पा नहीं मारता, सर्टिफाई नहीं करता, तब तक आपका वो सर्टिफिकेट, सर्टिफिकेट नहीं माना जाता। नागरिकों के प्रति इससे बड़ा अविश्वास क्या हो सकता है? हमने आकर के निर्णय कर दिया कि सर्टिफाई करने के लिए किसी के पास जाने की जरूरत नहीं है। आप अपना सर्टिफिकेट Xerox करके भेज दीजिए। जब final निर्णय करना होगा तब original लेकर के आना, देख लेंगे बात चल जाएगी। नागरिकों पर भरोसा करना चाहिए। वैसा ही भरोसा हमने मुद्रा योजना में किया। कोई गारंटी नहीं, ले जाओ भाई। और मेरा मत है, सामान्य मानविकी, गरीब आदमी ब्याज समेत पाई-पाई चुकता कर देता है और समय से पहले चुकता कर देता है, वो कभी पैसे डुबोता नहीं है। मैंने गरीबों की अमीरी को देखा है। अमीरों की गरीबी भी देखा है, लेकिन मैंने गरीबों की अमीरी को देखा है।

जब हमने 'प्रधानमंत्री जन-धन योजना' की और लोगों को कहा था, zero balance से account खुलेगा। एक पैसा नहीं दोगे तो

भी बैंक account खुलेगा क्यों कि मेरी इच्छा थी कि हिन्दुस्तान के गरीब से गरीब व्यक्ति का भी बैंक के ऊपर हक होना चाहिए। 60 प्रतिशत लोग उसके बाहर थे, उनको लाना था। Zero balance से बैंक account खुलने वाला था, लेकिन आज मैं गर्व से कह सकता हूँ कि सरकार ने तो मुफ्त में खाता खोलना तय कर दिया था, लेकिन हमारे गरीबों की अमीरी देखिए। उन्होंने कहा, नहीं-नहीं हम मुफ्त में नहीं करेंगे, पांच रुपया-दस रुपया भी रखेंगे और 30 हजार करोड़ रुपया रखा लागों ने, 30 हजार करोड़ रुपया। अगर एक बार सामान्य मानविकी पर भरोसा करे तो वो कितनी ताकत का दर्शन करा देता है, उसका यह नमूना है।

हमने नौजवानों के लिए 'स्टार्ट-अप इंडिया, स्टैंड-अप इंडिया' अभियान चलाया है। Skill development हो, मुद्रा योजना से पैसा मिले, 'स्टार्ट-अप इंडिया, स्टैंड-अप इंडिया' innovative चीजें करें। खासकर के हमारे दलित भाई-बहन, हमारे schedule tribe के भाई-बहन, आदिवासी भाई-बहन, वो भी अपने बलबूते पर, अपनी ताकत पर आगे आए, उसके लिए सरकार को मदद करनी चाहिए। मैंने कहा सवा लाख branches को, क्याप आप मुद्रा योजना से हर बैंक एक दलित को, एक आदिवासी को बैंक loan दे। हिन्दुस्तान में सवा लाख branches है, ढाई लाख नए उद्योगकार यहीं हमारे समाज में से आ सकते हैं। गरीब, दलित, पीड़ित, शोषित समाज में से आ सकते हैं और काम तेज गति से चल रहा है।

हमने 'स्टार्ट-अप इंडिया, स्टैंड-अप इंडिया' के द्वारा देश के नौजवानों को आह्वान किया है कि नए तरीके से कुछ करने का माद्दा रखिए। आइए, सरकार आपके साथ खड़ी रहेगी और हम दुनिया के अंदर एक Start-up Capital के बलबूते पर आगे बढ़े, ताकि हमारे नौजवानों को अवसर मिले। एक के बाद एक इस प्रकार के कार्यक्रम जिसके कारण समाज सशक्त हो, परिवार अपने पैरों पर चल सके इतने ताकतवर हो। परिवार के सपने पूरे हो, उन बातों को लेकर के आगे बढ़ रहे हैं। आज सारी दुनिया ने माना है चाहे World Bank हो, IMF हो और भी कोई संगठन हो, हर किसी का कहना है कि दुनिया पूरी आर्थिक संकट से गुजर रही है। एक अकेला हिन्दुस्तान आज पूरे विश्व में आर्थिक रूप से तेज गति से आगे बढ़ रहा है। असामान्य स्थिति है। सारी दुनिया डूब रही है, उस समय हिन्दुस्तान चमक रहा है। यह बात दुनिया के लोग कह रहे हैं। पिछले डेढ़ साल में एक के बाद एक जो कदम उठाए, आज उसका नतीजा है कि आज हिन्दुस्तान जो larger economies है, बड़ी economies है, उसमें सबसे ज्यादा तेज गति से आगे बढ़ने वाला देश बन गया है।

हमारी सभी समस्याओं का समाधान एक ही बात में है। हमें मुसीबतों से मुक्ति एक ही बात से मिल सकती है। हमें गरीबी से मुक्ति एक ही बात से मिल सकती है। हमें अशिक्षा से मुक्ति एक ही बात से मिल सकती है। हमें बीमारी में दवाई एक ही बात से मिल सकती है। और वो एक बात है – विकास। विकास, यही एक मार्ग है जो भारत के गरीब मानविकी को संकटों से बाहर ला सकता है। मुसीबतों से बाहर ला सकता है और इसलिए हमारी सरकार ने ध्यान केन्द्रित किया है विकास के कामों पर। देश तेज गति से आगे बढ़ना चाहिए। कृषि में विकास हो, गांवों का विकास हो, शहरों का विकास हो, गरीब को रोजगार हो, इन बातों पर हम बल दे रहे हैं और आज उसके अच्छे नतीजे दिखाई देने लगे हैं।

आज जब मैं आपके बीच आया हूँ और आप वो लोग हैं जो समाज के लिए कुछ न कुछ करने के संस्कार से जुड़े हुए हैं। जो भी सात्विक शक्तियां हैं उन्हें आज प्रखरता से काम करने की आवश्यकता है। जितनी सात्विक शक्तियां एक बनकर के, प्रखर होकर के आगे आएंगी, इस देश को रोकने के सपने देखने वालों के सपने चूर-चूर हो जाएंगे। इसी संकल्प को लेकर के आगे बढ़ें। मैं फिर एक बार आचार्य जी का, पूनम जी का, आप सब का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ कि मुझे आज आप सब के बीच आने का अवसर मिला और पूज्य स्वामी दयानंद जी को स्मरण करने का अवसर मिला। बहुत-बहुत धन्यवाद।

हिमांशु सिंह/ तारा/ मनीषा

**Press Information Bureau
Government of India
Prime Minister's Office**

13-February-2016 13:08 IST

Text of PM's address at the Bombay Art Society, Mumbai

कला प्रेमी भाईयो और बहनों, कुछ समय पहले वासुदेव जी मेरे निवास स्थान पर आए थे और बड़े हक से मुझे हुकुम करके गए थे। आपको आना पड़ेगा और उसी का परिणाम है कि मैं आज आपके बीच में हूँ।

बहुत कम ऐसी व्यवस्थाएं होती हैं कि जो तीन शताब्दियों को प्रभावित करती हैं, आपकी बाम्बे आर्ट सोसाइटी ने तीन शताब्दियों को प्रभावित किया है। 19वीं सदी में आरंभ हुआ और 21वीं सदी तक और उसका मूल कारण है कला की अपनी एक ताकत होती है, कला का अपना एक संदेश होता है, कला के भीतर इतिहास यात्रा करता है, कला संवेदनाओं की अभिव्यक्ति होती है और तब जा करके तीन शताब्दियों तक ये अपनी जगह बनाती है।

शायद हिन्दुस्तान में और खास करके महाराष्ट्र और मुंबई में कोई रईस घराना ऐसा नहीं होगा जिसकी दिवारों पर कला लटकती न हो। कोई रईस घराना नहीं होगा लेकिन ये द्रुदेव देखिए कि जहां कला का गर्भास्थान होता है, उसे जगह पाने में सवा सौ साल बीत गए।

और इसलिए समाज के नाते ये सोचने की आवश्यकता है कि कलाकृति, ये हमारे दिवारों की शोभा है कि हमारे समाज की शक्ति है। अगर हम कलाकृति को हमारी दिवारों को सुशोभित करने का एक माध्यम ही सिर्फ मानते हैं तो शायद हम कला से सदियों दूर हैं, मीलों दूर हैं और ये स्थिति बदलने के लिए एक अविरत शिक्षा, अविरत संस्कार आवश्यक होता है।

यही देश ऐसा है जिसके टेम्पल आर्किटेक्चर इसकी विशेषता बारीकी से देखें कि जहां ईश्वर का जहां स्थान है अनिवार्य रूप से वहां कला का स्थान है। हर मंदिर में आपको नृत्य मंडप दिखाई देगा, हर मंदिर में आपको कलाकृतियों के द्वारा इतिहास और परंपराओं को जीवित करता हुआ दिखाई देगा। ये इनबिल्ट व्यवस्था इस बात का द्योतक है कि हमारी सांस्कृतिक यात्रा में कला यात्रा की कितनी अहमियत है। अन्यथा, ईश्वर के साथ-साथ कला की यात्रा न होती। चाहे दुनिया में कोई एक ऐसा चेहरा नहीं होगा कि जिसके इतने रूपों में कलाकारों ने उसकी साधना की हो। शायद, गणेश जी एक ऐसे हैं कि जिसको हर कलाकार ने हाथ लगाया होगा, अपने तरीके से लगाया होगा और शायद गणेश ही हैं कि जो अरबों-अरबों रुपयों में हमारे सामने प्रस्तुत हैं, अरबों-अरबों रुपयों में हैं।

यानी किस प्रकार से कलाकार उप चीजों को पाता है, पनपाता है और उस पौधे को वटवृक्ष की तरह विकसित करता है और उस अर्थ में, यहां वासुदेव जी ने एक बात कही लेकिन मैं उनसे थोड़ा अलग मत रखता हूँ। उन्होंने कहा कला राज्यास्तरित हो, जी नहीं कला कभी राज्यास्तरित नहीं होनी चाहिए। कला राज्य पुस्कृत होनी चाहिए।

कला को न कोई दायरा होना चाहिए, कला को न कोई बंधन होने चाहिए और राज्य की जिम्मेवारी है की कला को पुरस्कृत करें और मैं शरद जी को अभिनंदन करता हूँ कि जमीन देने का फैसला किया उन्होंने, जब वो मुख्यमंत्री थे। कला राज्य

पुरस्कृत होनी चाहिए और कला समाज की शक्ति का हिस्सा होनी चाहिए। तभी जा करके कला परिणामकारी होती है।

आध्यात्मिक यात्रा से जो लोग जुड़े होंगे, वे इस बात को शायद सरल भाषा में समझते होंगे कि शरीर की गतिविधि से पूर्व अध्यात्म मन और दिल में जगह प्राप्त करता है और उसके बाद उस शरीर के अभिव्यक्ति के रूप में, शरीर को एक साधन के रूप में उपयोग करता है। शरीर अध्यात्म के अनुभूति का माध्यम हो सकता है। वैसे कला उस पत्थर में नहीं होती है, उस मिट्टी में नहीं होती है, उस कलम में नहीं होती है, उस कैनवास में नहीं होती है। कला उस कलाकार के दिल और दिमाग में पहले अध्यात्म की तरह जन्म लेती है।

जब एक कलाकार पत्थर तराशता है हमें लगता है वो पत्थर तराशता है, हम पूछते हैं कि तुम पत्थर तराशते हो कि नहीं, कहता है मैं तो मूर्ति तराश रहा हूँ। देखने में इतना बड़ा फर्क होता है। हमारे लिए वो पत्थर होता है, कलाकार कहता है मैं मूर्ति तराशता हूँ, हम कहते हैं तुम पत्थर तराशते हो क्या?

ये हमारी सामाजिक जो सोच है उसको हमें बदलाव लाना पड़ेगा और तब जा करके, तब जा करके कला जीवन का महात्म्य बढ़ेगा। हमारे यहां बच्चों को रटे-रटाये कविताएं 'ट्विकल-ट्विकल लिटिल स्टार' आप किसी भी घर में जाओ तो छोटा बच्चा वो ले आएंगी मम्मी अच्छा बेटे गीत गाओ और वो 'ट्विकल-ट्विकल लिटिल स्टार' करता रहेगा।

बहुत कम घर है जहां मां कहेंगी बेटे तुमने कल पेंटिंग बताया था देखो अंकल आए हैं दिखाओ जरा ये बहुत कम है ये बदलाव जरूरी है। उस बालक के अंतर मन की विकास यात्रा का आधार रटे-रटाये शब्दों में नहीं है, उसके भीतर से निकली हुई चीजों से, उसने जो ऊपर-नीचे कागज पर जो पेंटिंग किया है उसमें है। और उसने व्यक्ति विकास के अधिष्ठान के रूप में कला एक बहुत बड़ा अहम यानी एस संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास करने में कला बहुत अनिवार्य होती है।

आज टेक्नॉलॉजी का युग है। सारी शिक्षा इंजीनियरिंग और टेक्नॉलॉजी पर प्रभावित हो रही है। जीवन भी अधिकतम टेक्नॉलॉजी से जुड़ा हुआ है। लेकिन हमें ये सजग रूप से प्रयास करना चाहिए कि हम आने वाली पीढ़ियों को इंसान कैसे बनाए रखें। डर लगता है कभी रोबोट तो नहीं हो जाएगा। इस स्विच को दबाएं तो ये काम होगा। इस स्विच को दबाएगा तो ये काम हो जाएगा। और इसलिये उसके भीतर के इंसान को जीवित रखना है, तो कला ही एक माध्यम है। जो उसके जीवन को जीवित रख सकता है। उसके भीतर के इंसान को जीवित रख सकती है। और उस अर्थ में और जब हम Art कहते हैं न A R T 'A' means है Ageless 'R' है Race region Religion less 'T' है Timeless. ये आर्ट अनंत की अभिव्यक्ति होती है। और उस अर्थ में हम इसकी जितनी इसके महत्व को स्वीकारें उसको सजाएं। मैं स्कूलों से आग्रह करूंगा कि वो अपने टूर प्रोग्राम बनाते हैं। तो उस टूर प्रोग्राम में साल में एक कार्यक्रम तो कम से कम Art Gallery देखने के लिए बनाएं। बाकी सब देखने जाएंगे, बीच देखने जाएंगे आर्ट गैलरी देखने नहीं जाएंगे। उसी प्रकार से मैंने रेलवे डिपार्टमेंट को कहा है कि बिजी रेलवे प्लेटफॉर्म है और दो तरफ ट्रेन आती है बीच में उसके खम्भे होते हैं। मैंने कहा एक डिवाइडर के रूप में एक बढ़िया एक बढ़िया आर्ट गैलरी रेलवे प्लेटफॉर्म पर क्यों न हो। उस नगर के कलाकारों को उभरते हुए कलाकारों को वहां जगह मिले। ऐसे कैसे हो सकता है। ताकि वहां आने वाला व्यक्ति उसको देखेगा। उस शहर का कलाकार होगा तो उसको अनुभव करेगा। और उसको अवसर मिलेगा कि चलो भई 15 दिन के बाद मेरी एक नई वहां लगने का अवसर मिलने वाला है। तो मैं और अच्छा काम करूं। अगले महीने मुझे मौका मिल सकता है। मैं और अच्छा काम करूं। हम अपनी व्यवस्थाओं को सहज कैसे बनाएं। अभी मैंने पिछली बार मन की बात में कहा था कि हमारे देश के रेलवे स्टेशनों पर कलाकार खुद समय देकर के आज रेलवे स्टेशनों का रंगरूप बदल रहे हैं। ये सरकारी योजना नहीं थी। न ही सरकार का कोई बजट है। ये अपनी मनमरजी से कर रहे हैं। और इसका इतना प्रभाव पैदा हो रहा है। एक प्रकार से वो संस्कार कर रहे हैं। स्वच्छता पर एक भाषण देने से ज्यादा। एक

कलाकार का पेंटिंग उसको स्वच्छ रखने के लिए प्रेरित कर रहा है।

एक मेरे मन में मैं नहीं जानता हूँ मेरे कलाकार मित्र यहां कहीं बैठे होंगे। किस प्रकार इसको लेंगे। आने वाले युग को ध्यान में रखते हुए। हम हमारी जो कलाकृति है। उसको डीजिटल दुनिया का एक हाईब्रिड डेवलपमेंट कर सकते हैं क्या? जैसे कलाकार ने कृति तैयार की उसको पहले विचार कैसे आया। वो कैसे कागज पर पनपता गया। तीन महीने, छह महीने उसमें डूब गया। उस प्रोसेस का एक तीन या चार मिनट का डीजिटल वर्जन। कोई भी व्यक्ति जब उसकी कलाकृति देखता है तो साथ साथ इस प्रोसेस का डीजिटल वर्जन देखे। और विद म्यूजिकल इफैक्ट देखे। आज मुश्किल क्या है कि बहुत कम लोग होते या तो कोई कला का ज्ञानी साथ चाहिए। वो उसको समझाएगा कि देखो भई इसका मतलब यह होता है। लाल इसलिए लगाया है, पीला इस लिये लगाया है, तो उसको लगता है कि यार इतना बर्दन क्या करूं चलो अच्छा लगा चलो भई।

ये बदलाव के लिए डीजिटल वर्ल्ड को इसके कॉम्बिनेशन के रूप में कैसे लाया जाए। मैं चाहूंगा कि जो सॉफ्टवेयर आईटी की दुनिया से जुड़े हुए लोग हैं उसमें रुचि लें। और कलाकारों को एक नई ताकत युग के अनुरूप नई ताकत कैसे दें उस दिशा में प्रयास हो फिर एक बार में महाराष्ट्र सरकार को, श्रीमान शरद राव जी को हृदय से बहुत-बहुत अभिनन्दन करता हूँ। वासुदेव और उनकी पूरी टीम को भी बधाई देता हूँ। और ये अब कलाकृतियों को तो जगह बहुत मिली। कला का जहां गर्भास्थान होता है उसको जगह मिल गई है। और नई चेतना जगेगी। बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

अतुल कुमार तिवारी, शाहबाज़ हसीबी, शौकत अली, लक्ष्मी, तारा

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

05-फरवरी-2016 18:09 IST

सिबसागर, असम में श्रीमंत शंकरदेव संघ के 50वें वार्षिक सम्मेलन में प्रधानमंत्री के संबोधन का मूलपाठ

मंच पर विराजमान मंत्री परिषद के मेरे साथी, सभी वरिष्ठ महानुभाव और विशाल संख्या में आए हुए सभी महानुभाव,

मैं सबसे पहले तो आप सब को प्रणाम करता हूँ। इनके सब योजकों को प्रणाम करता हूँ कि ऐसे पवित्र अवसर पर मुझे आपके बीच आने का सौभाग्य दिया। कोई कल्पना कर सकता है कि पांच शताब्दी से भी पहले किसी व्यक्ति को, जबकि उन दिनों में न कैमरा थे, न अखबार थे, न टीवी था, न टेलीफोन था, उसके बावजूद भी पांच शताब्दियाँ बीतने के बाद भी हम सब उस महापुरुष को याद करते हैं। उनके बताए हुए रास्ते पर चलने का प्रयास करते हैं। वो कैसी विलक्षण प्रतिभा होगी जिन्होंने सदियों तक समाज पर ऐसा गहरा प्रभाव छोड़ा है। ऐसे श्रीमंत शंकरदेव गुरुजन के चरणों में मैं प्रणाम करता हूँ। उनकी विशेषता देखिए। यहां तो सब लोग बैठे हैं, वे उनकी हर बात को जानते हैं, उनकी हर बात को जीने का प्रयास करते हैं। सदियों पुरानी उनकी बातों को आज भी जीवन में उतारने का प्रयास करते हैं। और इसीलिए मैं उनके लिए कुछ कहूँ, उससे ज्यादा आप सब उनको भली-भाँति जानते हैं।

जब हिन्दुस्तान के अन्य भागों में जब उनके विषय में लोगों को जानकारी मिलती है तो बड़ा ताज्जुब होता है। उन्होंने आध्यात्म को जीवन के रंग से रंग दिया था। सामान्यतः हमारी आध्यात्म की सोच ऐसी रही जो कभी-कभी सहज जीवन को नकारती रही। लेकिन श्रीमंत शंकरदेव जीवन के रंगों में ही आध्यात्मिकता भरने में एक नए मार्गदर्शक बने। कोई सोच सकता है आध्यात्म और नाटक का संबंध। कोई सोच सकता है आध्यात्म और कला का संबंध। कोई सोच सकता है आध्यात्म और नृत्य का संबंध, कोई सोच सकता है आध्यात्म और गीत का संबंध। उन्होंने कला को, नृत्य को, नाट्य को, संगीत को, जो समाज जीवन की सहज वृत्ति-प्रवृत्ति थी, उसको ही आध्यात्म के रंग में रंग दिया और उसके कारण श्रीमंत शंकरदेव आज भी हमारे लिए उतने ही relevant हैं जितने कि उनके अपने जीवन काल में थे।

दूर-सुदूर असम में रहने वाला यह संत, यह आध्यात्मिक महामानव पांच शताब्दी पहले यह कहे कि हम ऐसे आसामी बने, ऐसे आसामिया बने कि हम उत्तम भारतीय बने रहे। राष्ट्रवाद का संदेश उसने दूर उतनी शताब्दियों पहले कोई महापुरुष देता है। वे यह भी कहते हैं कि हमें राष्ट्र निर्माण करना है, लेकिन राष्ट्र निर्माण करने के लिए भी व्यक्ति निर्माण, यही हमारा मार्ग होगा और इसलिए जन-जन को जोड़ना, समाज के ताने-बाने को ऐसे जोड़ना कि समाज एक ऐसी शक्ति के रूप में उभरे जो अपने बलबूते पर विकास भी करे, आध्यात्मिक चेतना भी जगाए और संकटों को भी पार कर ले। यह ऐसे आध्यात्मिक महापुरुष थे जो शास्त्र में भी समर्पित थे, शस्त्र में भी समर्पित थे। उन्होंने अपने ही भक्तों को आताताइयों के खिलाफ लड़ने के लिए तैयार किया, बलिदान देने के लिए तैयार किया। क्यों? मातृभूमि की रक्षा करनी है, आध्यात्मिकता की रक्षा करनी है, महान उज्ज्वल परंपराओं की रक्षा करनी है।

आज भी हमारे समाज में जो बुराइयाँ हैं, भले कम हुई हो, लेकिन कहीं-कहीं जब वो बुराइयाँ नज़र आती हैं तब कितनी पीड़ा होती है। हिन्दू समाज की एक विशेषता रही है। हजारों साल पुराना यह समाज है। समय-समय पर उसमें कुछ विकृतियाँ भी आई, बुराइयाँ भी आई, लेकिन इस समाज की विशेषता थी कि अपने में से ही ऐसे महापुरुषों को उसने पैदा किया कि जो खुद ही समाज की बुराइयों के खिलाफ लड़ाई लड़ने के लिए मैदान में आए। यह छोटी बात नहीं है। आज भी कहीं पर अस्पृश्यता के खिलाफ बोलना हो, छुआछूत के खिलाफ बोलना हो तो कभी-कभी लोगों को लगता है कि अब जरूरत क्या है। श्रीमंत शंकरदेव ने पांच शताब्दी पहले अस्पृश्यता के खिलाफ, ऊँच-नीच के भेद के खिलाफ, सामाजिक एकता के लिए जहां गए वहां, उन्होंने पूरे भारत का भ्रमण किया था, उस जमाने में; कितने कष्ट झेले होंगे और यह संदेश पहुंचाया कि समाज में ये जो विकृतियाँ हैं वो विकृतियाँ खत्म होनी चाहिए। समाज में जो बुराइयाँ हैं वो बुराइयाँ खत्म होनी चाहिए। युगों के अनुसार कभी-कभी बुराइयाँ बदल जाती हैं।

आज के समय में श्रीमंत शंकरदेव के रास्ते पर और इतने समर्पित सेवकों की आप लोगों की टीम हैं। सरकार को इतना बड़ा कार्यक्रम हो तो 50 बार सोचना पड़ता है और मैं देख रहा हूँ, मैं हेलीकॉप्टर से देख रहा हूँ। जहां देख रहा था, लोग ही लोग नज़र आ रहे थे लाखों की तादाद में। यह कैसी आध्यात्मिक ताकत है, यह कैसी सात्विक ताकत है? हमारे राष्ट्र को आगे ले जाने के लिए हमारा 'सबका साथ, सबका विकास' का जो मंत्र है, उसमें यह आध्यात्मिक चेतना, आध्यात्मिक

शक्ति, सात्विक शक्ति, इसका बहुमूल्य है और उसकी शक्ति को जोड़ने से राष्ट्र तेज गति से आगे बढ़ता है। आज भी रिसर्च के काम, साहित्य के काम, शिक्षा के काम, लोक-संस्कार के काम, समाज का कल्याण करने वाले काम, आज श्रीमंत शंकरदेव संस्थान के द्वारा चल रहे हैं।

यह बात सही है इतने साल हो गए। तो कभी छोटा-मोटा खट्ठा मीठा आ जाता है। लेकिन अच्छा यही है कि सब मिल करके काम करें। कंधे से कंधा मिला करके काम करें तो ये ताकत और उभर के आएगी और समाज की एक नई शक्ति बन करके रहेगी। ऐसा मेरा विश्वास है। एक सात्विक प्रवृत्ति चल रही है, शिक्षा की प्रवृत्ति चल रही है और बहुत सी बातें संस्था के प्रमुख लोगों ने मेरे सामने रखी हैं। मैं उन सारी बातों का गहराई से अध्ययन करूंगा और उसमें से जो भी हो सकता है उसे करने में हम पीछे नहीं रहेंगे, क्योंकि ये काम आप कर रहे हैं। अब मान लीजिए मुझे असम में ही स्वच्छ भारत अभियान चलाना हो। अगर आप लोग मन में ठान लें। तो सरकार की जरूरत पड़ेगी क्या? असम कभी गंदा होगा क्या? अगर आप लोग तय कर लें श्रीमंत शंकर देव के नाम से जय गुरु शंकर बोल के निकल दें, मैं नहीं मानता कि असम में कोई गंदगी रह सकती है। स्वच्छ भारत का अभियान असम में सिरमौर बन सकता है। हमारे यहां बालकों के लिए पोलियो की खुराक, बालकों के लिए वैक्सीन, ये सरकार का बहुत बड़ा अभियान होता है। एक भी बालक वैक्सीन के बिना रह न जाए। एक भी बालक पोलियो की खुराक के बिना रह न जाए। ये ऐसा बड़ा काम है अगर हम हमारे इस संस्थान के लोग उसके साथ लग जाएं। तो मैं नहीं मानता कि सरकार अगर कम पड़ जाए लेकिन आप नहीं कम पड़ेंगे और समाज की ताकत बनेंगे ये मेरा विश्वास है।

सरकार और समाज की शक्ति जुड़नी चाहिए। सरकार और समाज की शक्ति मिल करके निर्धारित लक्ष्य की ओर आगे बढ़नी चाहिए। तब जा करके हम श्रीमंत शंकर देव जी जैसा भारत चाहते थे वो भारत हम बना सकते हैं। शंकर देव के सपनों को हम पूरा कर सकते हैं। और इस आध्यात्मिक अवसर पर मैं गुरुदेव का प्रणाम करता हूं, फिर एक बार आप सबका आभार व्यक्त करता हूं और मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि आप इतने उत्तम काम कर रहे हैं, इतने सात्विक काम कर रहे हैं। दिल्ली की सरकार आपके साथ खड़े रहने में कभी पीछे नहीं हटेगी। यह मैं आपको विश्वास दिलाता हूं।

बहुत-बहुत धन्यवाद

जय गुरुशंकर।

एकेपी/डीसी - 726

**Press Information Bureau
Government of India
Prime Minister's Office**

21-March-2016 19:43 IST

**Text of Dr. Ambedkar Memorial Lecture delivered by the PM, at foundation stone laying ceremony for Dr. B.R.
Ambedkar National Memorial**

आज मुझे Ambedkar Memorial Lecture देने के लिए अवसर मिला है। यह छठा लेक्चर है। लेकिन यह मेरा सौभाग्य कहो, या देश को सोचने का कारण कहो, मैं पहला प्रधानमंत्री हूँ जो यहां बोलने के लिए आया हूँ। मैं मेरे लिए इसे सौभाग्य मानता हूँ। और इसके साथ-साथ भारत सरकार की एक योजना को साकार करने का अवसर भी मिला है कि 26-अलीपुर जहां पर बाबा साहब का परिनिर्वाण का स्थल है वहां एक भव्य प्रेरणा स्थली बनेगी। किसी के भी मन में सवाल आ सकता है कि जिस महापुरुष ने 1956 में हमारे बीच से विदाई ली, आज 60 साल के बाद वहां पर कोई स्मारक की शुरुआत हो रही है। 60 साल बीत गए, 60 साल बीत गए।

मैं नहीं जानता हूँ कि इतिहास की घटना को कौन किस रूप में जवाब देगा। लेकिन हमें 60 साल इंतजार करना पड़ा। हो सकता है ये मेरे ही भाग्य में लिखा गया होगा। शायद बाबा साहब के मुझे पर आशीर्वाद रहे होंगे के मुझे ये सौभाग्य मुझे मिला।

मैं सबसे पहले भारत के पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी का हृदय से अभिनंदन करना चाहता हूँ। क्योंकि वाजपेयी जी की सरकार ने यह निर्णय न किया होता, क्योंकि यह संपत्ति तो प्राइवेट चली गई थी। और जिस सदन में बाबा साहब रहते थे, वो तो पूरी तरह ध्वस्त करके नई इमारत वहां बना दी गई थी। लेकिन उसके बावजूद भी वाजपेयी जी जब सरकार में थे, प्रधानमंत्री थे, उन्होंने इसको acquire किया। लेकिन बाद में उनकी सरकार रही नहीं। बाकी जो आए उनके दिल में अम्बेडकर नहीं रहे। और उसके कारण मकान acquire करने के बाद भी कोई काम नहीं हो पाया। हमारा संकल्प है कि 2018 तक इस काम को पूर्ण कर दिया जाए। और अभी से मैं विभाग को भी बता देता हूँ, मंत्रि श्री को भी बता देता हूँ 2018, 14 अप्रैल को मैं इसका उद्घाटन करने आऊंगा। Date तय करके ही काम करना है और तभी होगा। और होगा, भव्य होगा ये मेरा पूरा विश्वास है।

इसकी जो design आपने देखी है, इसे आप भी विश्वास करेंगे दिल्ली के अंदर जो iconic buildings हैं, उसमें अब इस स्थान का नाम हो जाएगा। दुनिया के लिए वो iconic building होगा, हमारे लिए प्रेरणा स्थली है, हमें अविरत प्रेरणा देने वाली स्थली है, और इसलिए आने वाली पीढ़ियों में जिस-जिसको मानवता की दृष्टि से मानवता के प्रति commitment के लिए कार्य करने की प्रेरणा पानी होगी तो इससे बढ़ करके प्रेरणा स्थली क्या हो सकती है।

कभी-कभार मेरी एक शिकायत रहती है और यह शिकायत मैं कई बार बोल चुका हूँ लेकिन हर बार मुझे दोहराने का मन करता है। कभी हम लोग बाबा साहब को बहुत अन्याय कर देते हैं जी। उनको दलितों का मसीहा बना करके तो घोर अन्याय करते हैं। बाबा साहब को ऐसे सीमित न करें। वे अमानवीय, हर घटना के खिलाफ आवाज़ उठाने वाले महापुरुष थे। हर पीढ़ी, शोषित, कुचले, दबे, उनकी वो एक प्रखर आवाज़ थी। उनको भारत की सीमाओं में बांधना भी ठीक है। उनको 'विश्व मानव' के रूप में हमने देखना चाहिए। दुनिया जिस रूप से मार्टिन लूथर किंग को देखती है, हम बाबा अम्बेडकर साहब को उससे जरा भी कम नहीं देख सकते। अगर विश्व के दबे-कुचले लोगों की आवाज़ मार्टिन लूथर किंग बन सकते हैं, तो आज विश्व के दबे कुचले लोगों की आवाज़ बाबा साहब अम्बेडकर बन सकते हैं। और इसलिए मानवता में जिस-जिस का विश्वास है उन सबके लिए ये बहुत आवश्यक है कि बाबा साहब मानवीय मूल्यों के रखवाले थे।

और हमें संविधान में जो कुछ मिला है, वो जाति विशेष के कारण नहीं मिला है। अन्याय की परंपराओं को नष्ट करने का एक उत्तम प्रयास के रूप में हुआ है। कभी इतिहास के झरोखे से मैं देखूं तो मैं दो महापुरुषों को विशेष रूप से देखना चाहूंगा, एक सरदार वल्लभ भाई पटेल और दूसरे बाबा साहेब अम्बेडकर।

देश जब आजाद हुआ तब, अनेक राजे-रजवाड़ों में यह देश बिखरा पड़ा था। राजनैतिक दृष्टि से बिखराव था व्यवस्थाओं में बिखराव था, शासन तंत्र बिखरे हुए थे और अंग्रेजों का इरादा था कि यह देश बिखर जाए। हर राजा-रजवाड़े अपना सिर ऊचां कर करके, यह देश को जो हालत में छोड़े, छोड़े, लेकिन सरदार वल्लभ भाई पटेल थे, जिन्होंने राष्ट्र की एकता के लिए सभी राजे-रजवाड़ों को अपने कूटनीति के द्वारा, अपने कौशल्य के द्वारा, अपने political wheel के द्वारा और बहुत ही कम समय में इस काम को उन्होंने करके दिखाया। और आज से तो हिमाचल कश्मीर से कन्या कुमारी एक भव्य भारत माता का निर्माण सरदार वल्लभ भाई पटेल के माध्यम से हम देख पा रहे हैं। तो एक तरफ राजनैतिक बिखराव था, तो दूसरी तरफ सामाजिक बिखराव था। हमारे यहां ऊंच-नीच का भाव, जातिवाद का जहर, दलित, पीड़ित, शोषित, वंचित, आदिवासी इन सबके प्रति उपेक्षा का भाव और सदियों से यह बीमारी हमारे बीच घर कर गई थी। कई महापुरुष आए उन्होंने सुधार के लिए प्रयास किया। महात्मा गांधी ने किया, कई, यानि कोई शताब्दी ऐसी नहीं होगी कि हिंदु समाज की बुराईयों को नष्ट करने के लिए प्रयास न हुआ हो।

लेकिन बाबा साहेब अम्बेडकर ने राजनीतिक-संवैधानिक व्यवस्था के माध्यम से सामाजिक एकीकरण का बीड़ा उठाया, जो काम राजनीतिक एकीकरण का सरदार पटेल ने किया था, वो काम सामाजिक एकीकरण का बाबा साहेब अम्बेडकर जी के द्वारा हुआ।

और इसलिए ये जो सपना बाबा साहेब ने देखा हुआ है उस सपने की पूर्ति का प्रयास उसमें कहीं कोताही नहीं बरतनी चाहिए। उसमें कोई ढीलापन नहीं आना चाहिए। कभी-कभार बाबा साहेब के विषय में जब हम सोचते हैं, हम में से बहुत कम लोगों को मालूम होगा कि बाबा साहेब को मंत्रिपरिषद से इस्तीफा देने की नौबत क्यों आई। या तो हमारे देश में इतिहास को दबोच दिया जाता है, या तो हमारे देश में इतिहास को dilute किया जाता है या divert कर दिया जाता है, अपने-अपने तरीके से होता है। Hindu code bill बाबा साहेब की अध्यक्षता में काम चल रहा था और उस समय प्रारंभ में शासन के सभी मुखिया वगैरह सब इस बात में साथ दे रहे थे। लेकिन जब Hindu Code Bill Parliament में आने की नौबत आई और महिलाओं को उसमें अधिकार देने का विषय जो था, संपत्ति में अधिकार, परिवार में अधिकार, महिलाओं को equal right देने की व्यवस्था थी उसमें क्योंकि बाबा साहेब अम्बेडकर किसी को भी वंचित, पीड़ित, शोषित देख ही नहीं सकते थे। और ये सिर्फ दलितों के लिए नहीं था, टाटा, बिरला परिवार की महिलाओं के लिए भी था और दलित बेटों के लिए भी था। ये बाबा साहेब का vision देखिए। लेकिन, लेकिन उस समय की सरकार इस progressive बातों के सामने जब आवाज उठी, तो टिक नहीं पाई, सरकार दब गई कि भारत में ऐसा कैसे हो सकता है कि महिलाओं को संपत्ति का अधिकार देंगे वो तो बहू बनके कहीं चली जाती हैं! तो फिर पता नहीं क्या हो जाएगा? समाज में कैसे बिखराव, ये सारे डर पैदा हुए, पचासों प्रकार के लोगों ने अपना डर व्यक्त किया। ऐसे समय बाबा साहेब को लगा, अगर भारत की नारी को हक नहीं मिलता है, तो फिर उस सरकार का बाबा साहेब हिस्सा भी नहीं बन सकते और उन्होंने सरकार छोड़ दी थी। और जो बातें बाबा साहेब ने सोची थीं, वो बाद में समय बदलता गया, लोगों की सोच में भी थोड़ा सुधार आता गया, धीरे-धीरे करके कभी एक चीज सरकार ने मान ली, कभी दो मान लीं, कभी एक आई, कभी दो आईं। धीरे-धीरे-धीरे करके बाबा साहेब ने जितना सोचा था, वो सारा बाद में सरकार को स्वीकार करना पड़ा। लेकिन बहुत साल लग गए, बहुत सरकारें आ के चली गईं।

कहने का मेरा तात्पर्य ये है, कि अगर मैं दलितों के अंदर बाबा साहेब को सीमित कर दूंगा, तो इस देश की 50 प्रतिशत जनसंख्या माताओं, बहनों को बाबा साहेब ने इतना बड़ा हक दिया, उनका क्या होगा? और इसलिए ये आवश्यक है कि बाबा

साहेब को उनकी पूर्णता के रूप में समझें, स्वीकार करें।

Labour Laws, हमारे देश में महिलाओं को कोयले की खदान में काम करना बड़ा दुष्कर था, लेकिन कानून रोकता नहीं था। और ये काम इतना कठिन था कि महिलाओं से नहीं करवाया जा सकता। ये बाबा साहेब अम्बेडकर ने हिम्मत दिखाई और महिलाओं को कोयले की खदानों के कामों से मुक्त कराने का बहुत बड़ा निर्णय बाबा अम्बेडकर ने किया था।

हमारे देश में मजदूरी, सिर्फ दलित ही मजदूर थे ऐसा नहीं, जो भी मजदूर थे, बाबा साहेब उन सबके मसीहा थे। और इसलिए 12 घंटा, 14 घंटा मजदूर काम करता रहता था, मालिक काम लेता रहता था और मजदूर को भी नहीं लगता था कि मेरा भी कोई जीवन हो सकता है, मेरे भी कोई मानवीय हक हो सकते हैं, उस बेचारे को मालूम तक नहीं था। और न ही कोई बाबा साहेब अम्बेडकर को memorandum देने आया था कि हमने इतना काम लिया जाता है कुछ हमारा करो। ये बाबा साहेब की आत्मा की पुकार थी कि उन्होंने 12 घंटे, 14 घंटे काम हो रहा था, 8 घंटे सीमित किया। आज भी हिन्दुस्तान में जो labour laws है, उसकी अगर मुख्य कोई foundation है, वो foundation के रचियता बाबा साहेब अम्बेडकर थे।

आप हिन्दुस्तान के 50 प्रमुख नेताओं को ले लीजिए, जिनको देश के निर्णय करने की प्रक्रिया में हिस्सा लेने का अवसर मिला है, वो कौन से निर्णय है, जिन निर्णयों ने हिन्दुस्तान को एक शताब्दी तक प्रभावित किया। पूरी 20वीं शताब्दी में जो विचार, जो निर्णय, देश पर प्रभावी रहे, जो आज 21वीं सदी के प्रारंभ में भी उतनी ही ताकत से काम कर रहे हैं। अगर आप किस-किस के कितने निर्णय, इसका अगर खाका बनाओगे, तो मैं मानता हूँ कि बाबा साहेब अम्बेडकर नम्बर एक पर रहेंगे, कि जिनके द्वारा सोची गई बातें, जिनके द्वारा किए गए निर्णय आज भी relevant हैं।

आप देख लीजिए power generation, electricity, आज हम देख रहे हैं कि हिन्दुस्तान में ऊर्जा की दिशा में जो काम हुआ है, उसका अगर कोई structured व्यवस्था बनी तो बाबा साहेब के द्वारा बनी थी। और उसी का नतीजा था कि Electric Board वगैरा, electricity generation के लिए अलग व्यवस्थाएं खड़ी हुईं जो आगे चल करके देश में विस्तार होता गया, और भारत में ऊर्जा की दिशा में self-sufficient बनने के लिए भारत में घर-घर ऊर्जा पहुंचाने की दिशा में उस सोच का परिणाम था, कि उन्होंने एक structured व्यवस्था देश को दी।

आपने देखा होगा, अभी-अभी Parliament में एक bill हम लोग लाए। जब हम ये bill लाए तो लोगों को लगा होगा कि वाह! मोदी सरकार ने क्या कमाल कर दिया। Bill क्या लाए हैं, हम भारत के पानी की शक्ति को समझ करके Water-ways पर महात्म्य देना, Water-ways के द्वारा हमारे यातायात को बढ़ाना, हमारे goods-transportation को बढ़ाना, उस दिशा में एक बड़ा महत्वपूर्ण निर्णय अभी इस Parliament में किया है। लेकिन कोई कृपा करके मत सोचिए कि मोदी की सोच है। यहां हमने जरूर है, सौभाग्य मिला है, लेकिन ये मूल विचार बाबा साहेब अम्बेडकर का है। बाबा साहेब अम्बेडकर थे जिन्होंने उस समय, उस समय भारत की maritime शक्ति और भारत के Water-ways की ताकत को समझा था और उस की structured व्यवस्था की थी। और उसको वहां आगे बढ़ाना चाहते थे। अगर लम्बे समय उनको सरकार में सेवा करने का मौका मिलता जो निर्णय मैंने अभी किया Parliament में, वो आज से 60 साल पहले हो गया होता। यानी बाबा साहेब के न होने का इस देश को कितना घाटा हुआ है, यह हमें पता चलता है और बाबा साहेब का कोई भक्त सरकार में आता है, तो 60 साल के बाद भी काम कैसे होता है, ये नजर आता है।

बाबा साहेब हमें क्या संदेश देकर गए, और मैं मानता हूँ जो बीमारी का सही उपचार अगर किसी ने ढूंढा है, तो बाबा साहेब ने ढूंढा है। बीमारियों का पता बहुतों को होता है, बीमारी से मुक्ति के लिए छोटे-मोटे प्रयास करने वाले भी कुछ लोग होते हैं लेकिन एक स्थाई समाधान, अगर किसी ने दिया तो बाबा साहेब ने दिया, वो क्या? उन्होंने समाज को एक ही बात कही कि भाई शिक्षित बनो, शिक्षित बनो, ये सारी समस्याओं का समाधान शिक्षा में है। और एक बार अगर आप शिक्षित होंगे,

तो दुनिया के सामने आप आंख से आंख मिला करके बात कर पाओगे, कोई आपको नीचा नहीं देख सकता, कोई आपको अछूत नहीं कह सकता। ये, ये जो Inner Power देने का प्रयास, ये Inner Power था। उन्होंने बाहरी ताकतें नहीं दी थीं, आपकी आंतरिक ऊर्जा को जगाने के लिए उन्होंने रास्ता दिखाया था। दूसरा मंत्र दिया, संगठित बनो और तीसरा बात बताया मानवता के पक्ष में संघर्ष करो, अमानवीय चीजों के खिलाफ आवाज उठाओ। ये तीन मंत्र आज भी हमें प्रेरणा देते रहे हैं, हमें शक्ति देते रहे हैं। और इसलिए हम जब बाबा साहेब अम्बेडकर की बात करते हैं तब, हमारा दायित्व भी तो बनता है और दायित्व बनता है, बाबा साहेब के रास्ते पर चलने का। और उसकी शुरुआत आखिरी मंत्र से नहीं होती है, पहले मंत्र से होती है। वरना कुछ लोगों को आखिरी वाला ज्यादा पसंद आता है, संघर्ष करो। पहले वाला मंत्र है शिक्षित बनो, दूसरे वाला मंत्र है संगठित बनो। आखिर में जरूरत ही नहीं पड़ेगी, वो नौबत ही नहीं आयेगी। क्योंकि अपने आप में इतनी बड़ी ताकत होगी कि दुनिया को स्वीकार करना होगा। और बाबा साहेब ने जो कहा, वो जी करके दिखाया था। वरना वे भी शिक्षा छोड़ सकते थे, तकलीफें उनको भी आई थीं, मुसीबतें उनको भी आई थीं, अपमान उनको भी झेलने पड़े थे। और मुझे खुशी हुई अभी हमारे बिहार के गवर्नर एक delegation लेकर बड़ौदा गए थे और बड़ौदा जा करके सहजराव परिवार को उन्होंने सम्मानित किया। इस बात के लिए सम्मानित किया कि यह सहजराव गायकवाड़ थे, जिसको सबसे पहले इस हीरे की पहचान हुई थी। और इस हीरे को मुकुटमणि में जड़ने का काम अगर किसी ने सबसे पहले किया था तो सहजराव गायकवाड़ ने किया था। और तभी तो भारत को सहजराव गायकवाड़ की एक भेंट है कि हमें बाबा साहेब अम्बेडकर मिले। और इसलिए धन्यवाद प्रस्ताव करने के लिए सहजराव गायकवाड़ के परिवार के पास जा करके काफी समाज के लोग गए थे, और उनका सम्मान किया, परिवार का। वरना उस समय एक peon भी बाबा साहेब को हाथ से पानी देने के लिए तैयार नहीं था। वो नीचे रखता था, फिर बाबा साहेब उठाते थे। ऐसे माहौल में गायकवाड़ जी ने बाबा अम्बेडकर साहेब को गले लगा लिया था। ये हमारे देश की विशेषता है। इन विशेषताओं को भी हमें पहचानना होगा। और इन विशेषताओं के आधार पर हमने आगे की हमारी जीवन विकास की यात्रा को आगे बढ़ाना होगा।

कभी-कभार हमारे देश में बाबा साहेब अम्बेडकर ने जिस भावना से जिन कामों को किया, वो पूर्णतया पवित्र राष्ट्र निष्ठा थी, समाज निष्ठा थी। राज निष्ठा की प्रेरणा से बाबा साहेब अम्बेडकर ने कभी कोई काम नहीं किया। राष्ट्र निष्ठा और समाज निष्ठा से किया और इसलिए हमने भी हमारी हर सोच हमारे हर निर्णय को इस तराजू से तोलने का बाबा अम्बेडकर साहेब ने हमें रास्ता दिखाया है कि राष्ट्र निष्ठा के तराजू से तोला जाए, समाज निष्ठा के तराजू से तोला जाए, और तब जा करके वो हमारा निर्णय, हमारी दिशा, सही सिद्ध होगी।

कुछ लोगों ने एक बात, कुछ लोगों का हमसे, हम लोग वो हैं जिनको कुछ लोग पसंद ही नहीं करते हैं। हमें देखना तक नहीं चाहते हैं। उनको बुखार आ जाता है और बुखार में आदमी कुछ भी बोल देता है। बुखार में वो मन का आपा भी खो देता है, और इसलिए असत्य, झूठ, अनाप-शनाप ऐसी बातों को प्रचारित किया जाता है। मैं आज जब, जिन लोगों ने 60 साल तक कोई काम नहीं किया, उस 26-अलीपुर के गौरव के लिए आज यहां खड़ा हूँ तब, मुझे बोलने का हक भी बनता है।

मुझे बराबर याद है, जब वाजपेयी जी की सरकार बनी तो चारों तरफ हो-हल्ला मचा था अब ये भाजपा वाले आ गए हैं, अब आपका आरक्षण जाएगा। जो लोग पुराने हैं उनको याद होगा। वाजपेयी जी की सरकार के समय ऐसा तूफान चलाया, गांव-गांव, घर-घर, ऐसा माहौल बना दिया जैसे बस चला ही जाएगा। वाजपेयी जी की सरकार रही, दो-टंब रही लेकिन खरोंच तक नहीं आने दी थी। फिर भी झूठ चलाया गया।

मध्यप्रदेश में सालों से भारतीय जनता पार्टी राज कर रही है, गुजरात में, महाराष्ट्र में, पंजाब में, हरियाणा में, उत्तर प्रदेश में, अनेक राज्यों में, हम जिन विचार को लेकर के निकले हैं, उस विचार वालों को सरकार चलाने का अवसर मिला, दो-तिहाई बहुमत से अवसर मिला, लेकिन कभी भी दलित, पीड़ित, शोषित, tribal, उनके आरक्षण को खरोंच तक नहीं आने दी है। फिर भी झूठ चलाया जा रहा है, क्यों? बाबा साहेब अम्बेडकर ने जो राष्ट्र निष्ठा और समाज निष्ठा के आधार पर देश

को चलाने की प्रेरणा दी थी, उससे हट करके सिर्फ राजनीति करने वाले लोग हैं, वो इससे बाहर नहीं निकल पाते हैं, इसलिए से बातों को झूठे रूप में लोगों को भ्रमित करने के लिए चला रहे हैं और इसलिए मैं, मैं जब Indu Mills के कार्यक्रम के लिए गया था, चैत्य भूमि के पुनर्निर्माण के शिलान्यास के लिए गया था, उस समय मैंने कहा था खुद बाबा साहेब अम्बेडकर भी आ करके, आपका ये हक नहीं छीन सकते हैं। बाबा साहेब के सामने हम तो क्या चीज हैं, कुछ नहीं हैं जी। उस महापुरुष के सामने हम कुछ नहीं हैं। और इसलिए ये जो भ्रम फैलाए जा रहे हैं, उनकी राजनीति चलती होगी, लेकिन समाज में इसके कारण दरारें पैदा होती हैं, तनाव पैदा होते हैं और समाज को दुर्बल बना करके, हम राष्ट्र को कभी सबल नहीं बना सकते हैं, इस बात को हम लोगों ने जिम्मेवारी के साथ समझना होगा।

बाबा साहेब अम्बेडकर का आर्थिक चिंतन और वैसे तो अर्थवेत्ता थे। उनकी पूरी पढ़ाई आर्थिक विषयों पर हुई और उनकी पीएचडी भी, जो लोग आज भारत की महान परंपराओं को गाली देने में गौरव अनुभव करते हैं, उनको शायद पता नहीं है, कि बाबा साहेब अम्बेडकर की Thesis भी भारत की उत्तम वैभवशाली व्यापार विषय को ले करके उन्होंने पीएचडी किया था। जो भारत के पुरातन हमारे गौरव को अभिव्यक्त करता था। लेकिन बाबा साहेब को समझना नहीं, बाबा साहेब की विशेषता को मानना नहीं, और इसको समझने के लिए सिर्फ किताबें काम नहीं आती हैं, बाबा साहेब को समझने के लिए समाज के प्रति संवेदना चाहिए और उस महापुरुष के प्रति भक्ति चाहिए, तब जा करके संभव होगा, तब जा करके संभव होगा। और इसलिए बाबा साहेब अम्बेडकर ने अपने आर्थिक चिंतन में एक बात साफ कही थी, वो इस बात को लगातार थे कि भारत का औद्योगिकरण बहुत अनिवार्य है। Industrialisation, उस समय से वो सोचते थे, एक तरफ labour reforms करते थे, labour के हक के लिए लड़ाई लड़ते थे, लेकिन राष्ट्र के लिए औद्योगिकरण की वकालत करते थे। देखिए कितना बढ़िया combination है। लेकिन आज क्या हाल है, जो labour की सोचता है वो उद्योग की सोचने को तैयार नहीं, जो उद्योग की सोचता है वो labour की सोचने को तैयार नहीं है। और वहीं बाबा साहेब अम्बेडकर थे जो दोनों की सोचते थे, क्योंकि राष्ट्र निष्ठा की तराजू से तोलते थे। और इसलिए वो दोनों की सोचते थे, और उसी का परिणाम ये है कि बाबा साहेब औद्योगिकरण के पक्षकार थे और उनका बड़ा महत्वपूर्ण तर्क था, वो साफ कहते थे, कि मेरे देश के जो दलित, पीड़ित, शोषित हैं, उनके पास जमीन नहीं है और हम नहीं चाहते वो खेत मजदूर की तरह अपनी जिंदगी पूरी करें, हम चाहते हैं वो मुसीबतों से बाहर निकलें। औद्योगिकरण की जरूरत इसलिए है कि मेरे दलित, पीड़ित, शोषित, वंचित लोगों को रोजगार के नए अवसर उपलब्ध हो जाएं, इसलिए औद्योगिकरण चाहिए। दलित, पीड़ित, शोषितों के पास जमीन नहीं है। खेती उसके नसीब में नहीं है। खेत मजदूर के नाते जिंदगी, क्या यही गुजारा करेगा क्या? और इसके लिए बाबा साहेब अम्बेडकर ने इन बातों को बल दिया। औद्योगिकरण को बल दिया।

इसी विज्ञान भवन में मेरे लिए एक बहुत बड़ा गौरव का दिन था, जब मैं दलित चैंबर के लोगों से यहां मिला था। मिलिंद यहां बैठा है, और देश भर से दलित Entrepreneur आए थे। और मैं तो हैरान, आनंद मुझे तब हुआ, कि दलितों में Women Entrepreneur भी बहुत बड़ी तादाद में आए थे। और उनका संकल्प क्या था, मैं मानता हूं बाबा साहेब अम्बेडकर को उत्तम से उत्तम श्रद्धांजलि देने का प्रयास अगर कोई करता है, तो ये दलित चैंबर के मित्र कर रहे हैं। उन्होंने कहा, हम नहीं चाहते हैं कि दलित रोजगार पाने के लिए तड़पता रहे वो रोजगारी के लिए याचक बने, हम वो स्थिति पैदा करना चाहते हैं कि दलित रोजगार देने वाला बने। और उन्होंने हमारे सामने कुछ मांगे रखी थीं। और आज मैं गर्व के साथ कहता हूं, उस मीटिंग को चार महीने अभी तो पूरे नहीं हुए हैं, इस बजट में वो सारी मांगे मान ली गई हैं, सारी बातें लागू कर दी हैं। ये आपने अखबार में नहीं पढ़ा होगा। अच्छी चीजें बहुत कम आती हैं।

दलित Entrepreneurship, उसके लिए अनेक प्रोत्साहन, venture, capital, fund समेत कई बातें, इस field के लोगों ने जिन्होंने तय किया, जिनका माद्दा है कुछ करना है हमारे दलित युवाओं के लिए। वो बात इतनी ताकतवर थी कि सरकार को मांगे माने बिना, कोई चारा नहीं था जी। कोई आंदोलन नहीं किया था, कोई संघर्ष नहीं था लेकिन बात में दम था। और ये सरकार इतनी संवेदनशील है कि जिस बात से देश आगे बढ़ता है वो उसकी प्राथमिकता होती है, और हम भी उस पर चलते हैं।

मेरा कहने का तात्पर्य ये है भाइयो, कि हमें समाज की एकता को बल देना है। और बाबा साहेब से ये ही तो सीखना पड़ेगा। आप कल्पना कर सकते हो कि एक महापुरुष जिसको इतना जुल्म सहना पड़ा हो, जिसका बचपन अन्याय, उपेक्षा और उत्पीड़न से बीता हो, जिसने अपनी मां को अपमानित होते देखा हो, मुझे बताइए ऐसे व्यक्ति को मौका मिल जाए तो हिसाब चुकता करेगा कि नहीं करेगा? तुम, तुम मुझे पानी नहीं भरने देते थे, तुम मुझे मंदिर नहीं जाने देते थे, तुम, मेरे बच्चों को स्कूल में admission देने से मना करते थे। मुनष्य को जो level है ना, वहां ये बहुत स्वाभाविक है। लेकिन जो मानव से कुछ ऊपर है वो बाबा साहेब अम्बेडकर थे, कि जब उनके हाथ में कलम थी, कोई भी निर्णय करने की ताकत थी, लेकिन आप पूरा संविधान देख लीजिए, पूरी संविधान सभा की debate देख लीजिए, बाबा साहेब अम्बेडकर की बातों में, वाणी में, शब्द में, कहीं कटुता नजर नहीं आती है, कहीं बदले का भाव नजर नहीं आता है। उनका भाव यही रहा, और वो भाव क्या था, मैं अपने शब्दों में कह सकता हूं, कि कभी-कभार खाना खाते समय दांतों के बीच हमारी जीभ कट जाती है, लेकिन हम दांत तोड़ नहीं देते हैं। क्यों? क्योंकि हमें पता है दांत भी मेरे हैं, जीभ भी मेरी है। बाबा साहेब अम्बेडकर के लिए सवर्ण भी उनके थे और हमारे दलित, पीड़ित, शोषित भी, दोनों ही उनके लिए बराबर थे, और इसलिए बदले का नामो-निशान नहीं था, कटुता का नामो-निशान नहीं था। बदले के भाव को जन्म न देने का और समाज को साथ ले के चलने की प्रेरणा देने वाला प्रयास बाबा साहेब अम्बेडकर की हर बात में झलकता है और ये देश, सवा सौ करोड़ का देश बाबा साहेब अम्बेडकर का हमेशा-हमेशा ऋणी रहेगा, जिसने देश की एकता के लिए अपने जुल्मों को दबा दिया, गाढ़ दिया। भविष्य भारत का देखा और बदले की भावना के बिना समाज को एक करने की दिशा में प्रयास किया है।

क्या हम सब, हमारे राजनीतिक कारण कुछ भी होंगे, पराजय को झेलना बड़ा मुश्किल होता है। लेकिन उसके बावजूद भी जय और पराजय से भी समाज का जय बहुत बड़ा होता है, राष्ट्र का जय बहुत बड़ा होता है। और इसलिए उसके लिए समर्पित होना ये हम सबका दायित्व बनता है। इस दायित्व को ले करके बाबा साहेब अम्बेडकर ने जो उत्तम भूमिका निभाई है, राजनीतिक कारणों से इस महापुरुष के योगदान को अगर सही रूप में उनके जीवनकाल से ले करके अब तक अगर हमने प्रस्तुत किया होता तो आज भी समाज में कहीं-कहीं-कहीं तनाव नजर आता है, कभी-कभी टकराव नजर आता है, कभी-कभी खंरोच हो जाती है। मैं दावे से कहता हूं, अगर बाबा साहेब अम्बेडकर को हमने भुला न दिया होता, तो ये हाल न हुआ होता। अगर बाबा साहेब अम्बेडकर को फिर से एक बार हम उसी भाव के साथ, श्रद्धा के साथ जनसामान्य तक पहुंचाने का प्रयास करेंगे तो ये जो कमियां हैं वो कमियां भी दूर हो जाएंगी, तो ताकत उस नाम में है, उस काम में है, उस समर्पण में है, उस त्याग में है, उस तपस्या में है, उस महान चीजें जो हमें दे करके गए हैं उसके अंदर पड़ा हुआ है और उसकी पूर्ति के लिए हम लोगों का प्रयास होना बहुत आवश्यक है।

और इसलिए बाबा साहेब मानवता के पक्षकार थे। अमानवता की हर चीज को वो नकारते थे। उसका परिमार्जन का प्रयास करते थे और हर चीज संवैधानिक तरीके से करते थे। लोकतांत्रिक मर्यादाओं के साथ करते थे। बाबा साहेब के साथ क्या-क्या अन्याय किया, किस-किसने अन्याय किया, ये हम सब भली-भांति जानते हैं। हमारा संकल्प ये ही रहे दलित हो, पीड़ित हो, शोषित हो, जो गण वंचित हो, गरीब हो, आदिवासी हो, गांव में रहने वाला हो, झुग्गी-झोंपड़ी में जीने वाला हो, शिक्षा के अभाव में तरसने वाला हो, इन सबके लिए अगर कुछ काम करना है तो बाबा साहेब अम्बेडकर हमारे लिए सदा-सर्वदा एक प्रेरणा हैं और वो ही प्रेरणा हमें काम करने के लिए ताकत देती है।

आप देखिए, अभी मैं एक दिन बैठा था, मैं हमारे सरकार के लोगों से हिसाब मांग रहा था। मैंने कहा कि भई कितने गांव हैं जहां अब बिजली का खंभा भी नहीं पहुंचा है। आजादी के इतने साल बाद भी हिन्दुस्तान में 18 हजार गांव ऐसे पाए कि जहां बिजली का खंभा नहीं पहुंचा है। जिस बाबा साहेब अम्बेडकर ने power generation के लिए पूरा structure बना करके गए, 60 साल के बाद भी 18 हजार गांव में बिजली पहुंचेगी नहीं, तो बाबा साहेब अम्बेडकर को क्या श्रद्धाजंलि हम देंगे जी? हमने बीड़ा उठाया है, मैंने लालकिले से बोल दिया। जैसे आज बोल दिया न, 14 अप्रैल को मैं उद्घाटन करूंगा, 2018, लालकिले से मैंने बोल दिया 1000 दिन में मुझे 18,000 गांवों में बिजली पहुंचानी है और आप, आप अपने

मोबाइल फोन पर देख सकते हैं, आज किस गांव में बिजली पहुंची। आजादी के 60 साल के बाद अब तक करीब-करीब 6000 से अधिक गांवों में बिजली पहुंच चुकी है, 18000 मुझे 1000 दिन में पूरे करने हैं, मैं देख रहा हूं शायद 18000, एक हजार दिन से भी कम समय में पूरा कर दूंगा। आप कल्पना कर सकते हैं, आप, आप एक साइकिल अपने पास रखो और सोच रहे हो कि भाई 2018 में स्कूटर लाना है। तो आप सोचते हैं किस colour का स्कूटर लाएंगे, किस कम्पनी का स्कूटर लाएंगे, अनेकों बार दुकान होगी तो देखते होंगे, brochure लेते होंगे, स्कूटर लाना है। साइकिल से स्कूटर जाएं तो भी एक और जिस दिन आए स्कूटर 10 रुपये की माला ला करके पहनाएंगे, नारियल फोड़ेंगे, मिठाई बांटेंगे, क्यों साइकिल से स्कूटर पर आए कितना आनंद होता है। 60 साल के बाद जिस गांव में बिजली आई होगी, कितना आनंद होगा, आप कल्पना कर सकते हैं। मैं उन 18000 गांवों को कहता हूं कि 60 साल के बाद आपके घर में भी बिजली आती है, तो मोदी का अभिनंदन मत करना, बाबा साहेब अम्बेडकर का करना, क्योंकि ये structure वो बनाके गए थे, लेकिन बीच वालों ने काम को पूरा नहीं किया। बाबा साहेब अम्बेडकर की इच्छा को मैं पूरा करने का सौभाग्य मानता हूं।

अभी 14 अप्रैल को मैं मऊ तो जा रहा हूं। ये पंचतीर्थ का निर्माण भी हमारे सौभाग्य का कारण बना है। जहां-जहां भाजपा की सरकारें हैं उन्हीं के समय हुआ है, ये सब। फिर भी बदनामी हमको दी जा रही है। क्या कारण था कि Indu Mills पर चैत्य भूमि का कार्य पहले की सरकारों ने नहीं किया। क्या कारण था 26-अलीपुर का फैसला आज करने की नौबत आई? क्या कारण है कि लंदन का मकान आज हम ले करके आए और राष्ट्र के लिए प्रेरणा दी? कोई भी मेरा दलित अब जाएगा लंदन उस मकान को जरूर देखने जाएगा। पढ़ने के लिए जाएगा या घूमने के लिए जाएगा, जरूर देखने जाएगा, मुझे विश्वास है। ये पंचतीर्थ की यात्रा, एक प्रेरक यात्रा बनी है कि समाज जीवन में कैसा परिवर्तन आया और हर काम दिल्ली के अंदर दो स्मारक, 26-अलीपुर और हमारा जो मैंने 15-जनपथ जिसका मैंने, शायद एक साल हो गया और construction उसका तेजी से चल रहा है, उसका लोकार्पण तो बहुत जल्द होने की नौबत आ जाएगी।

तो ये सारे काम भारतीय जनता पार्टी के लोगों को सरकार बनाने का सौभाग्य मिला तब हुए हैं। और इसलिए क्योंकि हमारी ये श्रद्धा है। अभी 14 अप्रैल को मैं मऊ तो जा रहा हूं, लेकिन उस दिन हम एक बड़ा कार्यक्रम कर रहे हैं, मुंबई में। कौन सा कार्यक्रम? बाबा साहेब अम्बेडकर ने जो सपना देखा था भारत की जल शक्ति का maritime का water-way का। हम एक Global Conference 14 अप्रैल को पानी के संदर्भ में मुंबई में करने जा रहे हैं, वो भी बाबा साहेब अम्बेडकर की जन्म-जयंती पर तय की है।

मैं मऊ में कार्यक्रम launch करने वाला हूं। हमारे देश के किसानों को, क्योंकि बाबा साहेब अम्बेडकर का आर्थिक चिंतन बड़ा ताकतवर चिंतन है जी और आज भी relevant है। बाबा साहेब अम्बेडकर ने किसानों की चिंता की है, अपने चिंतन में। किसान जो पैदावार करता है उसकी market को ले करके बहुत बड़ी कठिनाइयां हैं। और बेचारा घर से निकलता है मंडी में जाता है तब तक मंडी में कोई लेने वाला नहीं होता है। आखिरकार अपनी सब्जी वहीं पशुओं को खाने के लिए छोड़ करके घर वापिस चला जाता है, ये हमने देखा है। 14 अप्रैल को हम एक E-market , E-platform तैयार कर रहे हैं, जो हमारा किसान अपने मोबाइल फोन पर तय कर पाएगा कि किस मंडी में क्या दाम है, और कहां माल बेचने से ज्यादा पैसा मिल सकता है, वो मेरा किसान तय कर सकता है, ये भी, ये भी 14 अप्रैल, बाबा साहेब की जन्म-जयंती के दिन हम लोग उसका प्रारंभ करने वाले हैं।

कहने का मेरा तात्पर्य ये है कि उस दिशा में देश को चलाना है। ऐसे महापुरुषों के चिंतन वो हमारी प्रेरणा हैं, हमें ताकत देते हैं और हम उनसे सीखते हैं। और मजा ये है कि उनकी बातें आज भी relevant हैं। उन बातों को ले करके चल रहे हैं और राष्ट्र के निर्माण के लिए, राष्ट्र के कल्याण के लिए ये ही सही राह है। एसः पंथः, ये ही एक मार्ग है। उस मार्ग को ले करके हम आगे बढ़ रहे हैं। मैं फिर एक बार आप सब के बीच आने का मुझे सौभाग्य मिला और ये 60 साल से जो निर्णय नहीं हो पा रहा था, वाजपेयी जी ने जो सपना देखा था, उस सपने को पूरा करने का सौभाग्य हमें मिला है। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि 14 अप्रैल, 2018, आप सब मौजूद रहिए। फिर एक बार उस भव्य स्मारक को बनाएंगे। बहुत-बहुत

धन्यवाद।

अमित कुमार/ तारा / निर्मल शर्मा

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

17-मार्च-2016 21:38 IST

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा 17 मार्च, 2016 को नई दिल्ली में विश्व सूफी सम्मेलन में दिया गया भाषण

Syed Mohammad Ashraf, Founder President, All India Ulama and Mashaik Board
Shawki Ibrahim Abdel Karim Allam, Grand Mufti of Egypt,
Shaykh Hashimuddin Al Gailani, from Baghdad
Syed Minhaj Ur Rehman from Bangladesh
Diwan Ahmed Masood Chisti from Pakistan
Syed Nizami from Nizamuddin Dargah and Syed Chisti from Ajmer Sharif
My ministerial colleagues,
Scholars and Sufis from India

मैं, भारत, हमारे पड़ोसी देशों और दूर देशों से आए हुए मेहमानों का अभिनंदन करता हूँ।

आपका इस स्थल में स्वागत है, जो असीमित समय से शांति का फौवारा है, जो परंपराओं और आस्थाओं के प्राचीन स्रोत है, और विश्व के सभी धर्मों का स्वागत किया और उन्हें जगह दी।

इस देश में आपका स्वागत है, जो प्राचीन समय से 'वसुधैव कुटुम्बकम्' में विश्वास रखता है, अर्थात् जिसके लिए पूरा विश्व ही एक परिवार है।

विश्वास जो पवित्र कुरान के दैवीय संदेश के अनुरूप है वह यह है कि मनुष्य जाति एक ही समुदाय है और बाद में वे अपने बीच भेद करने लगे।

विश्वास, जो महान पर्शियन सूफी कवि सादी के शब्दों में सुनाई देता है जिसे यूनाइटेड नेशन्स में लिखा गया है कि सभी मनुष्य एक ही स्रोत से आते हैं और हम एक परिवार हैं।

इस प्राचीन शहर दिल्ली में आपका स्वागत है - जो अनेक लोगों, संस्कृतियों और विश्वासों की श्रेष्ठता से बना है।

इस देश की तरह, दिल्ली के दिल में सभी आस्थाओं के लिए जगह है। चाहे धर्म के मानने वाले की संख्या कम हो या चाहे किसी धर्म के मानने वाले करोड़ों में हों।

इसके शानदार धार्मिक स्थलों में सूफी संतों महबूब-ए-इलाही और हजरत बख्तियार काकी की दरगाहें शामिल हैं जो सभी धर्मों और विश्व के सभी कोनों से आने वाले लोगों को आकर्षित करती हैं।

यह संसार के लिए बड़ी महत्ता रखने वाला असाधारण कार्यक्रम है, जो मानव जाति के लिए समय की मांग है।

इस समय जब हिंसा की काली परछाइयां बड़ी होती जा रही हैं, तो आप उम्मीद का नूर या रोशनी हैं।

जब जवान हंसी को बंदूकें खामोश कर रही हैं, ऐसे समय में आपकी आवाज मरहम है।

जहाँ विश्व न्याय और शांति के लिए सभा आयोजित करने के लिए कोशिश करता है, यह उन लोगों की सभा है जिनका जीवन स्वयं ही शांति, सहनशीलता और प्रेम का संदेश है।

आप भिन्न-भिन्न देशों और संस्कृतियों से आए हैं किंतु एक आस्था ने आपको बांधा हुआ है।

आप भिन्न-भिन्न भाषाएं बोलते हैं परंतु आप की आवाज़ सौहार्द का संदेश में मिल जाती हैं।

और आप प्रतिनिधि/नुमाइंदे हैं इस्लामी सभ्यता की समृद्ध विविधता की जो महान धर्म के ठोस धरातल पर खड़ी है।

यह वह सभ्यता है जिसने विज्ञान, चिकित्सा, साहित्य, कला, वास्तुकला व वाणिज्य में पंद्रहवीं सदी तक बड़ी उपलब्धियां प्राप्त की हैं।

इसने अपने लोगों की बहुमुखी प्रतिभा और इस्लाम की विभिन्न सभ्यताओं से संपर्क के कारण सीखा - प्राचीन मिस्र, मैसेपोटामिया और अफ्रीका; पर्शिया, मध्य एशिया और काकेशियन क्षेत्र; पूर्वी एशिया का क्षेत्र और बौद्ध दर्शन तथा भारतीय दर्शन और विज्ञान।

और जैसे इस्लाम की सभ्यता इस प्रकार समृद्ध हुई, इसने विश्व को भी समृद्ध बनाया है।

इसने एक बार फिर मानव इतिहास के लिए स्थायी सीख दी है। खुलेपन और जानने की इच्छा, संपर्क और स्वीकृति तथा विविधता के प्रति सम्मान द्वारा ही मानवता आगे बढ़ती है, देश उन्नति करते हैं और संसार समृद्ध बनता है।

और यही संदेश है सूफीवाद का जो इस्लाम का संसार में बड़ा योगदान है।

मिस्र और पश्चिमी एशिया से शुरू हो कर सूफी वाद दूर-दूर तक पहुंचा -मानवीय मूल्यों और आस्था का झण्डा लिए हुए, अन्य सभ्यताओं के आध्यात्मिक विचारों से सीख लेते हुए, और अपने संतों के जीवन और संदेश से लोगों को आकर्षित करते हुए

चाहे वह अफ्रीका का सहारा क्षेत्र हो, दक्षिण पूर्व एशिया, तुर्की हो या मध्य एशिया, ईरान हो या भारत, हर स्थिति में सूफीवाद ने मनुष्य की उस इच्छा को व्यक्त किया है जिसमें वह धार्मिक रीतियों और मान्यताओं से आगे बढ़ कर ईश्वर के साथ गहराई से जुड़ना चाहता है।

और इस आध्यात्मिक जिज्ञासा में सूफियों ने ईश्वर के चिरकालिक संदेश का अनुभव किया।

कि मानव जीवन में उत्तमता उन गुणों में दिखायी देती है जो ईश्वर को प्रिय हैं।

कि सभी प्राणी भगवान के द्वारा बनाए गए हैं और अगर हम ईश्वर से प्रेम करते हैं तो हमें उसकी सब रचनाओं से प्रेम करना चाहिए।

जैसा हजरत निजामुद्दीन औलिया ने कहा था, ईश्वर को वही प्यारा लगता है जो मनुष्य की भलाई के लिए ईश्वर से प्रेम करता है और जो मनुष्यों को ईश्वर के लिए प्रेम करता है।

यह मानवता और ईश्वर की सभी रचनाओं की एकता का संदेश है।

सूफियों के लिए ईश्वर की सेवा करने का अर्थ है मानवता की सेवा करना।

ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती के शब्दों में सभी प्रार्थनाओं में वह प्रार्थना भगवान को सबसे अच्छी लगती है जिससे असहाय और गरीबों की मदद हो।

मानव मूल्यों के बारे में उन्होंने बड़े सुंदररूप में कहा था कि इंसानों में सूर्य जैसा स्नेह, नदी जैसी उदारता और धरती जैसा आतिथ्य सत्कार होना चाहिए। क्योंकि ये सभी लोगों को बिना किसी भेदभाव के लाभ पहुंचाते हैं।

और इसी मानवीय भाव के कारण, इसने समाज में महिलाओं को ऊंचा रुतबा और स्थान दिया है।

सबसे ऊपर सूफीवाद विविधता और बहुलवाद का उत्सव है। इसके बारे में हजरत निजामुद्दीन औलिया ने कहा था कि हर समाज का विश्वास और प्रार्थना करने का अपना ही तरीका होता है।

ये शब्द पाक पैगंबर को मिले संदेश को दर्शाते हैं कि धर्म में कोई बाध्यता नहीं है... और सभी समाजों के लिए हमने प्रार्थना के तरीके निश्चित किए हैं जिनका वे पालन करते हैं।

और यह कथन, हिन्दू धर्म के भक्तिवाद के उस कथन की आत्मा से भी मेल रखता है कि महासागर में हर तरफ से आने वाली नदियां मिलती हैं।

और बुल्ले शाह की बुद्धिमता : ईश्वर हर हृदय में घुला-मिला है।

यही मूल्य समय की मांग है।

यह प्रकृति का सत्य है। और हम इस ज्ञान को वन की विशाल विविधता देखते हैं जहाँ पूरा संतुलन और समन्वय होता है।

इसका संदेश विचारधाराओं और धर्मों की सीमाओं से परे है। यह एक आध्यात्मिक खोज है जो अपना मूल पवित्र पैगम्बर तथा इस्लाम के मूलभूत मूल्यों में पाता है। इस्लाम का वास्तविक अर्थ शांति है।

यह हमें यह भी याद दिलाता है कि जब हम अल्लाह के 99 नामों के बारे में सोचते हैं तो उनमें से कोई भी बल और हिंसा का संदेश नहीं देता है। अल्ला रहमान है और रहीम भी।

सूफीवाद शांति, क्षमा, सह-अस्तित्व और संतुलन का प्रतीक है। यह पूरे संसार में भाइचारे का संदेश देता है।

जिस तरह इस्लामिक सभ्यता का मुख्य केन्द्र भारत बना, उसी तरह हमारा देश सूफीवाद का एक सबसे जीवंत और प्रभावी केन्द्र के रूप में उभरा।

पाक कुरान और हदीस में मजबूत जड़ें जमाये हुए, सूफीवाद भारत में इस्लाम का चेहरा बना।

सूफीवाद भारत के खुलेपन और बहुलवाद में पनपा और यहाँ की पुरानी आध्यात्मिक परंपराओं से जुड़कर इसने अपनी एक भारतीय पहचान बनाई।

और इसने भारत की एक विशिष्ट इस्लामिक विरासत को स्वरूप देने में मदद की।

हम इस विरासत को कला, वास्तुकला और संस्कृति के क्षेत्र में देखते हैं जो हमारे देश और हमारे सामूहिक दैनिक जीवन के रूप का एक भाग है।

हम इसे भारत की आध्यात्मिक और बौद्धिक परंपरा में देखते हैं।

इसने भारत की समावेशी संस्कृति को और सशक्त किया जो विश्व के सांस्कृतिक पटल पर इस महान देश का एक बड़ा योगदान है।

बाबा फरीद की कविता और गुरु ग्रन्थ साहब में हमें एक आध्यात्मिक सम्बन्ध का अहसास होता है।

हमने करुणा देखी है, सूफी दरगाहों के लंगरों में और गांवों में स्थानीय पीरों की दरगाहों पर जहां सभी गरीब और भूखे, खींचे चले आते हैं ।

हिंदवी के शब्द सूफी खानखाओं (Khanqahs) में बोले जाते थे ।

भारतीय काव्य में सूफीवाद का बड़ा योगदान रहा है। भारतीय संगीत के विकास पर इसका गहरा प्रभाव है।

सूफी कवि और संगीतकार अमीर खुसरो से अधिक प्रभाव किसी दूसरे का नहीं है। आठ शताब्दी बाद भी उनका काव्य और संगीतमय प्रयोग, हिंदुस्तानी संगीत की आत्मा का हिस्सा हैं।

भारतीय संगीत की उन्होंने जितनी प्रशंसा की, उतनी किसी दूसरे ने नहीं की।

भारत के प्रति प्रेम उनके अतिरिक्त और कौन इतनी खूबसूरती से कर सकता था ।

“किन्तु, भारत सिर से पाँव तक स्वर्ग की तस्वीर है,

स्वर्ग के महल से उतरकर आदम आए,

तो उन्हें केवल भारत जैसे फलों के उपवन में ही भेजा जा सकता था।

यदि भारत स्वर्ग नहीं होता, तो यह स्वर्ग के पक्षी अर्थात् मोर का घर कैसे होता?

यह सूफीवाद की भावना, देश से प्रेम और राष्ट्र पर गर्व भारत में मुसलमानों को परिभाषित करता है।

वे हमारे देश की शांति, विविधता और आस्था की समानता की कालातीत संस्कृति को प्रतिबिंबित करते हैं।

वे भारत की लोकतांत्रिक परंपरा में हैं, देश में अपने स्थान के प्रति आश्वस्त हैं और राष्ट्र के भविष्य में विश्वास रखते हैं।

और सबसे बढ़कर वे भारत की उस इस्लामिक विरासत के मूल्यों से प्रभावित हैं जो इस्लाम के उच्चतम आदर्शों को कायम रखते हैं। और जिसने हमेशा आतंकवाद तथा उग्रवाद की ताकतों से इनकार किया है।

अब, जब वे विश्व के विभिन्न भागों में यात्रा करते हैं, वे हमारे राष्ट्र के आदर्शों और परंपराओं के दूत हैं।

एक राष्ट्र के रूप में हम औपनिवेशवाद के विरुद्ध खड़े हुए थे और हमने आजादी के लिए संघर्ष किया।

स्वतंत्रता की भोर में कुछ लोगों ने साथ छोड़ा; और मैं मानता हूँ कि यह उस समय की औपनिवेशिक राजनीति से भी जुड़ा हुआ था।

किन्तु, मौलाना आजाद जैसे हमारे महानतम नेताओं, मौलाना हुसैन मदानी जैसे महान अध्यात्मिक नेताओं और लाखों साधारण नागरिकों ने धर्म के आधार पर विभाजन के विचार को नकार दिया।

आज, भारत हमारे अनोखे विविध और एकजुट समाज की प्रत्येक विचारधारा वाले प्रत्येक सदस्य के संघर्षों, बलिदानों, वीरता, ज्ञान, कौशल, कला और के गर्व के कारण प्रगति पथ पर आगे बढ़ रहा है।

जिस तरह सितार के तार अलग-अलग ध्वनि पैदा करते हैं, और एक होकर सुंदर संगीत बना करते हैं।

यह भारत की आत्मा है। यह हमारे देश की शक्ति है।

हम सब, हिन्दू, मुस्लिम, सिख, इसाई, जैन, बुद्धवाद, पारसी, धर्म में विश्वास रखने वाले, और न रखने वाले, सभी भारत के अभिन्न अंग हैं।

एक समय सूफीवाद भारत में आया परंतु आज यह भारत से विश्व के अन्य देशों तक फैल गया है।

किन्तु, यह परंपरा भारत की ही नहीं, यह संपूर्ण दक्षिण एशिया की विरासत है।

इसलिए मैं इस क्षेत्र में अन्य देशों से यह अनुरोध करता हूँ कि वे हमारी इस गौरवशाली विरासत को पुनर्जीवित करें और आगे बढ़ाएं।

जब सूफीवाद के आध्यात्मिक प्रेम जिसमें आतंकवाद की हिंसक शक्ति नहीं होती, तब इसका प्रवाह सीमा को पार करता है, ऐसे में यह क्षेत्र अमीर खुसरो के कहे के मुताबिक धरती पर स्वर्ग होगा।

जैसे कि मैंने मुहावरे का उल्लेख करते हुए पहले कहा था : आतंकवाद हमें बांटता और बर्बाद करता है।

वास्तव में जब आतंकवाद और कट्टरवाद हमारे कालखंड में बहुत ज्यादा विध्वंसक शक्ति बन जाएं, सूफीवाद के संदेश वैश्विक स्तर पर प्रासंगिक हो जाते हैं।

पश्चिम एशिया में संघर्ष के केंद्र हैं, वहीं दूर के देशों के शहरों में शांति है। अफ्रीका के सुदूरवर्ती गांवों से लेकर हमारे अपने क्षेत्र के शहरों में भी शांति है, लेकिन आतंकवाद लगभग दैनिक हिसाब के खतरा बन गया है।

हर दिन खतरनाक खबरें और डरावनी तस्वीरें हमारे सामने आती हैं :

- स्कूल बेगुनाहों की कब्रगाहों में बदल रहे हैं;
- प्रार्थना करने वाली सभाएं जनाजे की शक्ति में बदल रही हैं;
- अजान करते नमाजी विस्फोट की आवाज में डूब रहे हैं;
- समुद्री किनारों पर खून, मॉल में नरसंहार और गलियों में खड़ी कारों में धमाके;
- उभरते शहर बनते खंडहर और तबाह बेशकीमती विरासतें;
- और आग और तूफानी समुद्रों के रास्ते लाखों शरणार्थियों, लाखों विस्थापितों, समूचे समुदायों का विस्थापन और ताबूतों को ढोते अभिभावक;

नये वादों और अवसरों की इस डिजिटल सदी में आतंक की पहुंच बढ़ रही है और हर साल इससे होने वाली क्षति भी बढ़ रही है।

इस सदी के आरंभ से दुनिया भर में हुए हजारों आतंकवादी हमलों में लाखों परिवार अपने प्रियजनों को खो चुके हैं।

अकेले पिछले ही साल में, मैं 2015 की बात कर रहा हूं, 90 से ज्यादा देशों को आतंकवादी हमलों का सामना करना पड़ा। सौ देशों में माता-पिता रोजाना पीड़ा के साथ जीते हैं कि सीरिया के जंग के मैदानों में वे अपने बच्चों को खो चुके हैं।

और वैश्विक रूप से सक्रिय विश्व में एक घटना बहुत से देशों के नागरिकों को प्रभावित करती है।

हर साल हम 100 बिलियन डॉलर से ज्यादा धनराशि दुनिया को आतंकवादियों से सुरक्षित बनाने पर खर्च करते हैं, यह राशि गरीबों का जीवन संवारने पर खर्च हो सकती थी।

इसके पूरे प्रभाव का आकलन सिर्फ आंकड़ों के बल पर नहीं किया जा सकता। यह हमारे जीने के अंदाज को बदल रहा है।

कुछ ऐसी ताकतें और गुट हैं, जो सरकार की नीति और मंशा के माध्यम हैं। कुछ अन्य भी हैं, जो भ्रामक विश्वास के कारण भर्ती किये गये हैं।

कुछ लोग ऐसे हैं, जिन्हें संगठित शिविरों में प्रशिक्षण दिया गया है। कुछ ऐसे हैं, जो सीमाहीन साइबर जगत में अपने लिए प्रेरणा तलाशते हैं।

आतंकवाद विविध प्रेरणाओं और कारणों का इस्तेमाल करता है, जिनमें से एक को भी उचित नहीं ठहराया जा सकता।

आतंकवादी उस धर्म को विकृत करते हैं, जिसके समर्थन का वह दावा करते हैं।

वे किसी अन्य स्थापन की बजाए, अपनी जमीन और अपने लोगों को ज्यादा नुकसान पहुंचाते हैं।

और वे सभी क्षेत्रों को खोंफ के साये में धकेल रहे हैं और दुनिया को कहीं ज्यादा असुरक्षित और हिंसक स्थान बना रहे हैं।

आतंकवाद के खिलाफ युद्ध किसी धर्म के खिलाफ टकराव नहीं है। ऐसा हो नहीं सकता।

ये मानवता के मूल्यों और अमानवीयता की ताकतों के बीच टकराव है।

इस संघर्ष को सिर्फ सैन्य, ,खुफिया अथवा कूटनीतिक तरीकों से नहीं लड़ा जा सकता।

यह एक ऐसी जंग भी है, जिसे हमारे मूल्यों की ताकत और धर्मों के वास्तविक संदेश के माध्यम से हमें हर हाल में जीतना होगा।

जैसा मैंने पहले कहा, हमें आतंकवाद और धर्म के बीच किसी भी संबंध को हर हाल में नकारना होगा। जो लोग धर्म के नाम पर आतंक फैलाते हैं, वे धर्म विरोधी हैं।

और हमें सूफीवाद के संदेश को फैलाना होगा, जो इस्लाम के सिद्धांतों और सर्वोच्च मानवीय मूल्यों पर अडिग है।

यह एक ऐसा कार्य है, जिसे देशों, समाजों, संतों, विद्वानों और परिवारों को हर हाल में करना होगा।

हालांकि मेरे लिए सूफीवाद का संदेश सिर्फ आतंकवाद से निपटने तक ही सीमित नहीं है।

मनुष्यों के प्रति सद्भाव, कल्याण, करुणा और प्रेम न्यायपूर्ण समाज की बुनियाद है।

मेरे मत 'सबका साथ, सबका विकास' के पीछे यही सिद्धांत है।

और ये मूल्य हमारे समाजों की विविधता को संरक्षित और पोषित करने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

विविधता किसी भी समाज की समृद्धि की प्रकृति और स्रोत की वास्तविक सच्चाई है और यह वैमनस्य का कारण नहीं बननी चाहिए।

हमें समावेशी और शांतिपूर्ण समाज का निर्माण करने के लिए, सिर्फ संवैधानिक प्रावधानों अथवा कानूनी सुरक्षा की ही नहीं, बल्कि सामाजिक मूल्यों की भी आवश्यकता है, - जहां सभी जुड़ाव महसूस करें, अपने अधिकारों के प्रति निश्चित हों तथा अपने भविष्य को लेकर आश्वस्त हों।

यह विश्व में भारी बदलाव और परिवर्तन का दौर भी है। पिछली सदी के मध्य में इतिहास में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ। एक नई विश्व व्यवस्था का उदय हुआ। बहुत से नये देशों का जन्म हुआ।

नई सदी के प्रारंभ में हम फिर से बदलाव के एक अन्य मोड़ पर हैं, जिसका पैमाना मानव इतिहास में विरले ही देखा गया है।

दुनिया के कई हिस्सों में भविष्य को लेकर तथा देश व समाज के नाते हम इससे कैसे निपटें, इसको लेकर अनिश्चितता है।

यह एक ऐसा दौर है, जो निश्चित रूप से हिंसा और संघर्षों के प्रति बहुत असुरक्षित है।

विश्व समुदाय को पहले से ज्यादा सतर्क रहना होगा और अंधकार की ताकतों का मुकाबला मानवीय मूल्यों की दिव्य कांति से करना होगा।

तो, आइये हम पवित्र कुरान की शिक्षाओं को याद करें कि अगर कोई किसी बेगुनाह की जान लेगा, तो वह समस्त लोगों की जान लेने के बराबर होगा, अगर कोई एक जिंदगी बचाएगा, तो वह समस्त, जिन्दमगियों को बचाने जैसा होगा।

आइए, हम हजरत मोइनुद्दीन चिश्ती के संदेश से प्रेरणा ग्रहण करें,

अपने आध्यात्मिक प्रकाश से वैमनस्य और युद्ध के बादलों को छांटिए तथा लोगों के बीच सद्भावना, शांति और सद्भाव फैलाइए।

आइए, हम सूफी कवि जलालुद्दीन रूमी के शब्दों में अपरिमित मानवता को याद करें, 'सभी इंसानों के चेहरों को बिना किसी पूर्वाग्रह के स्वयं के चेहरे में समाहित करें।'

आइए, हम बाइबल के संदेशों को भी जिएं, जो हमसे अच्छाई, शांति प्राप्त करने और उसका पालन करने का आह्वान करते हैं।

और कबीर की एकात्मिकता में कहा गया है कि नदी और लहरें एक हैं।

और गुरुनानक देव जी की प्रार्थना को याद करें, कि ईश्वर दुनिया में सभी खुशहाल हों और शांति में रहें।

आइए, हम मतभेदों के खिलाफ स्वारमी विवेकानंद की अपील से प्रेरणा ग्रहण करें और सभी धर्मों के लोग विवाद का नहीं, बल्कि सद्भाव का बैनर उठाये।

हम अहिंसा का संदेश देने वाले भगवान बुद्ध और महावीर के चिरस्थाकई संदेश को भी दोहरायें।

और इस मंच से, गांधी की,

और हमेशा ओम शांति, शांति, शांति, विश्व में शांति से समाप्त होने वाली कालातीत प्रार्थनाओं की इस धरती से,

आइए, हम दुनिया को ये संदेश भेजे :

- सद्भाव और मानवता के मधुर गीत का
- विविधता को गले लगाने और एकात्मिकता की भावना का
- करुणा और उदारता के साथ सेवा का,
- आतंकवाद के खिलाफ संकल्प का, उग्रवाद को नकारने का
- और शांति कायम करने के दृढ़ संकल्प का

आइए, हम हिंसा की ताकतों को अपने प्रेम और सार्वभौमिक मानव मूल्यों की उदारता से चुनौती दें।

और आखिर में, आइए, हम आशा के दीप जलाएं और इस दुनिया को शांति की बगिया में तबदील करें।

यहां पधारने के लिए आपका धन्यवाद, जिसके लिए आप अडिग हैं, उसके लिए आपका धन्यवाद, बेहतर जगत का निर्माण करने में आपके द्वारा निभायी जा रही भूमिका के लिए आपका धन्यवाद। बहुत बहुत धन्यवाद।

आरके/केटी/एजी/केजे/सीएस//जीआर-1544 (Release ID :138124)

**Press Information Bureau
Government of India
Prime Minister's Office**

11-March-2016 20:39 IST

Text of PM's speech at World Culture Festival

परम पूज्य श्री श्री रविशंकर जीसभी वरिष्ठ महानुभाव ,

मैं भारत की धरती पर आप सबका हृदय से स्वागत करता हूँ। भारत इतनी विविधताओं से भरा हुआ है, विश्व को देने के लिए भारत के पास क्या कुछ नहीं है। दुनिया सिर्फ आर्थिक हितों से ही जुड़ी हुई है ऐसा नहीं है, दुनिया मानवीय मूल्यों से भी जुड़ सकती है और जोड़ा जा सकता है और जोड़ना चाहिए भी।

भारत के पास वो सांस्कृतिक विरासत है, वो सांस्कृतिक अधिष्ठान है जिसकी तलाश दुनिया को है। हम दुनिया की उन आवश्यकताओं को कुछ न कुछ मात्रा में, किसी न किसी रूप में हम परिपूर्ण कर सकते हैं। लेकिन ये तब हो सकता है जब हमें हमारी इस महान विरासत पर गर्व हो, अभिमान हो।

अगर हम ही अपने आप को कोसते रहेंगे , हमारी हर चीज की हम बुराई करते रहेंगे तो दुनिया हमारी ओर क्यों देखेगी?

मैं श्रीमान श्री श्री रविशंकर जी का इस बात के लिए अभिनंदन करता हूँ कि 35 साल से छोटे से कार्यकाल का ये मिशन दुनिया के 150 से ज्यादा देशों में इसी ताकत के भरोसे अब फैल चुका है, उन देशों को अपना कर चुका है। आर्ट ऑफ लिविंग के माध्यम से विश्व को भारत की एक अलग पहचान कराने में इस कार्य ने बहुत बड़ा योगदान दिया है।

मैं अभी कुछ समय पहले जब मंगोलिया गया था। मैं हैरान था मंगोलिया में एक एस्टेडियम में आर्ट ऑफ लिविंग के सभी बंधुओं के द्वारा मेरा reception रखा गया था। उसमें भारतीय तो बहुत कम थे। पूरा स्टेडियम मंगोलियन नागरिकों से भरा हुआ था और उन्होंने भारत का तिरंगा झंडा हाथ में लेकर के जिस प्रकार से भारतीय संस्कृति का परिचय करवाया, यह अपने आप में बहुत ही प्रेरक था। जहां पर राजशक्ति और राजसत्ता की पहुंच नहीं होती है, ऐसे स्थानों पर भी अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में soft power एक बहुत बड़ी अहम भूमिका अदा करता है।

आज हम एक ऐसे कुंभ मेले का दर्शन कर रहे हैं। यह कला का कुंभ मेला है। भारत के पास ऐसी समृद्धि थी कि यहां कला पूर्णतया विकसित हुई थी। यह धरती ऐसी है जहां हर पहर का संगीत अलग है। सुबह का संगीत अलग है तो शाम का अलग है और इसलिए बाजार में संगीत की दुनिया को खोजने जाएंगे, तन को डुलाने वाले संगीत से तो बाजार भरा पड़ा है लेकिन मन को डुलाने वाला संगीत तो हिन्दुस्तान में भरा है और दुनिया अब मन को डुलाना चाहती है और यही संगीत की साधना है जो दुनिया के मन को डुला सकती है।

जब कला के द्वारा किसी देश को देखा जाता है तो इस देश की अंतर्भूत ताकत को पहचाना जाता है। आज विश्व भारत की कला की शक्ति और कला साधना सदियों से करते आए हुए लोग आज विश्व को एक अनमोल भेंट दे रहे हैं। ऐसे अवसर पर यह समारोह प्रकृति ने भी कसौटी करी लेकिन यही तो आर्ट ऑफ लिविंग है। सुविधा और सरलता के बीच जीने के लिए जी सकते हैं, उसमें आर्ट नहीं होती है। जब अपने इरादे को लेकर के चलते हैं तब आर्ट ऑफ लिविंग चाहिए। जब अपने सपनों को लेकर के चलते हैं तब आर्ट ऑफ लिविंग चाहिए। जब संकटों से जूझते हैं तब आर्ट ऑफ लिविंग चाहिए। जब अपने लिए नहीं औरों के लिए जीते हैं तब आर्ट ऑफ लिविंग चाहिए। जब स्व से समस्ति की यात्रा करते हैं तब आर्ट ऑफ लिविंग चाहिए। जब मैं से छूटकर के हम की ओर चलते हैं तब आर्ट ऑफ लिविंग चाहिए।

हम वो लोग जो अहम् ब्रह्मास्मि से शुरू करते हैं और वसुधैव कुटुम्बकम् की यात्रा करते हैं यह आर्ट ऑफ लिविंग है। हम वो लोग हैं जिन्होंने उपनिषद् से उपग्रह तक की यात्राएं की हैं और यही जीवन जीने की कला हमारे ऋषियों ने, मुनियों ने, ज्ञानियों ने, तपस्वियों ने हमें विरासत में दी है। संकटों से जूझ रहा मानव, व्यक्तिगत जीवन में समस्याओं से जूझ रहा मानव... भारत की पारिवारिक समस्या, परिवार family, यह ऐसी धरोहर हमारी दुनिया जब जानती है उसको अचरज होता है। हमने यह कला सीखी है, सदियों से सीखी है। लेकिन अगर उसमें खरोच आ रही है तो उसको फिर से ठीक-ठाक करने की आवश्यकता है।

मैं श्री श्री रविशंकर जी के माध्यम से यह जो काम चल रहा है इसका अभिनंदन करता हूं, बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूं और सभी कलाकारों को, सभी साधकों को, सभी आर्ट ऑफ लिविंग के कार्यकर्ताओं को इस भव्य समारोह के द्वारा भारत की विशिष्ट छवि विश्व के सामने पहुंचाने के लिए बहुत-बहुत बधाई देता हूं।

धन्यवाद।

हिमांशु सिंह/ मनीषा/ लक्ष्मी

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

14-मई-2016 16:33 IST

उज्जैन में सिंहस्थ के सार्वभौमिक संदेश पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रधानमंत्री के संबोधन का मूल पाठ

हम लोगों का एक स्वभाव दोष रहा है, एक समाज के नाते कि हम अपने आपको हमेशा परिस्थितियों के परे समझते हैं। हम उस सिद्धांतों में पले-बढ़े हैं कि जहां शरीर तो आता और जाता है। आत्मा के अमरत्व के साथ जुड़े हुए हम लोग हैं और उसके कारण हमारी आत्मा की सोच न हमें काल से बंधने देती है, न हमें काल का गुलाम बनने देती है लेकिन उसके कारण एक ऐसी स्थिति पैदा हुई कि हमारी इस महान परंपरा, ये हजारों साल पुरानी संस्कृति, इसके कई पहलू, वो परंपराएँ किस सामाजिक संदर्भ में शुरू हुई, किस काल के गर्भ में पैदा हुई, किस विचार मंथन में से बीजारोपण हुआ, वो करीब-करीब अलब्ध है और उसके कारण ये कुंभ मेले की परंपरा कैसे प्रारंभ हुई होगी उसके विषय में अनेक प्रकार के विभिन्न मत प्रचलित हैं, कालखंड भी बड़ा, बहुत बड़ा अंतराल वाला है।

कोई कहेगा हजार साल पहले, कोई कहेगा 2 हजार साल पहले लेकिन इतना निश्चित है कि ये परंपरा मानव जीवन की सांस्कृतिक यात्रा की पुरातन व्यवस्थाओं में से एक है। मैं अपने तरीके से जब सोचता हूँ तो मुझे लगता है कि कुंभ का मेला, वैसे 12 साल में एक बार होता है और नासिक हो, उज्जैन हो, हरिद्वार हो वहाँ 3 साल में एक बार होता है प्रयागराज में 12 साल में एक बार होता है। उस कालखंड को हम देखें तो मुझे लगता है कि एक प्रकार से ये विशाल भारत को अपने में समेटने का ये प्रयास ये कुंभ मेले के द्वारा होता था। मैं तर्क से और अनुमान से कह सकता हूँ कि समाज वेदता, संत-महंत, ऋषि, मुनि जो हर पल समाज के सुख-दुख की चर्चा और चिंता करते थे। समाज के भाग्य और भविष्य के लिए नई-नई विधाओं का अन्वेषण करते थे, Innovation करते थे। इन्हें वे हमारे ऋषि जहाँ भी थे वे बाह्य जगत का भी रिसर्च करते थे और अंतर यात्रा को भी खोजने का प्रयास करते थे तो ये प्रक्रिया निरंतर चलती रही, सदियों तक चलती रही, हर पीढ़ी दर पीढ़ी चलती रही लेकिन संस्कार संक्रमण का काम विचारों के संकलन का काम कालानुरूप विचारों को तराजू पर तौलने की परंपरा ये सारी बातें इस युग की परंपरा में समहित थी, समाहित थी।

एक बार प्रयागराज के कुंभ मेले में बैठते थे, एक Final decision लिया जाता था सबके द्वारा मिलकर के कि पिछले 12 साल में समाज यहाँ-यहाँ गया, यहाँ पहुँचा। अब अगले 12 साल के लिए समाज के लिए दिशा क्या होगी, समाज की कार्यशैली क्या होगी किन चीजों की प्राथमिकता होगी और जब कुंभ से जाते थे तो लोग उस एजेंडा को लेकर के अपने-अपने स्थान पर पहुँचते थे और हर तीन साल के बाद जबकि कभी नासिक में, कभी उज्जैन में, कभी हरिद्वार में कुंभ का मेला लगता था तो उसका mid-term appraisal होता था कि भई प्रयागराज में जो निर्णय हम करके गए थे तीन साल में क्या अनुभव आया और हिंदुस्तान के कोने-कोने से लोग आते थे।

30 दिन तक एक ही स्थान पर रहकर के समाज की गतिविधियों, समाज की आवश्यकताएं, बदलता हुआ युग, उसका चिंतन-मनन करके उसमें फिर एक बार 3 साल का करणीय एजेंडा तय होता था। In the light of main Mahakumbh प्रयागराज में होता था और फिर 3 साल के बाद दूसरा जब कुंभ लगता था तो फिर से Review होता था। एक अद्भुत सामाजिक रचना थी ये लेकिन धीरे-धीरे अनुभव ये आता है कि परंपरा तो रह जाती है, प्राण खो जाता है। हमारे यहाँ भी अनुभव ये आया कि परंपरा तो रह गई लेकिन समय का अभाव है, 30 दिन कौन रहेगा, 45 दिन कौन रहेगा। आओ भाई 15 मिनट जरा डुबकी लगा दें, पाप धुल जाए, पुण्य कमा ले और चले जाए।

ऐसे जैसे बदलाव आय उसमें से उज्जैन के इस कुंभ में संतों के आशीर्वाद से एक नया प्रयास प्रारंभ हुआ है और ये नया प्रयास एक प्रकार से उस सदियों पुरानी व्यवस्था का ही एक Modern edition है और जिसमें वर्तमान समझ में, वैश्विक संदर्भ में मानव जाति के लिए क्या चुनौतियाँ हैं, मानव कल्याण के मार्ग क्या हो सकते हैं। बदलते हुए युग में काल बाह्य चीजों को छोड़ने की हिम्मत कैसे आए, पुरानी चीजों को बोझ लेकर के चलकर के आदमी थक जाता है। उन पुरानी काल बाह्य चीजों को छोड़कर के एक नए विश्वास, नई ताजगी के साथ कैसे आगे बढ़ जाए, उसका एक छोटा सा प्रयास इस विचार महाकुंभ के अंदर हुआ है।

जो 51 बिंदु, अमृत बिंदु इसमें से फलित हुए हैं क्योंकि ये एक दिन का समारोह नहीं है। जैसे शिवराज जी ने बताया। देश और दुनिया के इस विषय के जानकार लोगों ने 2 साल मंथन किया है, सालभर विचार-विमर्श किया है और पिछले 3 दिन

से इसी पवित्र अवसर पर ऋषियों, मुनियों, संतों की परंपरा को निभाने वाले महान संतों के सानिध्य में इसका चिंतन-मनन हुआ है और उसमें से ये 51 अमृत बिंदु समाज के लिए प्रस्तुत किए गए हैं। मैं नहीं मानता हूं कि हम राजनेताओं के लिए इस बात को लोगों के गले उतारना हमारे बस की बात है। हम नहीं मानते हैं लेकिन हम इतना जरूर मानते हैं कि समाज के लिए निस्वार्थ भाव से काम करने वाले लोग चाहे वो गेरुए वस्त्र में हो या न हो लेकिन त्याग और तपस्था के अधिष्ठान पर जीवन जीते हैं। चाहे एक वैज्ञानिक अपनी laboratory में खपा हुआ हो, चाहे एक किसान अपने खेत में खपा हुआ हो, चाहे एक मजदूर अपना पसीना बहा रहा है, चाहे एक संत समाज का मार्गदर्शन करता हो ये सारी शक्तियां, एक दिशा में चल पड़ सकती हैं तो कितना बड़ा परिवर्तन ला सकती हैं और उस दिशा में ये 51 अमृत बिंदु जो हैं आने वाले दिनों में भारत के जनमानस को और वैश्विक जनसमूह को भारत किस प्रकार से सोच सकता है और राजनीतिक मंच पर से किस प्रकार के विचार प्रभाग समयानुकूल हो सकते हैं इसकी चर्चा अगर आने वाले दिनों में चलेगी, तो मैं समझता हूं कि ये प्रयास सार्थक होगा।

हम वो लोग हैं, जहां हमारी छोटी-छोटी चीज बड़ी समझने जैसी है। हम उस संस्कार सरिता से निकले हुए लोग हैं। जहां एक भिक्षुक भी भिक्षा मांगने के लिए जाता है, तो भी उसके मिहिल मुंह से निकलता है 'जो दे उसका भी भला जो न दे उसका भी भला'। ये छोटी बात नहीं है। ये एक वो संस्कार परम्परा का परिणाम है कि एक भिक्षुक मुंह से भी शब्द निकलता है 'देगा उसका भी भला जो नहीं देगा उसका भी भला'। यानी मूल चिंतन तत्वभाव यह है कि सबका भला हो सबका कल्याण हो। ये हर प्रकार से हमारी रगों में भरा पड़ा है। हमी तो लोग हैं जिनको सिखाया गया है। तेन ततेन भुंजीथा। क्या तर के ही भोगेगा ये अप्रतीम आनन्द होता है। ये हमारी रगों में भरा पड़ा है। जो हमारी रगों में है, वो क्या हमारे जीवन आचरण से अछूता तो नहीं हो रहा है। इतनी महान परम्परा को कहीं हम खो तो नहीं दे रहे हैं। लेकिन कभी उसको जगजोड़ा किया जाए कि अनुभव आता है कि नहीं आज भी ये सामर्थ्य हमारे देश में पड़ा है।

किसी समय इस देश के प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री ने देश को आह्वान किया था कि सप्ताह में एक दिन शाम का खाना छोड़ दीजिए। देश को अन्न की जरूरत है। और इस देश के कोटी-कोटी लोगों ने तेन त्यक्तेन भुंजीथा इसको अपने जीवन में चरितार्थ करके, करके दिखाया था। और कुछ पीढ़ी तो लोग अभी भी जिन्दा हैं। जो लालबहादुर शास्त्री ने कहा था। सप्ताह में एक दिन खाना नहीं खाते हैं। ऐसे लोग आज भी हैं। तेन त्यक्तेन भुंजीथा का मंत्र हमारी रगों में पला है। पिछले दिनों में ऐसे ही बातों-बातों में मैंने पिछले मार्च महीने में देश के लोगों के सामने एक विषय रखा था। ऐसे ही रखा था। रखते समय मैंने भी नहीं सोचा था कि मेरे देश के जनसामान्य का मन इतनी ऊंचाईयों से भरा पड़ा है। कभी-कभी लगता है कि हम उन ऊंचाईयों को पहुंचने में कम पड़ जाते हैं। मैंने इतना ही कहा था। अगर आप सम्पन्न हैं, आप समर्थ हैं, तो आप रसोई गैस की सब्सिडी क्या जरूरत है छोड़ दीजिये न। हजार-पंद्रह सौ रुपये में क्या रखा है। इतना ही मैंने कहा था। और आज मैं मेरे देश के एक करोड़ से ज्यादा परिवारों के सामने सर झुका कर कहना चाहता हूं और दुनिया के सामने कहना चाहता हूं। एक करोड़ से ज्यादा परिवारों ने अपनी गैस सब्सिडी छोड़ दी। तेन त्यक्तेन भुंजीथा । और उसका परिणाम क्या है। परिणाम शासन व्यवस्था पर भी सीधा होता है। हमारे मन में विचार आया कि एक करोड़ परिवार गैस सिलेंडर की सब्सिडी छोड़ रहे हैं तो इसका हक सरकार की तिजोरी में भरने के लिये नहीं बनता है।

ये फिर से गरीब के घर में जाना चाहिए। जो मां लकड़ी का चूल्हा जला कर के एक दिन में चार सौ सिगरेट जितना धुआं अपने शरीर में ले जाती है। उस मां को लकड़ी के चूल्हे से मुक्त करा के रसोई गैस देना चाहिए और उसी में से संकल्प निकला कि तीन साल में पांच करोड़ परिवारों को गैस सिलेंडर दे कर के उनको इस धुएं वाले चूल्हे से मुक्ति दिला देंगे।

यहाँ एक चर्चा में पर्यावरण का मुद्दा है। मैं समझता हूं पांच करोड़ परिवारों में लकड़ी का चूल्हा न जलना ये जंगलों को भी बचाएगा, ये कार्बन को भी कम करेगा और हमारी माताओं को गरीब माताओं के स्वास्थ्य में भी परिवर्तन आएगा। यहां पर नारी की एम्पावरमेंट की बात हुई नारी की dignity की बात हुई है। ये गैस का चूल्हा उसकी dignity को कायम करता है। उसकी स्वास्थ्य की चिंता करता है और इस लिए मैं कहता हूं - तेन त्यक्तेन भुंजीथा । इस मंत्र में अगर हम भरोसा करें। सामान्य मानव को हम इसका विश्वास दिला दें तो हम किस प्रकार का परिवर्तन प्राप्त कर सकते हैं। ये अनुभव कर रहे हैं।

हमारा देश, मैं नहीं मानता हूं हमारे शास्त्रों में ऐसी कोई चीज है, जिसके कारण हम भटक जाएं। ये हमलोग हैं कि हमारी मतलब की चीजें उठाते रहते हैं और पूर्ण रूप से चीजों को देखने का स्वभाव छोड़ दिया है। हमारे यहां कहा गया है - नर करनी करे तो नारायण हो जाए - और ये हमारे ऋषियों ने मुनियों ने कहा है। क्या कभी उन्होंने ये कहा है कि नर भक्ति करे तो नारायण हो जाए। नहीं कहा है। क्या कभी उन्होंने ये कहा है कि नर कथा करे तो नारायण हो जाए। नहीं कहा। संतों ने भी कहा है: नर करनी करे तो नारायण हो जाए और इसीलिए ये 51 अमृत बिन्दु हमारे सामने हैं। उसका एक संदेश यही है कि नर करनी करे तो नारायण हो जाए। और इसलिए हम करनी से बाध्य होने चाहिए और तभी तो अर्जुन को भी यही तो कहा था योगः कर्मसु कौशलम्। यही हमारा योग है, जिसमें कर्म की महानता को स्वीकार किया गया है

और इसलिए इस पवित्र कार्य के अवसर पर हम उस विचार प्रवाह को फिर से एक बार पुनर्जीवित कर सकते हैं क्या तमसो मा ज्योतिर्गमय। ये विचार छोटा नहीं है। और प्रकाश कौनसा वो कौनसी ज्योति ये ज्योति ज्ञान की है, ज्योति प्रकाश की है। और हमी तो लोग हैं जो कहते हैं कि ज्ञान को न पूरब होता है न पश्चिम होता है। ज्ञान को न बीती हुई कल होती है, ज्ञान को न आने वाली कल होती है। ज्ञान अजरा अमर होता है और हर काल में उपकारक होता है। ये हमारी परम्परा रही है और इसलिए विश्व में जो भी श्रेष्ठ है इसको लेना, पाना, पचाना internalize करना ये हमलोगों को सदियों से आदत रही है।

हम एक ऐसे समाज के लोग हैं। जहां विविधताएं भी हैं और कभी-कभी बाहर वाले व्यक्ति को conflict भी नजर आता है। लेकिन दुनिया जो conflict management को लेकर के इतनी सैमिनार कर रही है, लेकिन रास्ते नहीं मिल रहे। हमलोग हैं inherent conflict management का हमें सिखाया गया है। वरना दो extreme हम कभी भी नहीं सोच सकते थे। हम भगवान राम की पूजा करते हैं, जिन्होंने पिता की आज्ञा का पालन किया था। और हम वो लोग हैं, जो प्रह्लाद की भी पूजा करते हैं, जिसने पिता की आज्ञा की अवमानना की थी। इतना बड़ा conflict, एक वो महापुरुष जिसने पिता की आज्ञा को माना वो भी हमारे पूजनीय और एक दूसरा महापुरुष जिसने पिता की आज्ञा का अनादर किया वो भी हमारा महापुरुष।

हम वो लोग हैं जिन्होंने माता सीता को प्रणाम करते हैं। जिसने पति और ससुर के इच्छा के अनुसार अपना जीवन दे दिया। और उसी प्रकार से हम उस मीरा की भी भक्ति करते हैं जिसने पति की आज्ञा की अवज्ञा कर दी थी। यानी हम किस प्रकार के conflict management को जानने वाले लोग हैं। ये हमारी स्थिति का कारण क्या है और कारण ये है कि हम हठबाधिता से बंधे हुए लोग नहीं हैं। हम दर्शन के जुड़े हुए लोग हैं। और दर्शन, दर्शन तपी तपाईं विचारों की प्रक्रिया और जीवन शैली में से निचोड़ के रूप में निकलता रहता है जो समयानुक्रम उसका विस्तार होता जाता है। उसका एक व्यापक रूप समय में आता है। और इसलिए हम उस दर्शन की परम्पराओं से निकले हुए लोग हैं जो दर्शन आज भी हमें इस जीवन को जीने के लिए प्रेरणा देता है।

यहां पर विचार मंथन में एक विषय यह भी रहा - Values, Values कैसे बदलते हैं। आज दुनिया में अगर आप में से किसी को अध्ययन करने का स्वभाव हो तो अध्ययन करके देखिये। दुनिया के समृद्ध-समृद्ध देश जब वो चुनाव के मैदान में जाते हैं, तो वहां के राजनीतिक दल, वहां के राजनेता उनके चुनाव में एक बात बार-बार उल्लेख करते हैं। और वो कहते हैं - हम हमारे देश में families values को पुनःप्रस्थापित करेंगे। पूरा विश्व, परिवार संस्था, पारिवारिक जीवन के मूल्य उसका महत्व बहुत अच्छी तरह समझने लगा है। हम उसमें पले बड़े हैं। इसलिये कभी उसमें छोटी सी भी इधर-उधर हो जाता है तो पता नहीं चलता है कि कितना बड़ा नुकसान कर रहे हैं। लेकिन हमारे सामने चुनौती है कि values और values यानी वो विषय नहीं है कि आपकी मान्यता और मेरी मान्यता। जो समय की कसौटी पर कस कर के खरे उतरे हैं, वही तो वैल्यूज होते हैं। और इसलिए हर समाज के अपने वैल्यूज होते हैं। उन values के प्रति हम जागरूक कैसे हों। इन दिनों में देखता हूं। अज्ञान के कारण कहो, या तो inferiority complex के कारण कहो, जब कोई बड़ा संकट आ जाता है, बड़ा विवाद आ जाता है तो हम ज्यादा से ज्यादा ये कह कर भाग जाते हैं कि ये तो हमारी परम्परा है। आज दुनिया इस प्रकार की बातों को मानने के लिए नहीं है।

हमने वैज्ञानिक आधार पर अपनी बातों को दुनिया के सामने रखना पड़ेगा। और इसलिये यही तो कुम्भ के काल में ये विचार-विमर्श आवश्यकता है, जो हमारे मूल्यों की, हमारे विचारों की धार निकाल सके।

हम जानते हैं कभी-कभी जिनके मुंह से परम्परा की बात सुनते हैं। यही देश ये मान्यता से ग्रस्त था कि हमारे ऋषियों ने, मुनियों ने संतों ने समुद्र पार नहीं करना चाहिए। विदेश नहीं जाना चाहिए। ये हमलोग मानते थे। और एक समय था, जब समुद्र पार करना बुरा माना जाता था। वो भी एक परम्परा थी लेकिन काल बदल गया। वही संत अगर आज विश्व भ्रमण करते हैं, सातों समुद्र पार करके जाते हैं। परम्पराएं उनके लिए कोई रुकावट नहीं बनती हैं, तो और चीजों में परम्पराएं क्यों रुकावट बननी चाहिए। ये पुनर्विचार करने की आवश्यकता है और इसलिए परम्पराओं के नाम पर अवैज्ञानिक तरीके से बदले हुए युग को, बदले हुए समाज को मूल्य के स्थान पर जीवित रखते हुए उसको मोड़ना, बदलना दिशा देना ये हम सबका कर्तव्य बनता है, हम सबका दायित्व बनता है। और उस दायित्व को अगर हम निभाते हैं तो मुझे विश्वास है कि हम समस्याओं का समाधान खोज सकते हैं।

आज विश्व दो संकटों से गुजर रहा है। एक तरफ ग्लोबल वार्मिंग दूसरी तरफ आतंकवाद। क्या उपाय है इसका। आखिर इसके मूल पर कौन सी चीजें पड़ी हैं। holier than thou तेरे रास्ते से मेरा रास्ता ज्यादा सही है। यही तो भाव है जो conflict की ओर हमें घसीटता ले चला जा रहा है। विस्तारवाद यही तो है जो हमें conflict की ओर ले जा रहा है। युग बदल चुका है। विस्तारवाद समस्याओं का समाधान नहीं है। हम हॉरीजॉन्टल की तरह ही जाएं समस्याओं का समाधान नहीं है। हमें वर्टिकल जाने की आवश्यकता है अपने भीतर को ऊपर उठाने की आवश्यकता है, व्यवस्थाओं को आधुनिक करने की

आवश्यकता है। नई ऊंचाइयों को पार करने के लिए उन मूल्यों को स्वीकार करने की आवश्यकता होती है और इसलिये समय रहते हुए मूलभूत चिंतन के प्रकाश में, समय के संदर्भ में आवश्यकताओं की उपज के रूप में नई विधाओं को जन्म देना होगा। वेद सब कुछ है लेकिन उसके बाद भी हमी लोग हैं जिन्होंने वेद के प्रकाश में उपनिषदों का निर्माण किया। उपनिषद में बहुत कुछ है। लेकिन समय रहते हमने भी वेद के प्रकाश में उपनिषद, उपनिषद के प्रकाश में समृति और सृति को जन्म दिया और समृति और सृतियां, जो उस कालखंड को दिशा देती है, उसके आधार पर हम चलें। आज हम में किसी को वेद के नाम भी मालूम नहीं होंगे। लेकिन वेद के प्रकाश में उपनिषद, उपनिषद के प्रकाश में श्रुति और समृति वो आज भी हमें दिशा देती हैं। समय की मांग है कि अगर 21वीं सदी में मानव जाति का कल्याण करना है तो चाहे वेद के प्रकाश में उपनिषद रही हो, उपनिषद के प्रकाश में समृति और श्रुति रही हो, तो समृति और श्रुति के प्रकाश में 21वीं सदी के मानव के कल्याण के लिए किन चीजों की जरूरत है ये 51 अमृत बिन्दु शायद पूर्णतयः न हो कुछ कमियां उसमें भी हो सकती हैं। क्या हम कुम्भ के मेले में ऐसे अमृत बिन्दु निकाल कर के आ सकते हैं।

मुझे विश्वास है कि हमारा इतना बड़ा समागम। कभी - कभी मुझे लगता है, दुनिया हमें कहती है कि हम बहुत ही unorganised लोग हैं। बड़े ही विचित्र प्रकार का जीवन जीने वाले बाहर वालों के नजर में हमें देखते हैं। लेकिन हमें अपनी बात दुनिया के सामने सही तरीके से रखनी आती नहीं है। और जिनको रखने की जिम्मेवारी है और जिन्होंने इस प्रकार के काम को अपना प्रोफेशन स्वीकार किया है। वे भी समाज का जैसा स्वभाव बना है शॉर्टकट पर चले जाते हैं। हमने देखा है कुम्भ मेला यानी एक ही पहचान बना दी गई है नागा साधु। उनकी फोटो निकालना, उनका प्रचार करना, उनका प्रदर्शन के लिए जाना इसीके आसपास उसको सीमित कर दिया गया है। क्या दुनिया को हम गर्व के साथ कह सकते हैं कि हमारे देश के लोगों की कितनी बड़ी organizing capacity है। क्या ये कुम्भ मेले का कोई सर्कुलर निकला था क्या। निमंत्रण कार्ड गया था क्या।

हिन्दुस्तान के हर कोने में दुनिया में रहते हुए भारतीय मूल के लोगों को कोई इनविटेशन कार्ड गया था क्या। कोई फाइवस्टार होटलों का बुकिंग था क्या। एक सिपरा मां नदी के किनारे पर उसकी गोद में हर दिन यूरोप के किसी छोटे देश की जनसंख्या जितने लोग आते हों, 30 दिन तक आते हों। जब प्रयागराज में कुंभ का मेला हो तब गंगा मैया के किनारे पर यूरोप का एकाध देश daily इकट्ठा होता हो, रोज नए लोग आते हों और कोई भी संकट न आता हो, ये management की दुनिया की सबसे बड़ी घटना है लेकिन हम भारत का branding करने के लिए इस ताकत का परिचय नहीं करवा रहे हैं।

मैं कभी-कभी कहता हूं हमारे हिंदुस्तान का चुनाव दुनिया के लिए अजूबा है कि इतना बड़ा देश दुनिया के कई देशों से ज्यादा वोटर और हमारा Election Commission आधुनिक Technology का उपयोग करते हुए सुचारु रूप से पूरा चुनाव प्रबंधन करता है। विश्व के लिए, प्रबंधन के लिए ये सबसे बड़ा case study है, सबसे बड़ा case study है। मैं तो दुनिया की बड़ी-बड़ी Universities को कहता हूं कि हमारे इस कुंभ मेले की management को भी एक case study के रूप में दुनिया की Universities को study करना चाहिए।

हमने अपने वैश्विक रूप में अपने आप को प्रस्तुत करने के लिए दुनिया को जो भाषा समझती है, उस भाषा में रखने की आदत भी समय की मांग है, हम अपनी ही बात को अपने ही तरीके से कहते रहेंगे तो दुनिया के गले नहीं उतरेगी। विश्व जिस बात को जिस भाषा में समझता है, जिस तर्क से समझता है, जिस आधारों के आधार पर समझ पाता है, वो समझाने का प्रयास इस चिंतन-मनन के द्वारा तय करना पड़ेगा। ये जब हम करते हैं तो मुझे विश्वास है, इस महान देश की ये सदियों पुरानी विरासत वो सामाजिक चेतना का कारण बन सकती है, युवा पीढ़ी के आकर्षण का कारण बन सकती है और मैं जो 51 बिंदु हैं उसके बाहर एक बात मैं सभी अखाड़े के अधिष्ठाओं को, सभी परंपराओं से संत-महात्माओं को मैं आज एक निवेदन करना चाहता हूं, प्रार्थना करना चाहता हूं। क्या यहां से जाने के बाद हम सभी अपनी परंपराओं के अंदर एक सप्ताह का विचार कुंभ हर वर्ष अपने भक्तों के बीच कर सकते हैं क्या।

मोक्ष की बातें करें, जरूर करें लेकिन एक सप्ताह ऐसा हो कि जहां धरती की सच्चाइयों के साथ पेड़ क्यों उगाना चाहिए, नदी को स्वच्छ क्यों रखना चाहिए, बेटी को क्यों पढ़ाना चाहिए, नारी का गौरव क्यों करना चाहिए वैज्ञानिक तरीके से और देश भर के विधिवत जनों बुलाकर के, जिनकी धर्म में आस्था न हो, जो परमात्मा में विश्वास न करता हो, उसको भी बुलाकर के जरा बताओ तो भाई और हमारा जो भक्त समुदाय है। उनके सामने विचार-विमर्श हर परंपरा में साल में एक बार 7 दिन अपने-अपने तरीके से अपने-अपने स्थान पर ज्ञानी-विज्ञानी को बुलाकर के विचार-विमर्श हो तो आप देखिए 3 साल के बाद अगला जब हमारा कुंभ का अवसर आएगा और 12 साल के बाद जो महाकुंभ आता है वो जब आएगा आप देखिए ये हमारी विचार-मंथन की प्रक्रिया इतनी sharpen हुई होगी, दुनिया हमारे विचारों को उठाने के लिए तैयार होगी।

जब अभी पेरिस में पुरा विश्व climate को लेकर के चिंतित था, भारत ने एक अहम भूमिका निभाई और भारत ने उन

मूल्यों को प्रस्तावित करने का प्रयास किया। एक पुस्तक भी प्रसिद्ध हुई कि प्रकृति के प्रति प्रेम का धार्मिक जीवन में क्या-क्या महत्व रहा है और पेरिस के, दुनिया के सामने life style को बदलने पर बल दिया, ये पहली बार हुआ है।

हम वो लोग हैं जो पौधे में भी परमात्मा देखते हैं, हम वो लोग हैं जो जल में भी जीवन देखते हैं, हम वो लोग हैं जो चांद और सूरज में भी अपने परिवार का भाव देखते हैं, हम वो लोग हैं जिनको... आज शायद अंतरराष्ट्रीय Earth दिवस मनाया जाता होगा, पृथ्वी दिवास मनाया जाता होगा लेकिन देखिए हम तो वो लोग हैं जहां बालक सुबह उठकर के जमीन पर पैर रखता था तो मां कहती थी कि बेटा बिस्तर पर से जमीन पर जब पैर रखते हो तो पहले ये धरती मां को प्रणाम करो, माफी मांगो, कहीं तेरे से इस धरती मां को पीढ़ा न हो जाय। आज हम धरती दिवस मनाते हैं, हम तो सदियों से इस परंपरा को निभाते आए हैं।

हम ही तो लोग हैं जहां मां, बालक को बचपन में कहती है कि देखो ये पूरा ब्रह्मांड तुम्हारा परिवार है, ये चाँद जो है न ये चाँद तेरा मामा है। ये सूरज तेरा दादा है। ये प्रकृति को अपना बनाना, ये हमारी विशेषता रही है।

सहज रूप से हमारे जीवन में प्रकृति का प्रेम, प्रकृति के साथ संघर्ष नहीं, सहजीवन के संस्कार हमें मिले हैं और इसलिए जिन बिंदुओं को लेकर के आज हम चलना चाहते हैं। उन बिंदुओं पर विश्वास रखते हुए और जो काल बाह्य है उसको छोड़ना पड़ेगा। हम काल बाह्य चीजों के बोझ के बीच जी नहीं सकते हैं और बदलाव कोई बड़ा संकट है, ये डर भी मैं नहीं मानता हूँ कि हमारी ताकत का परिचय देता है। अरे बदलाव आने दो, बदलाव ही तो जीवन होता है। मरी पड़ी जिंदगी में बदलाव नहीं होता है, जिंदा दिल जीवन में ही तो बदलाव होता है, बदलाव को स्वीकार करना चाहिए। हम सर्वसमावेशक लोग हैं, हम सबको जोड़ने वाले लोग हैं। ये सबको जोड़ने का हमारा सामर्थ्य है, ये कहीं कमजोर तो नहीं हो रहा अगर हम कमजोर हो गए तो हम जोड़ने का दायित्व नहीं निभा पाएंगे और शायद हमारे सिवा कोई जोड़ पाएगा कि नहीं पाएगा ये कहना कठिन है इसलिए हमारा वैश्विक दायित्व बनता है कि जोड़ने के लिए भी हमारे भीतर जो विशिष्ट गुणों की आवश्यकता है उन गुणों को हमें विकसित करना होगा क्योंकि संकट से भरे जन-जीवन को सुलभ बनाना हम लोगों ने दायित्व लिया हुआ है और हमारी इस ऋषियों-मुनियों की परंपरा ज्ञान के भंडार हैं, अनुभव की एक महान परंपरा रही है, उसके आधार पर हम इसको लेकर के चलेंगे तो मुझे पूरा विश्वास है कि जो अपेक्षाएं हैं, वो पूरी होंगी। आज ये समारोह संपन्न हो रहा है।

मैं शिवराज जी को और उनकी पूरी टीम को हृदय से बहुत-बहुत बधाई देता हूँ इतने उत्तम योजना के लिए, बीच में प्रकृति ने कसौटी कर दी। अचानक आंधी आई, तूफान सा बारिश आई, कई भक्त जनों को जीवन अपना खोना पड़ा लेकिन कुछ ही घंटों में व्यवस्थाओं को फिर से ठीक कर दी। मैं उन सभी 40 हजार के करीब मध्य प्रदेश सरकार के छोटे-मोटे साथी सेवारत हैं, मैं विशेष रूप से उनको बधाई देना चाहता हूँ कि आपके इस प्रयासों के कारण सिर्फ मेला संपन्न हुआ है, ऐसा नहीं है। आपके इन उत्तम प्रयासों के कारण विश्व में भारत की एक छवि भी बनी है। भारत के सामान्य मानव के मन में हमारा अपने ऊपर एक विश्वास बढ़ता है इस प्रकार के चीजों से और इसलिए जिन 40 हजार के करीब लोगों ने 30 दिन, दिन-रात मेहनत की है उनको भी मैं बधाई देना चाहता हूँ, मैं उज्जैनवासियों का भी हृदय से अभिनंदन करना चाहता हूँ, उन्होंने पूरे विश्व का यहां स्वागत किया, सम्मान किया, अपने मेहमान की तरह सम्मान किया और इसलिए उज्जैन के मध्य प्रदेश के नागरिक बंधु भी अभिनंदन के बहुत-बहुत अधिकारी हैं, उनको भी हृदय से बहुत-बहुत अभिनंदन करता हूँ और अगले कुंभ के मेले तक हम फिर एक बार अपनी विचार यात्रा को आगे बढ़ाएं इसी शुभकामनाओं के साथ आपका बहुत-बहुत धन्यवाद, फिर एक बार सभी संतों को प्रणाम और उनका आशीर्वाद, उनका सामर्थ्य, उनकी व्यवस्थाएं इस चीज को आगे चलाएंगी, इसी अपेक्षा के साथ सबको प्रणाम।

अतुल तिवारी / हिमांशु सिंह / शौकत / मुस्तकीम खान

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

21-जून-2016 11:59 IST

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर 21 जून, 2016 को कैपिटल कॉम्प्लेक्स, चंडीगढ़ में प्रधानमंत्री के संबोधन का मूलपाठ

इस समय देश के हर कोने में इस योग के कार्यक्रम से लोग जुड़े हुए हैं और विश्व के सभी देश अपने-अपने समय की सुविधा से इस कार्यक्रम के साथ जुड़े हुए हैं। यूनाइटेड नेशन्स द्वारा पूरे विश्व में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया जा रहा है। भारत के अनुरोध पर गत वर्ष इसका प्रारंभ हुआ। 21 जून की तारीख इसलिए पसंद की गई कि एक प्रकार से विश्व के एक बहुत बड़े हिस्से में आज का दिवस सबसे लंबा दिवस होता है और एक प्रकार से सूर्य से निकट नाते का यह पर्व होता है और उसे ध्यान में रखते हुए 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में पसंद किया गया है। पूरे विश्व का समर्थन मिला, विकसित देश हो, विकासमान देश हो, समाज के हर तबके का समर्थन मिला।

वैसे यूनाइटेड नेशन्स के द्वारा कई ऐसे अंतर्राष्ट्रीय दिवस मनाए जाते हैं। मैं सबका उल्लेख नहीं करता हूँ लेकिन शायद यूनाइटेड नेशन्स द्वारा मनाए गए इतने सारे दिवसों में कोई दिवस जन आंदोलन बन गया हो... विश्व के हर कोने में उसको समर्थन और स्वीकृति प्राप्त होती हो, शायद अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की बराबरी कोई और दिवस नहीं कर पा रहा है वह भी एक साल के भीतर-भीतर।

अंतर्राष्ट्रीय अनेक कार्यक्रम होते हैं। UN के द्वारा World Cancer Day होता है, World Health होता है, World Mental Health Day होता है, World Age Day होता है, अनेक और भी कई होते हैं। Health को लेकर के भी अनेक, दिन दिवस UN के द्वारा मनाए जाते हैं। लेकिन यही है जिसका सीधा संबंध Health के साथ तो है, शारीरिक-मानसिक-सामाजिक तंदुरुस्ती के साथ संबंध है, वो योग आज इतने बड़े पैमाने पर जन सामान्य का आंदोलन बना है और मैं समझता हूँ कि ये हमारे पूर्वजों ने, हमें जो विरासत दी है, इस विरासत की ताकत क्या है? इस विरासत की पहचान क्या है? इसका परिचय करवाते हैं।

कभी-कभी तो मैं कहता हूँ कि योगासन एक प्रकार से जीवन अनुशासन का भी अभिष्ठान बन जाता है। कभी-कभी लोग इसको समझने में उनकी क्षमता की कमी के कारण पूरी तरह समझ नहीं पाते हैं। कभी-कभी लोगों को लगता है कि योगासे क्या मिलेगा? ये पूरा विज्ञान लेने-पाने के लिए है ही नहीं। योग, क्या मिलेगा, इसके लिए नहीं है। योग, मैं क्या छोड़पाऊंगा, मैं क्या दे पाऊंगा, मैं किन-किन चीजों से मुक्त हो पाऊंगा, ये मुक्ति का मार्ग है, पाने का मार्ग नहीं है।

सभी संप्रदाय, धर्म, भक्ति, पूजा-पाठ, वो इस बात पर बल देते हैं कि मृत्यु के बाद इहलोक से निकलकर के जब परलोक में जाएंगे तो आपको क्या प्राप्त होगा। आप अगर इस प्रकार से पूजा-पद्धति करेंगे, ईश्वर की साधना-अराधना करेंगे तो आपको परलोक में ये मिलेगा। योग परलोक के लिए नहीं है। मृत्यु के बाद क्या मिलेगा, इसका रास्ता योग नहीं दिखाता है और इसलिए ये धार्मिक कर्मकांड नहीं है। योग इहलोक में तुम्हारे मन को शान्ति कैसे मिलेगी, शरीर को स्वस्थता कैसे मिलेगी, समाज में एकसूत्रता कैसे बनी रहेगी, उसकी ताकत देता है। ये परलोक का विज्ञान नहीं है, इसी इहलोक का विज्ञान है। इसी जन्म में क्या मिलेगा, उसकी का विज्ञान है।

योग के संबंध में शरीर, मन, बुद्धि, आत्मा ये synchronized way में काम करे, इसकी एक ट्रेनिंग योग के द्वारा होती है। हम अपनी तरफ देखे तो हमने देखा होगा कि हम चले या न चले, हम स्फूर्तीले हो या आलसी हो, थके हुए हो या ऊर्जावान हो, हमारा शरीर कुछ भी हो सकता है, ढीला-ढाला, ऐसे ही। चलो छोड़ो यार, कहां जाएगा वहां, बैठो। लेकिन मन, मन कभी स्थिर नहीं रहता। वो तो चारों तरफ चक्कर मारता है, यहां बैठे हो और आपको अमृतसर याद आ जाए तो वहां चले जाएंगे। आनंदपुर साहब याद आएगा तो वहां चले जाएंगे, मुंबई याद आएगा तो वहां चले जाएंगे। कोई दोस्त याद आया तो उसके पास मन चला जाएगा। मन अस्थिर होता है, शरीर स्थिर होता है। ये योग है जो हमें सिखाता है, मन को स्थिर कैसे करना और शरीर को गतिवान कैसे बनाना। यानी हमारी मूलभूत प्रकृति में परिवर्तन लाने का काम योग के द्वारा होता है जिससे मन की स्थिरता की ट्रेनिंग हो और शरीर को गतिशीलता की ट्रेनिंग मिले और अगर ये balance हो जाता है तो जीवन में ईश्वर प्रदत्त, ये जो हमारा शरीर है वो हमारे सभी संकल्पों की पूर्ति के लिए उत्तम माध्यम बन सकता है।

इस अर्थ में योग आस्तिक के लिए भी है, योग नास्तिक के लिए भी है। जीरो बजट से दुनिया में कहीं पर भी health insurance नहीं होता है, लेकिन योग ऐसा है जो जीरो बजट से health assurance देता है। योग को अमीर-गरीब का भेद नहीं है। विद्वान-अनपढ़ का भेद नहीं है। गरीब से गरीब व्यक्ति भी, अमीर से अमीर व्यक्ति भी योग आसानी से कर सकता है। किसी चीज की जरूरत नहीं है। एक हाथ फैलाने के लिए कहीं जगह मिल जाए, वो अपना योग कर सकता है और अपने तन-मन को तंदुरुस्त रख सकता है। भारत जैसे गरीब देश, दुनिया के गरीब देश, developing countries, उनका health काबजट अगर preventive health care पर बल दिया जाए तो काफी बचाया भी जा सकता है और सही काम में उपयोग भी लाया जा सकता है और इसलिए preventive health care के जितने उपाय हैं, उसमें योग एक सरल, सस्ता और हर किसी को उपलब्ध, ऐसा मार्ग है।

योग को जीवन से जोड़ना जरूरी है। बहुत लोग होंगे, अगर आज जल्दी उठ गए होंगे तो हो सकता है कि टीवी पर देखते हो या दिनभर में टीवी पर उनको ये कार्यक्रम देखने का अवसर मिले। मैं विश्वभर के लोगों से प्रार्थना करता हूं, आप खुद के लिए, खुद से जुड़ने के लिए, खुद को जानने के लिए, खुद की क्षमता बढ़ाने के लिए मैं आपसे आग्रह कर रहा हूं, इंतजार मत कीजिए। इस जीवन में योग को जीवन का हिस्सा बना दीजिए। जिस प्रकार से आज मोबाइल फोन आपके जीवन का हिस्सा बन गया, उतनी ही सहजता से आप योग को अपने जीवन का हिस्सा बना सकते हैं। कोई कठिन काम नहीं है, उसको सरलता की ओर ले जाने की जरूरत है।

कभी-कभी हम लोग योग के संबंध में जब चर्चा करते हैं, तब ब्राजील में एक धर्म मित्र योगी हो गए। उनका दावा था कि योग के 1008 आसन होते हैं, 1008 और उन्होंने प्रयत्न करके 908 आसनों की तो फोटोग्राफी की थी, उस क्रियाओं की। ब्राजील में जन्मे थे, योग को समर्पित थे। दुनिया के हर भू-भाग में आज योग प्रतिष्ठा का विषय बना हुआ है और जब योग का आकर्षण हो, योग की प्रतिष्ठा हो; तब जिस महापुरुषों ने, ऋषियों ने, मुनियों ने, हमें ये विज्ञान दिया है, हमारी जिम्मेवारी बनती है कि इसको सही स्वरूप में हम विश्व तक पहुंचाएं। हम अपनी capacity building करें। भारत से उत्तम से उत्तम योग टीचर तैयार हो।

अभी भारत सरकार ने गुणवत्ता के लिए जो council होती है, quality council. उसने योग की ट्रेनिंग कैसी हो, योग के ट्रेनरकैसे हो, उसके कुछ norms तय करने की दिशा में काम किया है। भारत सरकार ने WHO के साथ मिलकर के पूरे विश्व में योग के प्रोटोकॉल क्या हो, वैज्ञानिक तरीके क्या हो, उस पर काम प्रारंभ किया है। देशभर में योग को प्रोत्साहन देने के लिए व्यवस्था कैसे हो, विश्व में योग का सही रूप कैसे पहुंचे और उसकी जो शुद्धता है, उसको बरकरार रखने की दिशा में क्या काम हो? उस पर काम हो रहा है। नए-नए संसाधनों की भी आवश्यकता है।

आपने देखा होगा, आजकल बड़े-बड़े शहरों में, जो Gynaecologist doctor होते हैं वो pregnant women को pregnancy के दरमियान योगा के लिए आग्रह करते हैं, योगा ट्रेनर के पास भेजते हैं ताकि प्रसूति काल में उसको वो सबसे ज्यादा मदद रूप होता है, योगिक क्रियाएं। कहने का तात्पर्य यह है कि जैसे-जैसे समय बीतता है, जैसी आवश्यकताएं होती हैं, संशोधन करते हुए उसमें बदलाव लाने के लिए यह आवश्यक होता है।

हम बहुत व्यस्त हो गए हैं। खुद के साथ, अपने को न जोड़ पाते हैं, न हम खुद के साथ जी पाते हैं। हम अपने आप से cut-off हो चुके हैं। योग और किसी से जोड़े या न जोड़े, अपने आप से जोड़ता है इसलिए योग हमारे लिए शारीरिक, आध्यात्मिक और सामाजिक चेतना का केन्द्र बिन्दु बन गया है। शारीरिक स्वस्थता देता है, आध्यात्मिक अनुभूति के लिए मार्ग बना सकता है और समाज के साथ संतुलित व्यवहार करने की हमें शिक्षा देता है इसलिए मैं चाहूंगा कि इस योग को विवादों में डाले बिना, जनसामान्य की भलाई के लिए और इहलोक की सेवा के लिए, परलोक की सेवा के लिए नहीं है। परलोक के लिए संप्रदाय है, धर्म है, परंपरा है, गुरु महाराज है, बहुत कुछ है। योग इहलोक के लिए, क्षमता बढ़ाने के लिए है इसलिए हम अपने आप को योग से जोड़े, सब लोग अपने आप को योग को समर्पित नहीं कर सकते। लेकिन खुद से जुड़ने के लिए योग से जुड़ना एक उत्तम मार्ग है। मुझे विश्वास है कि हम इस दिशा में आगे बढ़ेंगे।

आज योग विश्व में एक बहुत बड़ा आर्थिक कारोबार भी बनता जा रहा है। पूरे विश्व में एक बहुत बड़े profession के रूप में विकसित हो रहा है। योग के ट्रेनर की बहुत बड़ी मांग बढ़ रही है दुनिया में। दुनिया के हर देश में मांग बढ़ रही है। नौजवानों के लिए रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने की संभावनाएं हो रही हैं। अरबों-खरबों का कारोबार आज योग नाम की व्यवस्था के साथ विकसित होता जा रहा है। दुनिया में कई देश ऐसे हैं कि जहां टीवी चैनल 100% योग के लिए ही समर्पित हो, ऐसे टीवी चैनल चलते हैं। एक बहुत बड़े कारोबार के रूप में भी ये विकसित हो रहा है।

आज हम हर प्रकार से योग करते हैं। मैं योग से जुड़े हुए सभी महानुभावों से आज इस सार्वजनिक मंच से एक प्रार्थना करना चाहता हूं। ये मेरी request है। क्या अगले साल जब हम योग दिवस मनाएंगे, ये जो एक वर्ष है, एक वर्ष के

दरमियान हम योग के लिए; जो भी करते हैं करें लेकिन एक विषय पर हम फोकस कर सकते हैं क्या? और वो मेरा विषय है मधुमेह, Diabetes. Diabetes और योग। सभी योग की दुनिया के लोग, जो भी ज्ञान उनके पास है, तरीके उनके पास है; साल भर योग की बाकी चीजें तो चलेंगी लेकिन ये प्रमुख होगा। भारत में Diabetes की संख्या बढ़ रही है। योग के द्वारा Diabetes से मुक्ति मिले या न मिले लेकिन उसको control तो किया जा सकता है। हम सामान्य व्यक्ति को Diabetes की स्थिति में कौन से योगिक उपाय है, ये सिखाने का जन आंदोलन खड़ा कर सकते हैं क्या? देश में Diabetes के कारण होने वाली परेशानियों से हम कुछ percent लोगों को भी मुक्ति दिलाएंगे तो योग इस वर्ष के achievement में, अगले साल कोई और बीमारी लेंगे। लेकिन मैं चाहता हूँ कि इस उत्तम स्वास्थ्य के लिए कहीं पर किसी बीमारी को भी address करें हम और एक वर्ष के लिए एक बीमारी पकड़कर के आंदोलन चलाए।

दूसरा, योग। ये बीमारी से ही मुक्ति का मार्ग नहीं है। योग, ये wellness की गारंटी है। ये सिर्फ fitness की नहीं, ये wellness की गारंटी है इसलिए हमने wellness पर भी। अगर जीवन को एक Holistic development की ओर ले जाना है, ये उसका उत्तम मार्ग है।

आज जब अंतर्राष्ट्रीय योग का दूसरा वर्ष है। भारत ने विश्व को ये अनमोल विरासत दी है। विश्व ने आज अपने-अपने तरीके से उसको स्वीकार किया है। ऐसे समय भारत सरकार की तरफ से मैं आज दो अवार्ड घोषित करने जा रहा हूँ। अगले वर्ष जब 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाएगा, तब भारत की तरफ से यह दो अवार्ड के लिए चयन होगा। उनको अवार्ड उसी समारोह में दिया जाएगा। एक अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर योग के लिए उत्तम काम हो रहा हो, उनके लिए अवार्ड। दूसरा, भारत में हिन्दुस्तान के भीतर, योग के लिए जो उत्तम काम होता होगा, उनके लिए अवार्ड। एक अंतर्राष्ट्रीय योग अवार्ड, एक राष्ट्रीय योग अवार्ड।

व्यक्ति, संस्था, हर कोई इसमें जुड़ सकते हैं। उसकी जो expert committee होगी, वो उसके नियम बनाएगी, उसके तौर-तरीके बनाएगी, Jury तय करेगी लेकिन विश्व भर में जिस प्रकार से अनेक-अनेक ग्लोबल अवार्ड की वाहवाही होती है, याद होती है, उसका महात्म्य माना जाता है। हिन्दुस्तान चाहता है कि भारत, विश्व के लोग जो योग से जुड़े हैं उनको सम्मानित करे। हिन्दुस्तान में जो योग के लिए काम कर रहे हैं उनको सम्मानित करे और ये परंपरा हम आगे बढ़ाए। धीरे-धीरे इसको राज्य और district स्तर तक भी हम ले जा सकते हैं तो उस दिशा में हम काम करने के लिए प्रयास कर रहे हैं।

मैं फिर एक बार पूरे विश्व का, भारत की इस महान विरासत को सम्मानित करने के लिए, स्वीकार करने के लिए भारत की इस महान परंपरा के साथ जुड़ने के लिए मैं हृदय से विश्व का आभार व्यक्त करता हूँ, मैं UN का आभार व्यक्त करता हूँ, मैं देशवासियों का आभार व्यक्त करता हूँ, मैं योग गुरुओं का आभार व्यक्त करता हूँ। मैं योग के साथ समर्पित सभी पीढ़ी के लोगों का आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने इस परंपरा को बनाए रखा है और आज भी पूर्ण समर्पण भाव से योग की परंपरा को आगे बढ़ा रहे हैं और जैसा मैंने कहा जीरो बजट वाला ये health assurance, इसको हम एक नई ताकत दे, नई ऊर्जा दे, नई प्रेरणा दे।

मैं सभी योग से जुड़े हुए, आज इस चंडीगढ़ की धरती पर, मैं अभी बादल साहब को पूछ रहा था कि इस परिसर का इतना उत्तम उपयोग इसके पहले कभी हुआ है क्या? मैं यहां बहुत पहले आया करता था, मैं चंडीगढ़ में रहता था, करीब पांच साल मैं यहां रहा हूँ तो मैं भली-भाँति इन चीजों से परिचित था, तो जब चंडीगढ़ में ये कार्यक्रम बनाने की बात आई। मैंने कहा था कि इससे अच्छी जगह, उत्तम कोई परिसर नहीं हो सकता है और आज इस परिसर का उत्तम उपयोग देख करके मन को बहुत ही आनंद हो रहा है कि हजारों की तादाद में योग के साथ जुड़े लोगों को देखकर के मन को बड़ी प्रसन्नता होती है और विश्व पूरा जुड़ रहा है, ये अपने आप में एक गर्व की बात है। मैं फिर एक बार इस महान परंपरा को प्रणाम करते हुए, उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए, बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूँ।

अतुल कुमार तिवारी/ हिमांशु सिंह/ मनीषा -3057

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

25-जुलाई-2016 23:37 IST

राष्ट्रपति भवन संग्रहालय के चरण-II के उद्घाटन समारोह में प्रधानमंत्री के भाषण का मूल पाठ

उपस्थित सभी वरिष्ठ महानुभाव,

राष्ट्रपति जी के कार्यकाल का आज चार वर्ष पूर्ण होने पर मैं आदर्णीय राष्ट्रपति जी को हृदय से बहुत-बहुत बधाई देता हूँ, अभिनन्दन करता हूँ, शुभकामनाएं देता हूँ। आपके चार साल के कार्यकाल में अधिक समय मुझे आपके साथ प्रधानमंत्री के रूप में कार्य करने सौभाग्य मिला। मैं दिल्ली की दुनिया में नया था। ये सारा माहौल मेरे लिये नया था। ऐसे समय राष्ट्रपति जी ने एक Guardian की तरह एक Mentor की तरह बहुत से विषयों पर मुझे उंगली पकड़ कर चलाया। ऐसा सौभाग्य बहुत कम लोगों को मिलता है, जो मुझे मिला है।

आज यहां कई ग्रंथों का लोकार्पण हुआ है। मैं किताब नहीं कह रहा हूँ ग्रंथ कह रहा हूँ। मैं ग्रंथ इसलिए कह रहा हूँ कि इनमें वो चीजें समाहित हैं, जो कल्पना के दायरे से नहीं इतिहास के झरोखे से निकली हुई हैं। और जो चीजें इतिहास के झरोखे से निकलती हैं। वे आने वाले पीढ़ियों के मन-मंदिर में एक अमिट छाया छोड़कर जाती हैं। और उस अर्थ में ये जो प्रकाशन हैं, वो प्रकाशन इतिहास का हिस्सा बनने जा रहा है। मैं इस कार्य के लिए राष्ट्रपति जी को और उनकी पूरी Team को बहुत-बहुत बधाई देता हूँ।

अभी Museum देखने का सौभाग्य मिला। श्रीमान घोष का इतना उत्साह था कि अगर ओमिता ने रोका न होता तो शायद हम रात को ग्यारह बजे यहां आते। और आपमें से जिसको भी इस Museum को देखने का समय मिले। मैं आग्रह करूंगा पूरा दिन निकालकर के आइए, इतनी बारीकियां हैं। इतनी विविधता है। और इतिहास को पुनर्जीवित करने का एक अद्भुत प्रयास है। ये ऐसा Museum है, जहां इतिहास, कला, कल्पना शक्ति और Technology ये चारों का मिलन है और इसलिए जो भी इससे जुड़ेगा। वो इन चारों के माध्यम से इतिहास को जी सकता है। सिर्फ इतिहास को जान सकता है, ऐसा नहीं, वो कुछ पल के लिए इतिहास को जी सकता है। और इस अर्थ में मैं समझता हूँ की जिस वैज्ञानिक तरीके से, जिस Research के साथ और जो कलात्मक रूप से उसका Presentation किया है, उसके लिए श्रीमान घोष और उनकी पूरी Team को मैं बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। और उनका अभिनन्दन करता हूँ।

राष्ट्रपति जी ने भारत के जीवन में तो बहुत बड़ा योगदान दिया है। एक लंबा कार्यकाल रहा है उनका सार्वजनिक जीवन का। लेकिन चार साल की अल्पावधि में आपने राष्ट्रपति भवन को भी बहुत कुछ दिया है। एक प्रकार से राष्ट्रपति भवन सामान्य मानव, को इतिहास को और भारत के सर्वोच्च स्थान को एक प्रकार से उन्होंने मिलन बिन्दू बनाया है। और ये हमने आपमें आपका बहुत बड़ा योगदान इस परिसर के संदर्भ में मैं देखता हूँ। और सबसे बड़ी खुशी की बात यह है, मेरा राजनीतिक Background अलग है। राष्ट्रपति जी का राजनीतिक Background अलग है। लेकिन लोकतंत्र में भिन्न विचार प्रभावों से पले बड़े व्यक्ति भी किस प्रकार से कंधे से कंधा मिलाकर के काम कर सकते हैं। ये राष्ट्रपति जी के पास रह कर के हर पल हम अनुभव कर सकते हैं।

भारत सरकार की जितनी योजनाएं हैं। कई राज्य ऐसे होंगे, जिनको शायद भारत सरकार की कुछ योजनाएं लागू करने में या लागू किये तो, बोलने में थोड़ा झिझक रहती होगी। मैं आज बड़े गर्व के साथ कहता हूँ कि भारत सरकार की जितनी योजनाएं, ये राष्ट्रपति भवन परिसर..यह भी एक छोटा सा गांव है। दस हजार से ज्यादा लोग यहां रहते हैं। इस गांव के रूप में उन सारी योजनाओं को यहां लागू करने का प्रयास हुआ है। चाहे Renewable Energy की बात हो, Water Conservation की बात हो, Environment related initiatives हों, हर चीज को लागू किया गया है, Digital India है, तो यहां Digital राष्ट्रपति भवन। एक प्रकार से भारत सरकार की सारी योजनाओं को miniature रूप में यहां पर लागू करने का भरपूर प्रयास राष्ट्रपति जी ने किया है। किसी ओर व्यक्ति की दल की सरकार हो, उसके बावजूद भी उस सरकार के कार्यक्रम राष्ट्रपति भवन के भी कार्यक्रम बनने चाहिए। ये ऊंचाई आदर्णीय प्रणव दा ही दिखा सकते हैं। और इसलिए मैं उनका हृदय से वंदन करता हूँ। अभिनन्दन करता हूँ।

मुझे विश्वास है और इतिहास जीवन को एक जड़ी-बूटी के रूप में काम आता है। जो इतिहास को भूल जाते हैं। वो एक प्रकार से जीवन के रस कस को खो देते हैं। मंदिर में जो मूर्तियां होती हैं। पत्थर से ही अलंकृत होती हैं। लेकिन सालों साल अनेक लोगों की भक्ति से वो भगवान का रूप धारण कर लेती है। ऐतिहासिक स्थानों के हर पत्थर उस पत्थर का भी अपना एक इतिहास होता है। हर पत्थर चीख - चीख कर के बीते हुए कल की बात बता करके आने वाले कल के लिए रास्ता दिखाने की ताकत रखता है। लेकिन आवश्यकता होती है। उस पत्थर को भी सुनने के लिए सामर्थ्य पैदा करने की। इस Museum के द्वारा पत्थर को बोलने की ताकत दी गई है। हम उसे सुनने की ताकत लें। और नई आने वाली पीढ़ी को कुछ पाने देने के लिए एक नया सार्थ प्राप्त करें।

मैं फिर एक बार इस प्रयास के लिए सबका अभिनन्दन करता हूं। आदर्शपूर्ण राष्ट्रपति जी का फिर से एक बार चार वर्ष पूर्ण हो कर के अगले वर्ष के लिए हम सबको बहुत ही उत्तम मार्गदर्शन मिले। इसके लिए अपेक्षा करते हुए प्रेरणा के लिए आभार व्यक्त करते हुए आप सबका बहुत - बहुत धन्यवाद।

अतुल कुमार तिवारी/अमित कुमार/शौकत अली

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

22-जुलाई-2016 15:31 IST

गोरखपुर, उत्तर प्रदेश के गोरखनाथ मंदिर में प्रधानमंत्री द्वारा दिए गये भाषण का मूल पाठ

यहां उपस्थित सभी प्रातः स्मरणीय आदरणीय गुरुजन, संतजन और सभी भाविक भक्त,

ये मेरा सौभाग्य है कि आज हम सबके प्रेरणा-पुरुष परमपूज्य अवैद्यनाथ जी महाराज जी का प्रतिमा का अनावरण करने के निमित्त, आप सबके आशीर्वाद पाने का मुझे अवसर मिला। ये धरती एक विशेष धरती है, बुद्ध हो, महावीर हो, कबीर हो हर किसी का इससे किसी न किसी रूप में अटूट नाता रहा है। गोरखनाथ एक महान परंपरा, जो सिर्फ व्यक्ति की उन्नति नहीं, लेकिन व्यक्ति की उन्नति के साथ-साथ समाज की भी उन्नति, उस महान लक्ष्य को लेकर के एक परंपरा चली।

कई बार समाज में परंपराओं का जब दीर्घकाल हो जाता है, तो धीरे-धीरे उसमें कुछ कमियां आना शुरू हो जाती हैं, कुछ कठिनाईयां आना शुरू हो जाती हैं। लेकिन जब परंपरा के आदर्शों को, नियमों का पूरी तरह पालन किया जाता है, तो उन परंपराओं को परिस्थितियों के दबाव से मुक्त रखा जा सकता है। मैं गोरखनाथ के द्वारा प्रारम्भ हुई इस परंपरा में...क्योंकि जब मैं गुजरात में था वहां भी बहुत सारे स्थान हैं, कभी अवैद्यनाथ जी के साथ एक बार मैं बैठा था, राजनीति में आने से पहले मेरा उनका सम्पर्क था। इस पूरी व्यवस्था का संचालन कैसे होता है, नीति नियमों का पालन कैसे होता है इस परंपरा से निकला हुआ संत कहीं पर भी हो, उसकी पूरी जानकारी कैसे रखी जा सकती है, उसको कोई आर्थिक संकट हो तो कैसे उसको मदद पहुंचायी जाती है और कैसी organised way में व्यवस्था है, वो कभी मैंने महंत जी के पास से सुना था और उस परंपरा को आज भी बरकरार रख रहा है। इसके लिए, इस गद्दी पर जिन जिन लोगों को सेवा करने को सौभाग्य मिला है, उन सबका एक उत्तम से उत्तम योगदान रहा है। और उसमें महंत अवैद्यनाथ जी ने, चाहे आजादी की लड़ाई हो चाहे आजादी के बाद समाज के पुनर्निर्माण का काम हो लोकतांत्रिक ढांचे में बैठ करके तीर्थस्थान के माध्यम से भी सामाजिक चेतना को कैसे जगाया जा सकता है और बदली हुई परिस्थिति का लाभ, जन सामान्य तक कैसे पहुंचाया जा सकता है, उस पहलू को देखते हुए उन्होंने अपने जीवन में इस एक आयाम को भी जोड़ा था, जिसको आज योगी जी भी आगे बढ़ा रहे हैं।

कभी-कभी बाहर बहुत भ्रमनाएं रहती हैं। लेकिन हमने देखा है कि हमारे देश में जितनी भी संत परंपराएं हैं, जितने भी अलग-अलग प्रकार के मठ व्यवस्थाएं हैं, अखाड़ें हैं, जितनी भी परंपरा है, उन सब में एक बात समान है, कभी भी कोई गरीब व्यक्ति, कोई भूखा व्यक्ति, इनके द्वार से कभी बिना खाए लौटता नहीं है। खुद के पास कुछ हो या न हो, संत किसी झोंपड़ी में बैठा होगा, लेकिन पहला सवाल पूछेगा कि क्या प्रसाद ले करके जाओगे क्या? ये एक महान परंपरा समाज के प्रति संवेदना में से प्रकट होती है और वो ही परंपरा जो समाज के प्रति भक्ति सीखाती है, जो समाज का कल्याण करने के लिए व्यवस्थाओं को आहुत करती है। वही व्यवस्थाएं चिरंजीव रहती हैं।

हमारे देश में, हर व्यवस्था में समयानुकूल परिवर्तन किया है। हर परिवर्तन को स्वीकार किया है, जहां विज्ञान की जरूरत पड़ी विज्ञान को स्वीकार किया है। जहां सामाजिक सोच में बदलाव की जरूरत पड़ी उसको भी बदला है और आज तो मैंने देखा है, कई संतों को जो कभी-कभी आध्यात्मिक धार्मिक कामों में लगे रहते थे, लेकिन आजकल स्वच्छता के अभियान के साथ भी अपने आप को जोड़ते हैं और स्वच्छता के काम अच्छे हो उसके लिए समय लगा रहे हैं। मैंने ऐसे भी संतों के विषय में जाना है, जो टॉयलेट बनाने के अभियान चलाते हैं। अपने भक्तों को कहते हैं शौचालय बनाइये। मां, बहनों का सम्मान बने, गौरव से जीवन जीएं इस काम को कीजिए। बहुत से ऐसे संतों को देखा है कि जो नेत्रमणि के ऑपरेशन के लिए कैंप लगाते हैं और गरीब से गरीब व्यक्ति को नेत्रमणि के ऑपरेशन के लिए, जो भी सहायता कर सकते हैं, करते हैं। कई संतों को देखा है जो पशु के अरोग्य के लिए अपने आपको खपा देते हैं। पशु निरोगी हो उसके लिए अपनी जीवन खपा देते हैं। शिक्षा हो, स्वास्थ्य हो, सेवा हो, हर क्षेत्र में कहीं न कहीं, किसी न किसी रूप में हमारी ये संत परंपरा आज जुड़ रही है। और समय की मांग है देश को लाखों संत, हजारों परंपराएं सैकड़ों मठ व्यवस्थाएं, भारत को आधुनिक बनाने में, भारत को संपन्न बनाने में, भारत के जन-जन में उत्तम संस्कारों के साथ सम्पूर्ण भाव जगाने में बहुत बड़ी अहम भूमिका निभा सकते हैं, और बहुत सारे निभा भी रहे हैं और यही बात है जो देश के भविष्य के लिए एक अच्छी ताकत के रूप में उभर करके आती है।

महंत अवैद्यनाथ जी पूरा समय समाज के सुख-दुख की चर्चा किया करते थे, चिंता किया करते थे, उससे रास्ते खोजने का प्रयास करते थे, और जो भी अच्छा करते हैं उनको प्रोत्साहन देना, उनको पुरस्कृत करना और उस अच्छे काम के लिए लगाए रखना, ये उनका जीवन भर काम रहा था। आज मेरा सौभाग्य है कि उनकी प्रतिमा का अनावरण हुआ। मुझे भी पुष्पांजली को सौभाग्य मिला और इस धरती को तपस्या की धरती है, अखण्ड ज्योति की धरती है, अविरत प्रेरणा की धरती है, अविरत सत्कारियों को पुरस्कृत करने वाली धरती है उस धरती को नमन करते हुए, आप सबको प्रणाम करते हुए मैं मेरी वाणी पर विराम देता हूँ।

बहुत-बहुत धन्यवाद

अतुल कुमार तिवारी/ अमित कुमार/ मधुप्रभा/ ममता

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

27-सितम्बर-2016 13:25 IST

माता अमृताआनंदमयी के 63वें जन्मदिन के अवसर पर प्रधानमंत्री के भाषण का मूल पाठ

प्रणाम अम्मा

इस मंच पर उपस्थित सम्मानित गणमान्य जन

नमस्कारम्

इस पवित्र और पावन अवसर पर, मैं अम्मा को साधुवाद देता हूँ। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वह अम्मा को दीर्घायु बनाएं। वह लाखों अनुयायी की मार्गदर्शक हैं। वह इन लाखों अनुयायियों के लिए सिर्फ जीवन का पर्याय ही नहीं बन चुकी हैं बल्कि सच्ची मां भी बन चुकी हैं। वह अपने भक्तों के लिए प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप में भी कार्य करती हैं और भक्तों पर उनका हाथ अदृश्य तरीके से साया बना रहता है।

मैं उन भाग्यशाली लोगों में से एक हूँ जिन्हें अम्मा का आशिर्वाद और स्नेह मिलता रहा है। तीन वर्ष पूर्व मुझे अम्मा के 60वें जन्मदिन पर अमृतपुरी में उनके दर्शक के सौभाग्य प्राप्त हुए। लेकिन आज मैं उतना सौभाग्यशाली नहीं हूँ कि उन्हें प्रत्यक्ष रूप से उन्हें जन्मदिन की बधाई दे सकूँ इसलिए इस तकनीक के माध्यम से उन्हें शुभकामनाएं प्रेषित कर रहा हूँ। मैं अभी केरल से लौटा हूँ और केरल के लोगों ने मुझे अपार स्नेह प्रदान किया।

भारत ऐसे संतों की धरती है जो प्रत्येक चीज को ईश्वर में देखते हैं। मानवता उनमें से एक प्रमुख है। सेवा करना ही मानवता का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए। मैं इस बात से अवगत हूँ कि अम्मा अपने बचपन से ही अपना भोजन जरूरतमंदों को देती रही हैं। बुजुर्गों एवं उम्मीदराज लोगों की सेवा करना उनका बचपन से ही उद्देश्य रहा है। वह बचपन से ही भगवान श्रीकृष्ण की अराधना करती रही हैं।

यह दोनों विशेषताएं ही उनकी ताकत हैं। भगवान की अराधना और गरीबों की सेवा का संदेश मैंने व्यक्तिगत रूप से अम्मा से ही ग्रहण किया है। दुनियाभर के उनके भक्त भी यही महसूस करते हैं।

मैं इस बात से भी अवगत हूँ कि अम्मा के विभिन्न संस्थान जो चैरिटेबल और सामाजिक कार्यों को अंजाम देते हैं। वह दुनिया के गरीबों की पांच आवश्यकताओं भोजन, आवास, स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और आजीविका को पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

मैं अम्मा द्वारा स्वच्छता, जल, आवास, शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में किए गए उल्लेखनीय कार्यों का यहां जिक्र करना चाहता हूँ। मैं समझता हूँ कि उन लाभार्थियों में से कुछ को आज अपने प्रमाण पत्र मिल जाएंगे। विशेषकर अम्मा का शौचालय निर्माण के क्षेत्र में काम बेहद उल्लेखनीय है जो हमारे स्वच्छ भारत मिशन का अहम हिस्सा है। इससे हमें बड़ी मदद मिली है। अम्मा ने केरल में स्वच्छता कार्यक्रम के लिए सौ करोड़ रुपये दान देने का संकल्प जताया है। इसमें पंद्रह हजार शौचालयों का निर्माण भी शामिल है। आज मैं बताना चाहूंगा कि अम्मा के आश्रम ने दो हजार शौचालयों का निर्माण कार्य पूरा करा चुका है।

मैं जानता हूँ कि पर्यावरण संरक्षण और स्थिरता के क्षेत्र में किए गए कार्यों में से यह महज एक उदाहरण भर है। एक वर्ष पूर्व अम्मा ने नमामि गंगे कार्यक्रम के लिए सौ करोड़ रुपये प्रदान किए थे। मैं प्राकृतिक आपदाओं के बाद पीड़ितों की मदद के लिए किए गए अम्मा के कार्यों से भी भलीभांति परिचित हूँ। यह भी उल्लेखनीय है कि अमृता विश्वविद्यालय के शोधार्थियों ने ऐसे कई शोध किए हैं जिससे दुनिया की समस्याओं का निदान किया जा सके।

अंत में, मैं इस समारोह में मुझे हिस्सा लेने के लिए अवसर देने के लिए आभार व्यक्त करता हूँ।

एक बार फिर मैं अम्मा को साधुवाद देता हूँ।

AKT/HS/VS

पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय

31-अक्टूबर-2016 21:10 IST

सरदार वल्लभ भाई पटेल की भूमिका पर आधारित डिजिटल प्रदर्शनी के उद्घाटन के अवसर पर प्रधानमंत्री के भाषण का
मूल पाठ

जब हम सरदार साहब की जयंती मना रहे हैं और जब हम एकता की बात करते हैं तो पहले तो संदेश यही साफ है कि मैं भाजपा वाला हूँ, सरदार साहब कांग्रेसी थे। लेकिन उतने ही शान से, उतने ही आदर के साथ इस काम को हम कर रहे हैं क्योंकि हर महापुरुष के अपने-अपने कालखंड में अलग-अलग विचार रहते हैं और विचार के साथ विवाद भी बहुत स्वाभाविक होते हैं। लेकिन महापुरुषों के योगदान को बाद की पीढ़ियों ने बांटने के लिए उपयोग करने का हक नहीं है। उसमें से जोड़ने वाली चीजें ढूँढ़ना, अपने आप को जोड़ना और हर किसी को अगर जोड़ पाते हैं तो जोड़ने का प्रयास करना। मैं हैरान हूँ कि कुछ लोग इस पर मुझ पर आरोप लगा रहे हैं कि आप कौन होते हैं सरदार साहब की जयंती मनाने वाले। यह बात सही है लेकिन सरदार साहब ऐसे थे जिसके परिवार ने कोई कॉपीराइट लिया हुआ नहीं है। और वैसे भी सार्वजनिक जीवन में जिसने अपने परिवार के लिए कुछ नहीं किया था, जो भी किया, जितना भी किया दायित्व के रूप में किया, जिम्मेवारी के रूप में किया, सिर्फ और सिर्फ देश के लिए किया।

अगर ये बातें आज की पीढ़ी को उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करेंगे तो हम किसी को कह सकते हैं कि भई ठीक है परिवार है लेकिन थोड़ा देश का भी तो देखो। इसलिए ऐसे अनेक महापुरुष, कोई एक नहीं है, अनेक महापुरुष हैं जिसके जीवन को नई पीढ़ी के सामने आन बान शान के रूप में हमें प्रस्तुत करना चाहिए। बहुत कम बातें हैं जो बाहर आती हैं। हमारे देश में किसी को याद रखने के लिए जितना काम करना चाहिए लेकिन कुछ लोग इतने महान थे, इतने महान थे कि उनको बुलाने के लिए भी 70-70 साल तक प्रयास किए, लेकिन सफलता नहीं मिली है। इसलिए सरदार साहब के जीवन की कई बातें।

कभी-कभी हम सुनते हैं कि शासन व्यवस्था में Women reservation महिलाओं के लिए आरक्षण। आपको ढेर सारे नाम मिलेंगे जो claim करते होंगे या उनके चेले claim करते होंगे कि women आरक्षण का credit फलाने फलाने को जाता है। लेकिन मैंने जितना पढ़ा है, उसमें 1930 में, जबकि सरदार वल्लभ भाई पटेल अहमदाबाद म्यूनिसिपल पार्टी के अध्यक्ष थे, उन्होंने 33% women reservation का प्रस्ताव किया हुआ है। अब जब वो मुंबई प्रेसीडेंसी को गया तो उन्होंने इसको कचरे की टोपी में डाल दिया, उसको मंजूर नहीं होने दिया। ये चीजें एक दीर्घ दृष्टि महापुरुष कैसे सोचते हैं इसके उदाहरण हैं।

सरदार साहब के व्यक्तित्व की झलक महात्मा गांधी ने एक जगह पर बड़ी मजेदार लिखी है। अहमदाबाद की म्यूनिसिपल पार्टी के वो अध्यक्ष थे तो वहां एक विक्टोरिया गार्डन है। और यह सरदार साहब कैसे सोचते थे, उन्होंने विक्टोरिया गार्डन में लोकमान्य तिलक की प्रतिमा लगवाई। कैसा लगा होगा उस समय अंग्रेजों को आप कल्पना कर सकते हैं और शायद वो देश में अकेली लोकमान्य तिलक जी की प्रतिमा है जो सिंहासन पर बैठकर के उन्होंने कल्पना की, और बनाई।

दूसरी विशेषता गांधी जी को आग्रह किया कि इसका लोकार्पण आप करो।

तीसरा, उन्होंने कहा कि मैं नहीं रहूंगा और गांधी जी ने उस दिन डायरी पर लिखा है उस उद्घाटन के समारोह पर, उन्होंने लिखा कि अहमदाबाद म्यूनिसिपल कॉरपोरेशन में कौन बैठा है। उसको अगर जानना है तो इस निर्णय से पता चलता है कि कोई सरदार बैठा है। शब्द अलग-अलग हो सकते हैं मुझे वाक्य पूरा याद नहीं है लेकिन ये गांधी जी ने, खुद ने कि सरदार अहमदाबाद म्यूनिसिपल पार्टी में आए हैं मतलब अहमदाबाद में हिम्मत आई है। इस प्रकार का भाव उन्होंने व्यक्त किया।

हम इतिहास में इस बात को जानते हैं कि उसको वैसे ठीक ढंग से रखा नहीं जाता है। किसी दल के इतिहास को देखे तो भी pages को कहीं ढूँढ़ना पड़े, है। देश आजाद हुआ तब नेतृत्व देने का विषय था। राज्यों की तरफ से जो प्रस्ताव है। वे बहुत एक सरदार साहब के पक्ष में आए, पंडित नेहरु के पक्ष में नहीं आए। लेकिन गांधी जी का व्यक्तित्व ऐसा था उनको लगा कि नहीं सरदार साहब के बजाए कोई और होता तो अच्छा हो। नेहरु को बनाने में उनको जरा, शायद मन में यह भी रहा हो, मैं नहीं जानता रहा हो, लेकिन शायद, मैं भी गुजराती और इसको भी गुजराती का बनाऊंगा तो पता नहीं शायद।

खैर यह तो मेरा साहित्यिक तर्क है, ऐतिहासिक प्रमाण तो नहीं है। मैं मजाक में कह रहा हूँ लेकिन लोगों को लगता है कि भई देखिए सरदार साहब कैसे है। कोई revolt नहीं किया, तूफान खड़ा नहीं किया, म्यूनिसिपल पार्टी के अध्यक्ष का मामला हो तो भी अच्छा, मेरे बाद 30 लोग है आ जाओ, यही होता है जी, ऐसा नहीं किया। लेकिन ये नहीं किया ये बात उतनी ज्यादा उजागर नहीं होने दिए जा रही है लेकिन सच्चाई को नकारा नहीं जा सकता। लेकिन सरदार साहब कौन थे, इस बात का पता एक और घटना से मिलता है। 01 नवंबर, 1926 यानी ठीक, कल 01 नवंबर है, 90 साल पहले। जबकि सरदार साहब अहमदाबाद म्यूनिसिपल पार्टी के अध्यक्ष थे और Standing committee का चुनाव था। अब सबका आग्रह था कि अध्यक्ष और Standing committee के चेयरमैन एक रहे तो इस कारोबार को चलाना सुविधाजनक होगा। तो सबके आग्रह पर सरदार साहब चुनाव में खड़े हुए। उनके सामने एक मि. दौलतराय करके थे वो खड़े हुए। और दोनों को 23-23 वोट मिले। तब casting vote आया अध्यक्ष को करने का। जो सरदार पटेल थे। स्वयं उम्मीदवार भी थे और casting vote

करना था और देश को आश्चर्य होगा कि सरदार पटेल ने अपने खुद के खिलाफ वोट किया था। जो बात देश की आजादी के समय महात्मा गांधी की नजरों के सामने हुई थी वो बात 01 नवंबर, 1926, 90 साल पहले एक महापुरुष ने, जिस पर कोई गांधी का व्यक्तित्व का दबाव भी नहीं था उस समय। उनकी आत्मा की आवाज कह रही थी मुझे इस म्यूनिसिपल पार्टी को चलाना है। casting vote से मैं बैठू ठीक नहीं है। अच्छा होगा casting vote मेरे विपक्ष को मैं दे दूँ और उसको मैं बैठा दूँ, उन्होंने बैठा दिया। क्या ये चीजें वर्तमान के राजनैतिक जीवन के हर छोटे-मोटे व्यक्ति को सीखने के लिए काम में आने वाली है कि नहीं है। अगर है तो उसको उजागर करना चाहिए कि नहीं करना चाहिए। बस इतना सा काम करने की कोशिश कर रहा हूँ। आप कल्पना करिए कोई बहुत पुराना इतिहास तो है नहीं, 47, 48, 49 का कालखंड।

आज साहब कितना ही बड़ा नेता हो, एक म्यूनिसिपल पार्टी के अध्यक्ष को कहे कि भई ठीक है तेरा सब कुछ है। मान लिया लेकिन मेरा मन करता है तुम छोड़ दो। छोड़ेगा क्या कोई, उसके पैतृक संपत्ति है क्या, उसके मां-बाप ने मेहनत करके पाई हुई है क्या। लोकतंत्र में लोगों ने मौका दिया है, पांच साल के लिए दिया है और जरूरत पड़ गई कि तीन साल के बाद तुम छोड़ दो। कोई मुझे बताए कि छोड़ेगा क्या। और पता नहीं छोड़ेगा तो क्या कुछ करेगा। इस बात को तो हम भली-भांति समझते हैं कि कोई छोड़ता नहीं है। यहां भी साहब अगर कोई बड़ा मेहमान आ जाए और कुर्सी छोड़नी होती है तो हम ऐसे देखेंगे। ऐसा लगेगा कि उसको पता ही नहीं कि वो आए हैं। मनुष्य का मूलभूत स्वभाव है साहब। हम बस में, विमान में दौरे पर जाते हैं कभी, travelling करते हैं, बगल वाली सीट खाली है। हमने अपनी किताब रखी, मोबाइल फोन रखा और जहाज चलने की तैयारी में है, बस चलने की तैयारी में है। इतने में last में मानो कोई passenger आ गया, वो सीट तो हमारी नहीं थी, खाली थी। और हमने कुछ रखा था। हमको इतना वो आदमी बुरा लगता है यार। ये कहाँ गया। सब उठाना पड़ता है। मैं सच बोल रहा हूँ न? लेकिन आपको पूरा भरोसा है कि मैं आपकी बात नहीं बता रहा हूँ।

मनुष्य का स्वभाव है। लेकिन आप कल्पना कीजिए कि इस महापुरुष का व्यक्तित्व कैसा होगा। सरदार साहब के अंदर वो कौन सा तेज पुंज होगा। ऐसे-ऐसे रजवाड़ों गए जिनके पूर्वजों ने अपनी तलवार की नौक पर पाई हुई सत्ता थी ये कभी, अपने बाहुबल से पाई हुई थी। अपने पूर्वजों ने बलिदान दिए थे लेकिन सरदार साहब ने कहा भई वक्त बदल चुका है, देश जाग रहा है और उन्होंने पल भर में signature कर दिया। पूर्वजों का सैंकड़ों साल पुराना राज-रजवाड़ों का राज-पाठ दे दिया एक इंसान को साहब। कल्पना कीजिए कि उस व्यक्तित्व की ऊंचाई कितनी बड़ी होगी।

मैं गुजरात से हूँ। गुजरात में क्षत्रिय और पटेल, लंबे अरसे से एक प्रकार से तू-तू, मैं-मैं वाला मामला रहा है। पटेल खेती करने वाले लोगों को लगता था कि लोग हमें दबाते हैं। उनको लगता था कि इनको कोई समझ नहीं है, हम राजा है, वगैरह-वगैरह चलता रहता है हमारे समाज में यहां कई छोटी-बड़ी। साहब कल्पना कीजिए एक पटेल का बेटा, क्षत्रिय राजनेता, राजपुरुष को कह रहा है, छोड़ दो और एक पटेल बेटे की बात मानकर के क्षत्रिय छोड़ देता है। समाज में इससे बड़ी ताकत क्या होती है। कितनी बड़ी ताकत है ये। और उस अर्थ में हम देखें। एक-एक पहलू, सरदार साहब की सामर्थ्य को प्रकट करने का प्रयास।

यहां एक डिजिटल म्यूजियम बनाया गया है। ये संपूर्ण सरदार तो हो नहीं सकते हैं। हम सब मिलकर के कोशिश करें तो भी सरदार इतने बड़े थे कि कुछ न कुछ तो छूट ही जाएगा। लेकिन सबने मिलकर के कोशिश की है। और संपूर्ण सरदार को पाने, देखने, समझने के लिए खिड़की खोलने का काम इस प्रयास में है, मैं इतना ही दावा करता हूँ ज्यादा नहीं करता। आधुनिक टेक्नोलॉजी का भरपूर प्रयास किया गया है। घटनाओं का जीवित करने का प्रयास किया गया है और मूल संदेश यह है कि आज की पीढ़ी की जिम्मेवारी है 'भारत की एकता को बल देना'। हम लोग सुबह शाम देखते होंगे। ऐसा लगता है जैसे हम लोग बिखरने के लिए रास्ते खोज रहे हैं। जैसे हमें binocular लेकर के बैठे हैं कि किसी कोने में बिखरने की चीज मिलती है तो पकड़ें यार। बिखराव लाओ, बांटें, तोड़ो। विविधताओं से भरा हुआ ये देश ऐसे नहीं चल सकता है। हमें प्रयत्नपूर्वक एकता के मंत्र को जीना पड़ेगा। जीकर के दिखाना पड़ेगा और एक प्रकार से वो हमारी सांस्कृतिक विरासत के रूप में अंतरसाध्य करना पड़ेगा और पीढ़ी दर पीढ़ी उसको percolate करना पड़ेगा।

हम इस देश को बिखरने नहीं दे सकते और तब जाकर के हमें ऐसे महापुरुष का जीवन, उनकी बातें, हमें काम आती हैं। इतिहास गवाह है कि किसी समय भी तो अंतरविरोधों के कारण, अहंकार के कारण, मेरे-तेरे के भाव के कारण ये देश सामर्थ्यवान था फिर भी बिखरा था। एक चाणक्य नाम का महपुरुष था 400 साल पहले, उसने पूरे हिन्दुस्तान को एक करने का सफल प्रयास किया था और हिन्दुस्तान की सीमाओं को कहां तक ले गया था वो इंसान। उसके बाद सरदार साहब थे जिन्होंने इस काम को किया। हम लोगों की कोशिश होनी चाहिए। आपने देखा होगा कि हमारा कोई बच्चा Spanish language सीखता है तो हम घर में जो भी मेहमान आए उसके सामने नमूना पेश करते हैं, मेरे बेटे को Spanish आती है, मेरी बच्ची को French आती है। अच्छी बात है, मैं इसकी आलोचना नहीं कर रहा हूँ। हरेक को लगता है कि अपने

career में जरूरी है। लेकिन कभी इस बात का गर्व नहीं होता है कि हम पंजाब में पैदा हुए लेकिन मेरा एक बच्चा है मलयालम भाषा बहुत अच्छी बोलता है, यह कहने का.. हम उड़ीसा में रहते थे लेकिन मराठी बहुत बढ़िया बोलते थे, उसको मराठी कविताएं आती हैं। हमारा एक बच्चा है, रेडियो पर सुबह-सुबह रवीन्द्र संगीत सुनता है उसको बंगाली गीत बहुत अच्छे लगते हैं। रवीन्द्र संगीत उसको बहुत प्यारा लगता है, ये मन क्यों नहीं करना चाहिए। मैं पंजाब में रहता हूं लेकिन कभी मेहमान आते हैं तो कहता हूं हां मुझे डोसा बनाना आता है, ये तो सीख गए हैं। मैं केरल जाऊं तो कोई कहे मोदी जी आप आए हैं चलो ढोकला खिला देता हूं। इन चीजों से तो हमें थोड़ा-बहुत अंतर संपर्क बढ़ रहा है। लेकिन प्रयत्नपूर्वक हमें हमारे देश को जानना चाहिए, जीना चाहिए। हमें अपना विस्तार करना चाहिए। मैं किसी एक राज्य में भले पैदा हुआ, एक भाषा में भले पढ़ा-बढ़ा हुआ, लेकिन ये मेरा देश है, सब कुछ मेरा है। मुझे उसके साथ जुड़ना चाहिए। ये गौरव का भाव हमें एकता के मंत्र को जीने के लिए रास्ता दिखाता है।

हमारे देश में इस बात पर तो बड़ा झगड़ा हुआ कि हिन्दी भाषा को मानेंगे कि नहीं मानेंगे लेकिन अगर हम carefully कुशलतापूर्वक सब भाषाओं को अपने में समेटे तो ये संघर्ष के लिए कोई chance नहीं है जी। आप देखिए कभी-कभी कोई शब्द हमें ध्यान नहीं आता है तो अंग्रेजी शब्द का प्रयोग करते हैं। अपनी भाषा में समझता नहीं तो हम बड़ी आसानी से अंग्रेजी शब्दों को बोल लेते हैं। लेकिन कभी-कभार ध्यान आता है कि मेरी भाषा में अच्छा शब्द नहीं है तो मैं अंग्रेजी की मदद लेता हूं लेकिन अगर मराठी भाषा देखूं, बंगाली देखूं, तमिल देखूं तो इसके लिए उन्होंने बढ़िया शब्द खोजकर के निकाला है। मैं क्यों न उसको adopt करूं। मैं आसानी से मेरे देश की किसी भाषा का अच्छा शब्द है तो adopt क्यों न करूं। लेकिन ये मुझे ज्ञान ही नहीं है उस अज्ञान में से मुझे मुक्ति मिलनी चाहिए, अपनो को जानना चाहिए।

ये छोटा सा प्रयास है। इसमें बोलचाल के 100 वाक्य निकाले। कैसे हो, नजदीक में अच्छा खाना कहां मिलेगा, इस शहर की जनसंख्या कितनी है, ऑटोरिक्षा का स्टैंड कहां हैं, छोटे-छोटे सवाल। मुझे बीमारी जैसा लगता है, नजदीक में कोई डॉक्टर मिलेंगे क्या, ऐसे छोटे-छोटे वाक्य। हर भाषा में वो वाक्य उपलब्ध है। जिस दिन लोगों ने ये हाथ में, ऑनलाइन भी available है। उसको लगेगा अच्छा भई हम केरल जा रहे हैं चलिए यार ये 100 वाक्य पकड़ लेते हैं कहीं मुश्किल नहीं होगी, इससे बात कर लेंगे, मिल जाएगा। हमारी अपनी विरासत 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' इस कार्यक्रम को आज हम इस कार्यक्रम के माध्यम से launch कर रहे हैं और प्रयास शुरू में ये है। आपने देखा होगा देश में हर किसी को ग्लोबल बनने का, आवश्यकता भी है मैं इसका विरोधी नहीं हूं।

एक राज्य रूस के एक राज्य के साथ तो जुड़ जाएगा, एक शहर अमेरिका के एक शहर से तो जुड़ जाएगा। लेकिन मेरे अपने देश में मैं किसी शहर से जुड़ूँ, मैं अपने ही देश में किसी राज्य से जुड़ूँ, मैं अपने ही देश में किसी यूनिवर्सिटी से जुड़ूँ, इन चीजों को हम क्यों नहीं करते। ये सहज चीजें हैं जो ताकत बढ़ाती हैं। आज जिन छह राज्यों ने दूसरे के राज्य के साथ समझौता किया है, उसका मतलब हुआ कि एक साल के लिए ये राज्य उस राज्य के साथ अलग-अलग प्रकार के ऐसे काम करेंगे ताकि दोनों एक-दूसरे को भली-भांति समझे, सहयोग करे और विकास की यात्रा में सहयात्री बने। कार्यक्रमों का स्वरूप बड़ा बोझिल रखने की जरूरत नहीं है हल्का-फुल्का। मान लीजिए केरल ने महाराष्ट्र के साथ समझौता किया। या उड़ीसा और महाराष्ट्र हुआ शायद। मान लीजिए उड़ीसा और महाराष्ट्र ने समझौता किया है। क्या हम 2070 में महाराष्ट्र के स्कूलों और colleges से जो tourist जाएंगे। उनको कहेंगे कि भई 2070 में तो आप उड़ीसा जरूर जाएंगे। उड़ीसा से जो जाएंगे 2070 में tour के लिए, tour में तो जाते ही हैं, आप इस बार महाराष्ट्र जाएंगे। फिर ये भी तय कर सकते हैं कि ये यूनिवर्सिटी उस जिले में गई तो ये यूनिवर्सिटी उस जिले में जाएगी, जोड़ सकते हैं।

पहले जाते थे तो धर्मशाला या होटल में रहते थे इस बार तय करे कि नहीं इस योजना के तहत आए हो, 100 student आए हैं। हमारे इस कॉलेज के 100 student के घर में आपके 100 लोग रहेंगे। 100 परिवार। और जब घर में रहेंगे तो सुबह कैसे उठते हैं, कैसे पूजा करते हैं, कैसे खाना खाते हैं, क्या variety होती है, मां-बाप के साथ कैसा व्यवहार। सब चीजें वो अपने आप जीने लगेगा। अब इसके लिए खर्चा भी कम हो जाएगा tour से। खर्चा मेरे ध्यान में जरा जल्दी आता है।

अब मुझे बताइए। अभी इन दिनों मैंने देखा है कि पूरे देश में देशभक्ति का एक भाव प्रखर रूप से बढ़ता है। हर कोई दीवाली का दीया जलाता है लेकिन उसको उस देश का जवान दिखता है। देश के जवानों की शहदात दिखती है भाव पैदा हुआ है। क्या हम पांच अच्छे गीत। अब महाराष्ट्र के लोग स्कूलों में पांच गीत एक साल में उड़िया भाषा में गाना शुरू करे और उड़िया भाषा पढ़ने वाले, उड़ीसा वाले पांच मराठी गीत गाना शुरू करें तो जब मिलेंगे तो भाव क्या जगेगा आप खुद ही बता दीजिए। हमारी एक कहावत है कि किसी भाषा में हम बोलते होंगे लेकिन आपने देखा होगा कि हमारी कहावतों का जो central thread होता है वो common होता है। शब्द अलग होंगे, अभिव्यक्ति अलग होगी लेकिन जब सुनेंगे और अर्थ समझेंगे तो पता है, अच्छा ये कथा, कहावत तो हमारे हरियाणवी में भी है यार, हम भी तो कभी-कभी बोलते हैं। इसका

मतलब कि हमें जोड़ने वाली ताकत तो पड़ी है। एक बार पता चल जाता है यार तुम भी तो वही बात करते हो जो मैं करता हूँ। मतलब तुम और मैं भाषा अलग हो लेकिन अलग नहीं है। पहनावा अलग हो लेकिन अलग नहीं है, खान-पान अलग हो लेकिन अलग नहीं है। हम एक हैं। ये अपने आप पैदा होगा।

देश में बिखराव के लिए बहुत रास्ते खोजे गए हैं एकता को तो हमने taken for granted मान लिया और उसके कारण बिखराव ने क्या बर्बादी लाई है उस पर हमारा ध्यान नहीं गया। 50 साल में इतनी बुराइयों को हमने अपने अंदर प्रवेश करने दिया है कि वो बुरा है, वो भी पता नहीं चलता। इतनी हद तक घुस गया है। तब जाकर के हमें प्रयत्नपूर्वक एकता वाली जितनी चीजें हैं उनको पकड़ना होगा और मैं इसको सिर्फ स्कूल, कॉलेज तक सीमित रखना नहीं चाहता हूँ। मान लीजिए उड़ीसा के किसान मछली के काम में बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। छोटे-छोटे तलाब में भी अच्छी मछली तैयार करते हैं, अच्छा मार्केट मिलता है तो महाराष्ट्र में भी तो छोटे-छोटे तलाब में मछली पैदा करने वालों को आकर के सिखा सकते हैं। महाराष्ट्र के लोग उड़ीसा में जाकर के अच्छी मछली, ज्यादा मछली कैसे होती हैं सीख सकते हैं सिखा सकते हैं। आर्थिक दृष्टि से भी लाभदायक है। मान लीजिए वो उनकी खेती पैड़ी, चावल की खेती करने का उनका तरीका है। वहां ज्यादा पानी है, यहां पर चावल की खेती करने की दिक्कत है क्या उनको कम पानी से चावल की खेती करना सिखाया जाए। और उनकी ज्यादा yield है वो क्या के किसानों को दिखाया जाए। agriculture revolution का वो कारण बन सकता है कि नहीं बन सकता है। बिना किसी यूनिवर्सिटी की मदद के दो क्षेत्र के किसान अपने अनुभवों को share करे तो हो सकता है कि नई चीज दुनिया को दे सके।

फिल्मों में, आज तो dubbing हो सकता है, कोई बड़ा महंगा भी नहीं होता है। अगर मान लीजिए महाराष्ट्र उड़ीया फिल्मों का फेस्टिवल करे। बॉलिवुड वालों को परेशानी नहीं होगी न, लेकिन करे। मुंबई में मत करना, कहीं और करना। करे मानो और उड़ीसा वाले मराठी फिल्मों को करे। भाषा को सहज समझा जाएगा। कभी उड़ीसा और महाराष्ट्र के सभी विधायकों का संयुक्त सम्मेलन हो सकता है क्या। और सिर्फ दोनों राज्यों की अच्छाईयों पर चर्चा करे, उड़ीसा के विपक्ष दल वालों को भी अच्छाई बोलनी पड़ेगी, महाराष्ट्र के विपक्षी दल को भी अच्छाईयां बोलनी पड़ेगी। सब मिलकर के अच्छाई की बात करेंगे तो अच्छाई की ओर जाने का रास्ता खुल जाएगा।

मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि हमारे देश में एक दूसरे से सीखना, पाना, समझना बहुत कुछ है। हमारा ज्ञान, हमारी अनभिज्ञता ये हमारी सबसे बड़ी रूकावट बन चुकी है। 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' एक जन आंदोलन में परिवर्तित करना है। विशेष रूप से परिवर्तित करना है। आज सरदार साहब की जन्मजयंती पर इस महा अभियान का भी आरंभ हो रहा है। सिर्फ और सिर्फ जोड़ने के लिए है और जोड़ने के लिए कोई नया एकता का इंजेक्शन नहीं देना है। राख लगी है सिर्फ उसको निकालकर के ज्वाला को प्रज्ज्वलित करना है, कोई चेतना को प्रज्ज्वलित करना है। उसी बात को लेकर के मैं खासकर के आपसे तो आग्रह करूंगा कि आप जरूर जल्दी होगा तो भी जरूर देखकर जाइए प्रदर्शनी को, और भी लोगों को प्रेरित करें। और इस प्रदर्शनी को सिर्फ student देखें ऐसा नहीं है। समाज के प्रबुद्ध लोग परिवार के साथ आने की आदत बनाए, उन्हें पता चले कि ये महापुरुष कौन थे, क्या-क्या करते थे। और जो जीवन जीकर के गए हैं, उससे बड़ी प्रेरणा नहीं होती है। मुझे विश्वास है कि ये प्रयास न सिर्फ सरदार साहब को अंजलि है लेकिन सरदार साहब ने जो हमें रास्ता दिखाया है उस रास्ते पर चलने का एक प्रमाणिक प्रयास है।

मैं फिर एक बार पार्थसारथी जी, उनकी पूरी टीम को इस भगीरथ कार्य के लिए बधाई देता हूँ। जैसे आज आप एक म्यूजियम देख रहे हैं, मैंने एक प्रयास शुरू किया है, आजादी के आंदोलन की बातें। सचमुच में बताता हूँ हमने देश के नागरिकों के साथ बहुत अन्याय किया है। आजादी का आंदोलन नेताओं का आंदोलन नहीं था जी। आजादी का आंदोलन जन सामान्य का आंदोलन था। बहुत कम लोगों को मालूम होगा कि 1857 में इस देश के tribal ने बिरसा मुंडा समेत जितना बलिदान इस देश के आदिवासियों ने दिया है हम कल्पना नहीं कर सकते। लेकिन न आपमें से किसी को पढ़ाया गया होगा न किसी को पता होगा। हमने सोचा है शुरुआत में हर राज्य में जहां-जहां आदिवासी जनसंख्या और आदिवासियों से जुड़ी घटनाएं हैं, एक Virtual museum आजादी के आंदोलन में आदिवासियों का योगदान, इस पर हम बनाएंगे। इस देश के लोगों ने हमें इतना सारा दिया है। हम उन चीजों को जानने के लिए प्रयास करें। धीरे-धीरे मैं इन चीजों और आगे बढ़ाना चाहता हूँ और technology के कारण ये चीजें कम खर्च में हो सकती हैं, छोटी जगह में हो सकती हैं। और आने वाला व्यक्ति अपने सीमित समय में भी बहुत सी चीजों को काफी अच्छी तरह अनुभव कर सकता है। उड़ी होने के कारण और ज्यादा लाभ ले सकता है। interactive होने के कारण बच्चों के लिए वो शिक्षा का कारण बन सकता है। इस 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' में मेरी कल्पना यह है कि राज्य अपने राज्य से संबंधित minimum 5000 questions का एक data bank बनाएं। राज्य के संबंध में सवाल हो उसमें, जवाब भी हो, ऑनलाइन available हो कि भई राज्य का सबसे पहला हॉकी player कौन था, राज्य का सबसे पहला कबड्डी player कौन था, National player कौन-कौन है? कौन-सी इमारत

कब किसने बनाई थी? छत्रपति शिवाजी महाराज कहां रहते थे क्या? सारे इतिहास हो, लोक-कथाएं हो, 5000 सवालों का बैंक। फिर उसका quiz competition करे, state में भी करे। अब मान लीजिए महाराष्ट्र के 5000 सवालों का quiz bank है, उड़ीसा के 5000 सवालों का quiz bank है। महाराष्ट्र के बच्चे उड़ीसा के quiz competition में आ जाए, उड़ीसा के बच्चे महाराष्ट्र के quiz competition में भाग ले। अपने आप दोनों राज्यों के बच्चों को उड़ीसा भी समझ आ जाएगी, महाराष्ट्र भी समझ आ जाएगी। ये पूरे देश में, लाखों सवालों का बैंक बन सकता है जी, जो सहज रूप से। जो क्लासरूम में नहीं पढ़ाया जा पाता वो पा सकते हैं। तो एक बड़े व्यापक फलक पर और जिसमें Digital world का ज्यादा उपयोग करते हुए 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' चलाने का प्रयास है।

मैं फिर एक बार इस प्रयास को करने वाले सभी लोगों को बधाई देता हूं। सरदार साहब को आदर पूर्वक नमन करता हूं अंजलि देता हूं और देश की एकता के लिए काम करने के लिए देशवासियों से प्रार्थना करता हूं। धन्यवाद।

अतुल कुमार तिवारी/ हिमांशु सिंह/ मनीषा

पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय

22-अक्टूबर-2016 22:57 IST

वडोदरा, गुजरात में 22 अक्टूबर, 2016 को सामाजिक अधिकारिता शिविर में प्रधानमंत्री का सम्बोधन

आज वडोदरा उसके मिजाज में है। मुझे यहां आने में थोड़ा विलंब हुआ उसका कारण मैं देर से नहीं आया था पर एरपोर्ट से यहां तक पूरा वडोदरा (वडोदरा के लोग) रोड पर था। मेरा सौभाग्य था कि वडोदरा के नगर जनो के दर्शन का मुझे अवसर मिला और विशाल संख्या में आपने यहां आकर मुझे आशीर्वाद दिये इसके लिए मैं आप सबका हृदयपूर्वक आभार व्यक्त करता हूँ।

आज वडोदरा में सरकार के दो कार्यों में आने का मुझे अवसर प्राप्त हुआ। एक तो वडोदरा में अत्यंत आधुनिक एरपोर्ट का लोकार्पण था और यह सामान्य एयरपोर्ट नहीं है। जिस टेक्नोलोजी से, संसाधनों से पर्यावरण की फिक्र करके बनाया हुआ यह विशिष्ट प्रकार का एयरपोर्ट है। हिन्दुस्तान में ऐसा एक एयरपोर्ट केरल में बना और दूसरा आज वडोदरा के आंगन में लोकार्पण हुआ। दूसरा अत्यंत महत्व का कार्यक्रम और मेरे सामने पांच-सात कार्यक्रमों के प्रपोजल पड़े हो तो मेरे स्वभाव के मुताबिक मैं दिव्यांग के कार्यक्रम को प्रधानता देता हूँ। निर्दोष बाल-बच्चों को मिलना, उनके परिवार जनो ने ईश्वर का प्रसाद समझकर इन बच्चों का जो पालन पोषण की होती है, एक तरह की तपस्या की होती है। इसलिये मुझे इस दिव्यांगजनो के माता-पिता को भी प्रणाम करने का अवसर मिलता है की जिन्होंने अपने संतान के लिए खुद के जीवन को और उनके सपनों की आहुति दे दी है। मां-बाप कहीं जा नहीं सकते, संतान को अकेले रख नहीं सकते। उन परिवारों को देखे तो पता चलता है की परिवार कितनी तपस्या करता है और यह जब देखते हैं तब समाज के तौर पर, सरकार के तौर पर हमारी जिम्मेदारी बनती है की परिवार के इस काम में हम भी मददगार हो, उनकी थोड़ी जिम्मेदारी हम भी उठाये और उस पवित्र भाव से यह दिव्यांगजनो के बीच मेरी सरकार आती है, मैं आता हूँ और यह सेवा करने का अवसर प्राप्त होता है। इसके पीछे मेरे मन में एक विचार है, खयाल है। यह अवसर सहायता का अवसर नहीं है, साधन सहायता का अवसर नहीं है, यह तो इसका एक अल्प भाग है। पर इस लाखों लोगों के कार्यक्रम के द्वारा सवा सो करोड़ देशवासीयों के मनमें दिव्यांगजनो के प्रति एक जिम्मेदारी का अहसास कराना। जिसके घर में दिव्यांग व्यक्ति है सिर्फ उनकी जिम्मेदारी नहीं है पर यह पूरे समाज की जिम्मेदारी है, पूरे राष्ट्र की जिम्मेदारी है उस वातावरण का निर्माण करने का मेरा एक प्रयास है। इस मुद्दे पर एक देश के तौर पर जाने-अनजाने हम लोग उदासीन हैं।

सरकारी ईमारतें बनी हो और अगर वहां कोई दिव्यांगजन को आना हो तो उनके लिये भी यही व्यवस्था होती है जो मजबूत शरीर वाले लोगों के लिये होती है। अब यह कैसे जायेंगे वहां? हमने एक सुगम्य योजना बनाई, सरकारी ईमारतों को आग्रह किया है, रातों रात पैसे ना आये यह समझ सकते हैं, पर अब ईमारतें बने तो, रेलवे प्लेटफार्म बने तो, बस स्टेशन बने तो उसमें एक व्यवस्था ऐसी भी होनी चाहिये कि जिससे दिव्यांगजन सरलता से कहीं जा सके और मेरा अनुभव यह कहता है कि लोगों को इसमें कोई विरोध नहीं होता है, कोई परेशानी नहीं होती है बस यही कहते हैं कि साहब पहले किसी ने बताया नहीं था, आपने बता दिया अब हम कर देंगे।

धीरे-धीरे हम यह वातावरण स्कूल हो, कोलेज हो, होस्पिटल हो, सरकारी जगह हो वहां जो भी व्यवस्था बनाये उसमें दिव्यांगों के लिए हमारे दिमाग में चिंतन होना चाहिये। आर्किटेक्चर कोलेज को भी पता होना चाहिये की उनके यहां से जो नये आर्किटेक्चर तैयार होंगे उनकी डिजाइन में यह व्यवस्था हो। यह एक जन-आंदोलन खड़ा करना पड़ेगा और अगर यह जन आंदोलन हम करेंगे तो काफी व्यवस्थाएं विकास ले सकती है और एकबार दिव्यांगजन के लिए समाज का नजरिया बदले, कोई दिव्यांगजन अगर जा रहा हो और चार-पांच युवान खड़े हो जाये और उनको रास्ता दे तब सम्मान का भाव उनमें आता है कि यह देश, यह समाज और मेरे आसपास के लोग मेरे लिए जागृत हैं।

जबसे सरकार में यह व्यवस्था बनी है, पिछली सरकारों ने भी यह दिशा में काम किया है पर आपको जान कर आश्चर्य होगा की 1992 से इस प्रकार के कामों की शुरुआत हुई। 1992 से 2014 तक इस प्रकार से दिव्यांगजनो को सहायता पहुंचाने के सिर्फ 56 कार्यक्रम हुए थे। दो साल में यह सरकार बनने के बाद साडे चार हजार ऐसे कार्यक्रम किये गये और देशभर में से खोज खोज करके अब तक साडे पांच लाख दिव्यांगजनो को सीधी सहायता मुहैया करा दी गयी है। सिर्फ योजना बनाना नहीं सरकार के सभी अंग संवेदनशील हो, योजनाएं गरीब के घर, दलित के घर, वंचित के घर..उसके घर तक पहुंचे इसके लिए भारत सरकार पूरी तरह आग्रही है और परिणामकारी है।

हमारे दिव्यांगजनों के लिये जो साधनों की जरूरी हो उस साधन बनाने के लिए सरकार का एक काम है जिसमें ईनोवेशन होता है। आपको आश्चर्य होगा की वह सिर्फ नाम का रह गया था, यह सरकार ने उसको पुनःजीवित किया, नये-नये इंजीनीयर को आमंत्रित किया और जो संस्था बंद हो गई थी उसमें नये नये ईनोवेशन हुए, नयी नयी चीजें बनने लगी और अब काफी सस्ते भावमें परिवार में भी अगर किसी को कुछ खरीदना हो तो खरीद सके ऐसी व्यवस्था करी। कहने का मतलब यह है की एक सरकार के तौर पर समाज के इस वर्ग की भी चिंता, उनको भी उतनी ही प्राथमिकता और उसका परिणाम है की आज समग्र डिपार्टमेंट भारत सरकार के मध्य में आ गया है। दलित, पीड़ित, वंचित दिव्यांगजनों के लिये यह समग्र डिपार्टमेंट को प्राणवान बनाने का बीड़ा सरकार ने उठाया है और दो साल के कम समय में यह करने में हम सफल हुए हैं।

सरकार कोई नियम बनाये की अब सरकार में दिव्यांगजनों को नौकरी मिलेगी। अखबार में हेडलाईन आती है, सरकार की वाहवाही भी होती है, चारो ओर प्रशंसा हो। सबको अच्छा लगे। आप को जानके आश्चर्य और आघात लगेगा। जब मैं प्रधानमंत्री बनके दिल्ली गया, भारत सरकार की कमान संभाली, तब सबसे पहले मैंने जांच करने की सूचना दी। मैंने पूछा के भारत सरकार में दिव्यांगजनों के लिये पद तो है, लेकिन उसमें से कितने स्थान रिक्त है, खाली है? सरसरी नजर से दिखा था, बारीक जांच नहीं की थी, सिर्फ सरसरी नजर डाली थी। मैं प्रारंभ के दिनों की बात कर रहा हूं। बड़ौदा से, आप के यहां से सांसद बनके दिल्ली गया और प्रधानमंत्री पद की जिम्मेदारी संभाली, उस दिनों की बात कर रहा हूं। तकरीबन 16,500 पद, जो दिव्यांगजनों के लिये थे, वो रिक्त थे, खाली थे।

मैंने हमारे मंत्रीमंडल के साथी सदस्य, मंत्री और डिपार्टमेंट के अफसरों को कहा कि, सर्वप्रथम भर्ती करो, इस रिक्त स्थान को भरो। आज मैं संतोषपूर्वक कहता हूं कि तकरीबन 14,500 पद के लिये भर्ती प्रक्रिया संपन्न हो गई है और रिक्त स्थान पर आज दिव्यांगजन कार्यरत है। हम सिर्फ इस प्रकार के अवसर पर साधन सहायता ही नहीं करते। उनके के लिये काम भी कर दिखाते हैं।

आप को आश्चर्य होगा की यहां दो बहन मेरे भाषण को दिव्यांगजनों के लिये, जो लोग सुन नहीं सकते हैं, उनके लिये उनकी भाषा में, सांकेतिक भाषा में मेरे भाषण को समजा रही है, प्रस्तुत कर रही है। लेकिन हमारा देश विशाल है। राजकोट में कोई बहन अलग प्रकार से संकेत करके पढ़ाती है, मुंबई में दूसरी तरीके के, दिल्ली में तीसरे तरीके के, कोलकाता में चौथे तरीके से - कहने का अर्थ है कि हर राज्य ने अपनी-अपनी निशानी, संकेत गढ़ लिये हैं, विकसित किये हैं।

कहने का अर्थ है कि अगर अहमदाबाद का कोई दिव्यांग अगर दिल्ली जाये तो उसे पता नहीं चलता कि ये क्या कहते हैं? क्योंकि निशानी या संकेत बदल जाते हैं। अब आप ही मुझे बताये कि इतने विशाल देश में दिव्यांगजनों के लिये, निशानी की भाषा, सांकेतिक भाषा एकसमान होनी चाहिये के नहीं? हिंदुस्तान के किसी भी कोने भी अगर हमारा दिव्यांग भाई-बहन जाये और वो निशानी करे, तो सामनेवाले को समझ में आना चाहिये कि नहीं? मुझे कहने में शरम आती है, मुझे माफ किजियेगा, यह काम भी इस देश में नहीं हुआ था। इस सरकार ने आकर देश के सभी दिव्यांगजनों के लिये एक समान भाषा बनाना तय किया, उसके लिये कानून बनाने का फैसला लिया। उस की तालीम की व्यवस्था की। किसी एक विषय पर जब गहन पड़ताल करते हैं, उस में डूब जाते हैं, तो समस्या का समाधान किस तरह से आता है, वो हमने देखा है।

भाईयो और बहनो,

आज संपूर्ण विश्व में एक बात की प्रशंसा हो रही है। चारो ओर गौरवगान हो रहा है। किस बात पर? किस बात पर? किस बात पर प्रशंसा हो रही है? अरे, मुझे सुनाई दे इतनी जोर से तो बोलो। पूरी दुनिया में किस बात की प्रशंसा हो रही है? किस बात की? अरे प्यारो, संपूर्ण विश्व ये कहा रहा है, आर्थिक विकास की दुनिया में, दुनिया के जो बड़े-बड़े अर्थतंत्र हैं, उसमें सबसे ज्यादा रफ्तार से आगे बढ़ती ईकोनोमी कोई है, तो वो हिंदुस्तान की है दोस्तो। संपूर्ण विश्व में सबसे ज्यादा रफ्तार से विकास करी रही ईकोनोमी हमारे भारत की है। हमारे देश में निरंतर दो साल सूखा पड़ने के बावजूद, वर्ल्ड बैंक हो, आईएमएफ हो, क्रेडिट रेटिंग एजेन्सी हो, सभी एक सुर के साथ कह रहे हैं कि भारत का विकास जबरदस्त रफ्तार से हो रहा है। सभी समस्याओं का समाधान विकास है। और विकास के मार्ग से ही निरक्षरता दूर होगी, बीमारी भी दूर होगी, गरीबी भी दूर होगी और दुनिया के समृद्ध राष्ट्रों की तुलना में भारत भी उन्नत सर के साथ खड़ा होगा।

जरा साल 2014 के दिनों को याद करो, 2014 के दिनों को। 2013 के दिनों को। अगर भूल गये हो तो अखबार निकाल के देख लेना। हेडलाइन्स क्या थी - इतने करोड़ का घोटाला, कोयला खनन में इतने करोड़ का घोटाला, स्पेक्ट्रम की नीलामी में इतने करोड़ का घोटाला...यही सभी हेडलाइन्स बनती थी। सही ना? जब से आपने मुझे जिम्मेवारी सुपुर्द की है, आज तकरीबन ढाई साल हो गये हैं, आज खबर दिव्यांगजनों के भले कामों की बनती है। आज दुनिया में भारत के अर्थतंत्र के विकास की खबरे आ रही हैं। आज प्रगति की खबरे सुनने को मिलती हैं। भ्रष्टाचार के सामने बड़बोलापन दिखाये बिना मैंने एक अभियान शुरू किया है, एक लड़ाई का आगाज किया है। छोटी छोटी चीजों को, बड़ी बड़ी चीजों की बात नहीं

करता, वो किसी और दिन कहूंगा, आधार के माध्यम से, जनधन एकाउंट के माध्यम से, सरकार के अनुदान को सीधा लाभार्थी के खाते में डालना शुरू किया, किसी बिचौलये के बिना, दलाल के बिना। अब सहायता उसी को मिलती है, जिस को मिलनी चाहिये। सच्चे लाभार्थी को ही अनुदान मिलता है। बनावटी लाभार्थी के लिये कोई अवकाश नहीं रखा।

आप को पता है कि इसका क्या असर हुआ है? अभी राज्यों को इस काम के लिये तैयार कर रहा हूँ। लेकिन जो शुभ प्रारंभ हुआ है। हमारा प्रयास सच्चे लाभार्थी को उसका हक मिले, बनावटी लाभार्थी या गलत इन्सान उसका फायदा उठा न जाये उसका खयाल रखने का है। हमने सिर्फ इतना खयाल रखा और आप जानते हो कि रु. 36,000 की बचत हुई है। रु. 36,000 करोड़। इतनी राशि की बरबादी गैस के सिलिन्डर में, छात्रवृत्ति में, पेन्शन में शायद हो रहा था। कोई पूछनेवाला ही नहीं था।

हमारे पहले सरकार जो भी रही, उसने घोटाले किये होंगे। अब अगर गाड़ी पटरी पर लानी हो तो हम थोड़ा समय दे। इसलिये हमने थोड़ा समय दिया। लेकिन हमने माफी नहीं दी। पूरा टेक्स लिया, पूरा दंड लिया, लेकिन तक प्रदान की, लाइन पर आने की। आप को आनंद होगा, हिंदुस्तान में इस प्रकार की योजना पहले भी प्रस्तुत की गई थी, लेकिन हमारी सरकार की विश्वसनीयता की बजह से रु. 65,000 करोड़ का काला धन बहार आया, देश के अर्थतंत्र के मुख्य प्रवाह में आया।

आप सोचो के 36,000 करोड़ का भ्रष्टाचार होता था, अनुचित व्यक्ति को मिलते थे, वो सही नागरिकों को मिलना शुरू हुआ। और रु. 65,000 करोड़ का काला धन। तकरीबन एक लाख करोड़। और ये एक लाख करोड़ भी कोई सर्जिकल स्ट्राइक करके एकत्र नहीं किये। ये सभी बिना सर्जिकल के। जिस दिन सर्जिकल स्ट्राइक की उस दिन कितना धन मिलेगा उसका अंदाज आप लगा सकते हो।

एक सच्ची सरकार, एक नेक सरकार, एक असरकारक सरकार, जनता जनार्दन के सुख और दुःख के प्रति समर्पित सरकार हो, तो कोई अवरोध उसके आड़े नहीं आ सकता और हिम्मत से, साहस के जनहित के कार्यों को अंजाम दिया जा सकता है - ये दिल्ली में हमारी सरकार ने दिखा दिया है। उसका लाभ हिंदुस्तान के हर कोने को मिल रहा है।

थोड़े समय से मैं गरीबों के लिये गैस के सिलिन्डर का प्रावधान करने में लगा हूँ। पहले किसी के घर में गैस का सिलिन्डर होता था तो वो बहुत सुखवाला परिवार समझा जाता था। उस परिवार की पहुँच ऊपर तक होगी ये माना जाता था। बेचारा गरीब इन्सान को तो सिलिन्डर के बारे में सोच भी नहीं सकता था। लोग सांसद के घर सिलिन्डर के लिये चिठ्ठी लिखवाने जाते थे। बड़ौदा के लोगों को इस समस्या का अहसास नहीं है, क्योंकि यहाँ तो पाईपलाइन से गैस आता है। गैस के सिलिन्डर नहीं मिलते थे। गरीब माताओं को चूल्हे पर धुएँ के बीच रसोई बनानी पड़ती थी। वैज्ञानिकों का दावा है की एक दिन में 400 सिगरेट जितना धुआँ गरीब माता के शरीर में जाता है। इस गरीब माता के स्वास्थ्य की चिंता कौन करे?

दिल्ली में हमारी सरकार ने तय किया की पाँच करोड़ परिवारों को, जिनके पास गैस कनेक्शन नहीं है, ये सरकार सामने से उनको गैस कनेक्शन देगी और उन गरीब माताओं को चूल्हे से, धुएँ से मुक्ति दिलायेंगे। उनके लिये हररोज अभियान चल रहा है। भारत सरकार ने दाहोद में प्रारंभ किया था, आज समग्र हिंदुस्तान में अभियान चल रहा है। इस सरकार के केन्द्र में इस देश का गरीब, पीड़ित, दलित, शोषित, वंचित है, आदिवासी भाई है और उनके कल्याण के लिये काम करनेवाली ये सरकार है।

आज दिव्यांगजनों को तकरीबन 10,000 लोगों को इस सहायता का लाभ मिलनेवाला है और हमारे गृहलोत जी ने कहा उस प्रकार से, संपूर्ण जानकारी वेबसाइट पर उपलब्ध है। लोग देख सकते हैं कि हमारे गाँव को वो दिव्यांग का नाम है, पर उसे सचमुच सहायता मिली है कि नहीं, वो देख सकते हैं। संपूर्ण पारदर्शिता हमारे सरकार की प्राथमिकता है। व्यापक जनसमाज के हितों के कार्यों को बल मिले इस प्रकार के कार्यों को हम कर रहे हैं।

मुझे आप सभी के बीच आने का अवसर मिला, बड़ौदा में आने से मुझे घर आने का अहसास होता है। जिंदगी के काफी महत्वपूर्ण साल बड़ौदा में बिताये हैं। शास्त्री पोल में रहता था। आज काफी पुराने परिचित परिवार मेरे सामने हैं। सालों तक आप के बीच रहा, आप के बीच काम करने का मौका मिला है। सालों तक इस संस्कार नगरी ने मुझे काफी कुछ सिखाया है। और वो सब आज इस देश की सेवा के लिये उपयोगी है। मैं इस नगरी का, इस राज्य का ऋणी हूँ। मेरे गुजरात के कोटी कोटी भाईओं का ऋणी हूँ क्योंकि उनके संस्कार की बदौलत आज भारत माता की उत्तम तरीके से सेवा करने का मौका मुझे मिला है। मैं इस धरती को नमन करता हूँ, इस संस्कार सरिता को नमन करता हूँ, यहाँ की महान परंपरा को वंदन करता हूँ।

मेरे साथ पूरी ताकात से बोलिये,

भारत माता की

जय

आवाज बुलंद किजिये,

भारत माता की

जय

भारत माता की जय

खूब खूब धन्यवाद...

अतुल कुमार तिवारी/शाहबाज हसीबी/सुधीर कुमार सिंह/ममता/निर्मल शर्मा

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

11-अक्टूबर-2016 21:58 IST

लखनऊ के ऐशबाग रामलीला मैदान में दुशहरा महोत्सव में प्रधानमंत्री द्वारा दिए गये भाषण का मूल पाठ

जय श्री राम, विशाल संख्या में पधारे प्यारे भाईयों और बहनों,

आप सबको विजयादशमी की अनेक-अनेक शुभकामनाएं। मुझे आज अति प्राचीन रामलीला, उस समारोह में सम्मिलित होने का सौभाग्य मिला है। हिन्दुस्तान की धरती का ये वो भू-भाग है, जिस भू-भाग ने दो ऐसे तीर्थरूप जीवन हमें दिए हैं- एक प्रभु राम और दूसरे श्री कृष्ण, इसी धरती से मिले। और ऐसी धरती पर विजयादशमी के पर्व पर आ करके नमन करना, इससे बड़ा जीवन का सौभाग्य क्या हो सकता है?

विजयादशमी का पर्व असत्य पर सत्य की विजय का पर्व है। आताताई को परास्त करने का पर्व है। हम रावण को तो हर वर्ष जलाते हैं, आखिरकार इस परम्परा से हमें क्या सबक लेना है? रावण को जलाते समय हमारा एक ही संकल्प होना चाहिए कि हम भी हमारे भीतर, हमारी सामाजिक रचना में, हमारे राष्ट्रीय जीवन में जो-जो बुराइयां हैं, उन बुराइयों को भी ऐसे ही खत्म करके रहेंगे। और हर वर्ष रावण जलाते समय हमने हमारी बुराइयों को खत्म करने के संकल्प को भी मजबूत बनाना चाहिए, और उसमें विजयादशमी के समय हिसाब-किताब भी करना चाहिए कि हमने कितनी बुराइयों को खत्म किया।

आज शायद उस समय का रावण का रूप नहीं होगा; आज शायद उस समय के जैसी राम और रावण की लड़ाई भी नहीं होगी, लेकिन हमारे भीतर अंतरद्वंद्व एक अविरल चलने वाली प्रक्रिया है, और इसलिए हमारे भीतर भी ये दशहरा जो शब्द है, उसका एक संदेश तो ये भी है कि हम हमारे भीतर की दस कमियों को हरे, उसको खत्म करें - दशहरा, उसको खत्म करें, जीवन को पतन लाने वाली जितनी-जितनी चीजें हैं, उस पर विजय प्राप्त किए बिना जीवन कभी सफल नहीं होता है। हर एक के अंदर सब कुछ समाप्त करने का सामर्थ्य नहीं होता है, लेकिन हर एक में ऐसी बुराइयों को समाप्त करने के प्रयास करने का सामर्थ्य तो ईश्वर ने दिया होता है, और इसमें समाज के नाते, व्यक्ति के नाते, राष्ट्र के नाते हमारे भीतर विचार के रूप में; आचार के रूप में; ग्रन्थियों के रूप में; बुरी सोच के रूप में; जो रावण बस रहा है, उसे भी हम लोगों ने समाप्त करके ही इस राष्ट्र को गौरवशाली बनाना होगा।

मैं इस समिति का इसलिए आभारी हूँ कि जैसे लोकमान्य तिलक जी ने गणेश-उत्सव को सार्वजनिक उत्सव बना करके सामाजिक चेतना जगाने के लिए एक अवसर के रूप में परिवर्तित किया था, आपने भी इस रामलीला के मंचन को सिर्फ पुरानी चीजों को भक्ति भाव से याद करने तक सीमित नहीं रखा, एक कौतुहलवश नई पीढ़ी देखने के लिए आ जाए, कलाकारों को अवसर मिल जाए, इसलिए नहीं किया। लेकिन आपने हर रामलीला के समय समाज के अंदर जो बुराइयां हैं, ऐसी कोई न कोई बुराइयां, या समाज में जो कोई अच्छाई उभारनी है, उस अच्छाई के ऊपर केन्द्रित करते हुए आपने इस रामलीला के मंचन की परम्परा खड़ी की है। मैं समझता हूँ कि अद्भुत और पूरे देश के लोगों ने प्रेरणा प्राप्त करने जैसा ये काम यहां की रामलीला के द्वारा हो रहा है। और उस रामायण के पात्रों के माध्यम से भी हम आधुनिक जीवन के लिए संदेश दे सकते हैं, सामर्थ्य है उसमें। और ये देश की विशेषता यही है कि हजारों साल से हमारे यहां हमारी सांस्कृतिक विरासत को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाने की यही तो सबसे बड़ी व्यवस्था रही है कि कथा के द्वारा, कला के द्वारा हमने इस परम्परा को जीवित रखा है, और उसका अपना एक समाज जीवन में महामूल्य होता है।

इस बार का मंचन का विषय रहा है आतंकवाद। आतंकवाद ये मानवता का दुश्मन है, और प्रभु राम मानवता का प्रतिनिधित्व करते हैं; मानवता के उच्च मूल्यों का प्रतिनिधित्व करते हैं; मानवता के आदर्शों का प्रतिनिधित्व करते हैं; मर्यादाओं को रेखांकित करते हैं; और विवेक, त्याग, तपस्या, उसकी एक मिसाल हमारे बीच छोड़ करके गए हैं। और इसलिए और आतंकवाद के खिलाफ सबसे पहले कौन लड़ा था? कोई फौजी था क्या? कोई नेता था क्या?

रामायण गवाह है कि आतंकवाद के खिलाफ सबसे पहले लड़ाई किसी ने लड़ी थी तो वो जटायु ने लड़ी थी। एक नारी के सम्मान के लिए रावण जैसी सामर्थ्यवान शक्ति के खिलाफ एक जटायु जूझता रहा, लड़ता रहा। आज भी अभय का संदेश

कोई देता है तो जटायु देता है। और इसलिए सवा सौ करोड़ देशवासी- हम राम तो नहीं बन पाते हैं, लेकिन अनाचार, अत्याचार, दुराचार के सामने हम जटायु के रूप में तो कोई भूमिका अदा कर सकते हैं। अगर सवा सौ करोड़ देशवासी एक बन करके आतंकवादियों की हर हरकत पर अगर ध्यान रखें, चौकन्ने रहें तो आतंकवादियों का सफल होना बहुत मुश्किल होता है।

आज से 30-40 साल पहले जब हिन्दुस्तान दुनिया को हमारी आतंकवाद के कारण जो परेशानियां हैं, उसकी चर्चा करता था तो विश्व के गले नहीं उतरता था। 92-93 की घटना मुझे याद है, मैं अमेरिका के State Department के State Secretary से बात कर रहा था और जब मैं आतंकवाद की चर्चा करता था तो वो मुझे कह रहे थे ये तो आपका Law & Order problem है। मैं उनको समझा रहा था कि Law & Order problem नहीं है, आतंकवाद कोई और चीज है, उनके गले नहीं उतरता था। लेकिन 26/11 के बाद सारी दुनिया के गले उतर गया है आतंकवाद कितना भयंकर होता है। और कोई माने कि हम तो आतंकवाद से बचे हुए हैं तो गलतफहमी में न रहें, आतंकवाद को कोई सीमा नहीं है, आतंकवाद को कोई मर्यादा नहीं है, वो कहीं पर जा करके किसी भी मानवतावादी चीजों को नष्ट करने पर तुला हुआ है। और इसलिए विश्व की मानवतावादी शक्तियों का आतंकवाद के खिलाफ एकजुट होना अनिवार्य हो गया है। जो आतंकवाद करते हैं उनको जड़ से खत्म करने की जरूरत पैदा हुई है। जो आतंकवाद को पनाह देते हैं, जो आतंकवाद को मदद करते हैं, अब तो उनको भी बख्शा नहीं जा सकता है। पूरा विश्व तबाह हो रहा है, दो दिन से हम टीवी पर सीरिया की एक छोटी बालिका का चित्र देख रहे हैं; दो दिन से हम सीरिया की एक छोटी बालिका का चित्र देख रहे हैं टीवी पर, आंख में आंसू आ जाते हैं। किस प्रकार से निर्दोषों की जान ली जा रही है। और इसलिए आज जब हम रावण वध और रावण को जला रहे हैं, तब पूरे विश्व ने, सिर्फ भारत ने नहीं, सिर्फ मुझे और आपने नहीं, पूरे विश्व की मानवतावादी शक्तियों ने आतंकवाद के खिलाफ एक बन करके लड़ाई लड़नी ही पड़ेगी। आतंकवाद को खत्म किए बिना मानवता की रक्षा संभव नहीं होगी।

भाइयो, बहनों जब मैं समाज के भीतर हमारे यहां जो बुराइयां हैं, उसको भी हमें नष्ट करना होगा, और यही विजयादशमी से हमें प्रेरणा लेनी चाहिए। रावण रूपी वो बातें छोटी होंगी, लेकिन वो भी एक प्रकार की रावण रूप ही है। दुराचार, भ्रष्टाचार, हमारे समाज को तबाह करने वाले ये रावण नहीं हैं तो क्या हैं? इसको भी हमें खत्म करने के लिए देश के नागरिकों को संकल्पबद्ध होना पड़ेगा।

गंदगी, ये भी रावण का ही एक छोटा सा रूप ही है। ये गंदगी है जो हमारे गरीब बच्चों की जान ले लेती है। बीमारी गरीब परिवारों को तबाह कर देती है। अगर हम गंदगी से मुक्ति पाएं, गंदगी रूपी रावण से मुक्ति पाएं, तो देश के करोड़ों-करोड़ों परिवार जो अल्पायु में मौत के शरण हो जाते हैं; बीमारी के शिकार हो जाते हैं; उनको हम बचा सकते हैं। अशिक्षा, अंधश्रद्धा, ये भी तो समाज को नष्ट करने वाली हमारी कमियां हैं। और उससे भी मुक्ति पाने के लिए हमें संकल्प करना होगा।

आज एक तरफ हम विजयादशमी का पर्व मना रहे हैं, तो उसी समय पूरा विश्व आज Girl Child Day भी मना रहा है। आज Girl Child Day भी है। मैं जरा अपने-आप से पूछना चाहता हूं, मैं देशवासियों से पूछना चाहता हूं, कि एक सीता माता के ऊपर अत्याचार करने वाले रावण को तो हमने हर वर्ष जलाने का संकल्प किया हुआ है, और जब तक पीढ़ियां जीती रहेंगी रावण को जलाते रहेंगे क्योंकि सीता माता का अपहरण किया था; लेकिन कभी हमने सोचा है कि जब पूरा विश्व आज Girl Child Day मना रहा है तब हम बेटे और बेटी में फर्क करके मां के गर्भ में कितनी सीताओं को मौत के घाट उतार देते हैं। ये हमारे भीतर के रावण को खत्म कौन करेगा? क्या आज भी 21वीं शताब्दी में मां के गर्भ में बेटियों को मारा जाएगा? अरे एक सीता के लिए जटायु बलि चढ़ सकता है, तो हमारे घर में पैदा होने वाली सीता को बचाना हम सबका दायित्व होना चाहिए। घर में बेटा पैदा हो, जितना स्वागत-सम्मान हो, बेटी पैदा हो उससे भी बड़ा स्वागत-सम्मान हो, ये हमें स्वभाव बनाना होगा।

इस बार ओलंपिक में देखिए, हमारे देश की बेटियों ने नाम को रोशन कर दिया। अब ये बेटी-बेटे का फर्क हमारे यहां रावण रूपी मानसिकता का ही अंश है। शिक्षित हो; अशिक्षित हो, गरीब हो; अमीर हो, शहरी हो; ग्रामीण हो, हिन्दू हो; मुसलमान हो, सिख हो; इसाई हो, बौद्ध हो; किसी भी सम्प्रदाय के क्यों न हो; किसी भी आर्थिक पार्श्वभूमि के क्यों न हो; किसी भी सामाजिक पार्श्वभूमि के क्यों न हो, लेकिन बेटियां समान होनी चाहिए; महिलाओं के अधिकार समान होने चाहिए, महिलाओं को 21वीं सदी में न्याय मिलना चाहिए कि किसी भी परम्परा से जुड़े क्यों न हों; किसी भी समाज से जुड़े क्यों न हों, महिलाओं का गौरव करने का ये युग हमें स्वीकारना होगा। बेटियों का गौरव करना होगा; बेटियों को बचाना होगा। हमारे भीतर ऐसे जो रावण के रूप बिखरे पड़े हैं उससे इस देश को हमें मुक्ति दिलानी है। और इसलिए जब लक्ष्मण की नगरी में आया हूं, गोस्वामी तुलसीदास की धरती पर आया हूं। श्रीकृष्ण के जीवन में भी युद्ध था, राम के जीवन में भी युद्ध था, लेकिन हम वो लोग हैं जो युद्ध से बुद्ध की ओर चले जाते हैं। समय के बंधनों से, परिस्थिति की आवश्यकताओं से युद्ध कभी-कभी अनिवार्य हो जाते हैं, लेकिन ये धरती का मार्ग युद्ध का नहीं, ये धरती का मार्ग बुद्ध का है। और ये देश; ये

देश सुदर्शन चक्करधारी मोहन को युगपुरुष मानता है, जिसने युद्ध के मैदान में गीता कही; यही देश चरखाधारी मोहन, जिसने अहिंसा का संदेश दिया, उसको भी युगपुरुष मानता है। यही इस देश की विशेषता है कि दोनों तराजु पर हम संतुलन ले करके चलने वाले लोग हैं। और इसलिए हम युद्ध से बुद्ध की यात्रा वाले लोग हैं। हम हमारे भीतर के रावण को खत्म करने का संकल्प करने वाले लोग हैं। हमारे देश को सुजलाम-सुफलाम बनाने का संकल्प करके निकले हुए लोग हैं।

ऐसे समय अति प्राचीन ये रंगमंच जहां रामलीला होती हैं, अनेक पीढ़ियों के बालक कभी राम और लक्ष्मण के रूप में, मां सीता के रूप में इसी स्थान पर उनकी चरण-रज पड़ी होगी और वो पल वो इन्सान नहीं रहते; वो भक्ति में लीन हुए होते हैं, वो पात्र नहीं होते हैं; वो परमात्मा का रूप बन जाते हैं। उसी मंच पर आ करके आज इन सब रावणों के खिलाफ जो हमारे भीतर हैं, चाहे जातिवाद हो, चाहे वंशवाद हो, चाहे ऊंच-नीच की बुराई हो, चाहे सम्प्रदायवाद का जनून हो, ये सारी बुराइयां किसी न किसी रूप में बिखरा पड़ा रावण का ही रूप हैं। और इससे मुक्ति पाना, इसे खत्म करना, और एकात्म हिन्दुस्तान; एकरस हिन्दुस्तान; समरस हिन्दुस्तान इसी सपने को पार करने का संकल्प करके इस विजयादशमी के पावन पर्व पर हम बस प्रभु रामजी के हम पर आशीर्वाद बने रहें, मानवता के मार्ग पर चलने की हमें ताकत मिले, बुद्ध का मार्ग हमारा अन्तिम मार्ग बना रहे।

इसी एक अपेक्षा के साथ आप सबको विजयादशमी की बहुत-बहुत शुभकामनाएं। मेरे साथ पूरी ताकत से बोलिए जय श्रीराम। आवाज दूर-दूर तक जानी चाहिए। जय श्रीराम, जय श्रीराम, जय जय श्रीराम, जय जय श्रीराम।

अतुल कुमार तिवारी/ अमित कुमार / निर्मल शर्मा

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

01-नवंबर-2016 23:23 IST

हरियाणा के स्वर्ण जयंती उत्सव के शुभारम्भ पर प्रधानमंत्री के भाषण का मूल पाठ

आज हरियाणा अपनी स्वर्ण जयंती का प्रारम्भ कर रहा है। ऐसे महत्वपूर्ण अवसर पर सभी हरियाणा-वासियों को मेरी बहुत-बहुत शुभकामनाएं। जैसा मुख्यमंत्री जी ने बताया कि स्वर्ण जयंती का अवसर न किसी दल का है, न किसी सरकार का है; ये अवसर हर एक हरियाणवी का है।

व्यक्ति के जीवन में भी सालगिरह मनाना, कुछ विशेष अवसरों को मनाना, व्यक्ति को नए संकल्प लेने की प्रेरणा देता है। वैसे ही समाज को और राज्य को इस प्रकार के अवसर कुछ नया करने का संकल्प करने के लिए प्रेरणा देते हैं।

इस स्वर्णिम जयंती के कालखंड में मैं सब हरियाणावासियों से प्रार्थना करूंगा कि 1996 में हरियाणा बनाने के लिए जो बातें रखी गई हों, जो आंदोलन चलाए गए हों, जो विचार प्रस्तुत किए गए हों, उस समय के अखबार हों, उस समय की जानकारियां हों, एक बार उन सारी बातों को ले करके हर हरियाणवी ने सोचना चाहिए कि किस मकसद से चले थे; किस रास्ते पर चले थे; किस मंजिल को पाने के लिए निकले थे; कहां तक पहुंचे हैं; अभी और कितना चलना पड़ेगा; जल्द से जल्द पहुंचने के लिए क्या कर सकते हैं, ये लेखा जोखा करने का भी समय होता है।

बीते हुए 50 साल का गौरव गान, बीते हुए 50 साल का हर किसी का पुरुषार्थ-परिश्रम, संकल्प; उसने आज हरियाणा को यहां पहुंचाया है। लेकिन आज से 10 साल पहले जिस गति से चलते थे, बात चल सकती थी। गांव में खाट पर बैठ करके, हल्के-फुल्के चुटकलों के बीच, हरियाणा का व्यक्ति बड़ी सटीक बात बताने की ताकत रखता है। वो भली-भांति अपनी ग्रामीण भाषा में बड़ी गहरी बात बता देता है।

मेरा सौभाग्य रहा है धरती पर आप लोगों के बीच वर्षों तक काम करने का, और इसलिए मैं भली-भांति इन बातों से परिचित हूं। हरियाणा भले ही एक छोटा सा प्रदेश हो, लेकिन जीवन का कोई क्षेत्र ऐसा नहीं होगा, कि जिसमें हरियाणा के व्यक्ति के पसीने की महक न हो। वैसे तो लगता है हरियाणा के लोग ज्यादातर किसानों करने वाले हैं, लेकिन हरियाणा के लोग जहां व्यापार में पहुंचे हैं, और हिन्दुस्तान के कई राज्यों में हैं, उन्होंने व्यापार में भी अपना लोहा मनवा लिया है।

लोगों को लगता है कि हरियाणा के लोग गांव में किसानों करते हैं, लेकिन इस देश के हर दस जवान में से सेना में एक जवान हरियाणा का होता है। कोई इलाका ऐसा नहीं होगा जहां हरियाणा वालों ने देश के लिए बलिदान की कोई उत्तम से उत्तम अपनी पहचान न करवाई हो। और हरियाणा की ये भी विशेषता है कि स्वामी दयानन्द सरस्वती का प्रभाव हरियाणा में बहुत गहरा है। आपको सैंकड़ों परिवार मिलेंगे जहां आज भी स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का स्मरण करते ही उनकी आंखों में चमक आ जाती है। और यही धरती है जिस पर अनेक महापुरुषों के नामों की छाया अंकित है।

दुनिया में शायद युद्ध तो बहुत हुए होंगे, लेकिन शायद ही दुनिया में कोई ऐसा युद्ध होगा कि जहां युद्ध की भूमि पर जीवन-मृत्यु का खेल चलता हो, वहीं जीवन के आदर्शों की उत्तम से उत्तम और हजारों साल तक मार्गदर्शन करे, ऐसी गीता की रचना युद्धभूमि में हुई हो। ये अजोड़ घटना है, वरना चिन्तन-मनन शांतचित्त कोने में, भीतर डूबने के बाद कुछ बात निकलती है, लेकिन युद्धभूमि की विशेषता देखिए, युद्ध के मैदान में भी जीवन के आदर्शों का तत्त्वज्ञान परोसा जा सकता है, ऐसी ये धरती है। लेकिन जिसकी जितनी महानता है, उतनी ही उसकी महान जिम्मेवारियां भी हैं। मुझे हमेशा एक बात की पीड़ा रहती थी, कि ऐसा संस्कारी प्रदेश, ऐसा सामर्थ्यवान प्रदेश, हर समय नई बात को स्वीकार करने वाला प्रदेश, क्या कारण है कि मां के गर्भ में ही बेटियों को मार दिया जाता है?

मैं मनोहरलाल जी का अभिनंदन करना चाहता हूं, मैं हरियाणा के लोगों का भी अभिनंदन करना चाहता हूं, जब मैंने बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ के लिए हरियाणा की जनता से बेटियों के जीवन की रक्षा की भीख मांगी थी। और आज मैं संतोष के साथ कह सकता हूं, कि हरियाणा के लोगों ने इस भावना का आदर किया। आज पूरे देश में gender ratio की स्थिति में जो सुधार आने में, तेज गति से सुधार कोई ला रहा है, तो ये हरियाणा प्रदेश ला रहा है।

मैं उन माताओं का अभिनंदन करना चाहता हूँ, जिन्होंने बहु के गर्भ में जो बच्ची थी, सास के नाते; मां के नाते; उसकी रक्षा करने का संकल्प किया। मैं उन बुजुर्गों का आदर करता हूँ, जिन्होंने हरियाणा में अब बेटी को मरने नहीं देंगे, मारने नहीं देंगे, इस संकल्प को ले करके स्थिति सुधारने को नेतृत्व किया है। समाज के हर वर्ग को मेरे लिए स्वर्णिम जयंती का अवसर हरियाणा के इन सारे बुजुर्गों का, वरिष्ठजनों का, सर झुका करके नमन करने का मेरे लिए अवसर है। और ये हरियाणा की तो बेटियाँ हैं, जो सिर्फ हरियाणा का नहीं, पूरे हिन्दुस्तान की आन-बान-शान बनी हुई हैं। इस स्वर्णिम जयंती में हर हरियाणी संकल्प करे कि बेटी बचाने के मामले में अब हरियाणा में कोई कोताही नहीं बरती जाएगी, न बच्ची को मारने दिया जाएगा, बच्चियों को जन्म देने के अधिकार की रक्षा हर हरियाणवी करेगा। इससे बड़ा स्वर्णित जयंती का कोई अवसर नहीं हो सकता है।

मैं आज श्रीमान मनोहर लाल जी की सरकार को इस बात के लिए भी बधाई देता हूँ कि उन्होंने आज कुछ जिले open defecation free घोषित किए। आप कल्पना कीजिए 21वीं सदी के डेढ़ दशक तो बीच चुका, और आज भी हमारी माताओं, बहनों को गांव में खुले में शौच के लिए जाना पड़े, इससे बड़ी शर्मिन्दगी की बात क्या हो सकती है। और वो शर्म के मारे या तो सूरज के उगने से पहले जाती हैं शौच के लिए, या तो सूरज ढलने का इंतजार करती हैं। कितनी ही पीड़ा क्यों न हो दिनभर शर्म के मारे कहीं जा नहीं पाती हैं, इससे बड़ा जुल्म क्या हो सकता है, और इसलिए मैं हरियाणा वालों से अपेक्षा करता हूँ, मैं हरियाणा सरकार का अभिनंदन देते हुए करता हूँ कि अब हमारे गांव में कहीं पर भी, किसी को भी खुले में शौच जाने के लिए मजबूर होना नहीं पड़े। हो सके तो इसी समय हमने इस स्वर्णिम जयंती में पूरे हरियाणा राज्य को open defecation free कर देना चाहिए, खुले से इस खुले में होने वाले शौच से मुक्त कर देना चाहिए, और मुझे विश्वास है हरियाणा ये कर सकता है, कर सकता है।

आज हरियाणा ने पूरे देश को एक नई दिशा दी है। मैं इसके लिए मुख्यमंत्रीजी का, उनकी पूरी टीम का हृदय से अभिनंदन करता हूँ। उन्होंने केरोसिन free कुछ जिले बनाए जिनमें आठ, आठ जिले केरोसिन से मुक्त हो गए। अब ये समझ नहीं आ रहा था कि बिजली आ गई है, घर में गैस का कनेक्शन है, गैस का सिलेंडर है फिर भी केरोसिन का कोटा भी चल रहा है। वो तो केरोसिन ले नहीं रहा है, कोई और ले जाता है। कोई बिचौलिए, कोई दलाल, उसकी कालेबाजारी के खेल में डूबे हुए हैं। और वे केरोसिन को डीजल में मिला देते हैं, vehicle उससे चलाते हैं, पर्यावरण का नुकसान करते हैं, विदेशी मुद्रा का नुकसान हो रहा है।

मैंने पूरे देश की सभी सरकारों से आग्रह किया है कि आप ये जो भी होने वाला केरोसिन बचाओगे, उससे जितने पैसे बचेंगे, उससे ज्यादा पैसे मैं आपको दे दूंगा, लेकिन बचाओ। आज हरियाणा ने आठ जिले पूरी तरह kerosene free कर दिए और मुझे बताया गया कि मार्च महीने तक पूरे हरियाणा को केरोसिन के इस ये जो गोरखधंधे चल रहे थे, उससे मुक्त कर दिया जाएगा। स्वर्णिम जयंती का इससे बड़ा क्या अवसर हो सकता है।

मुझे इस बात की खुशी है कि स्वर्णिम जयंती का ये अवसर सरकारी कार्यक्रम नहीं बनाया गया है। इसे जनता का एक संकल्प का पर्व बना दिया गया है। जन-भागीदारी से हरियाणा कैसे आगे बढ़े, हर हरियाणी कुछ न कुछ योगदान करे। मेरे हरियाणा के प्यारे भाइयो-बहनों, इस स्वर्णिम जयंती के अवसर पर अगर हरियाणा का नागरिक एक कदम आगे बढ़े एक कदम, तो हरियाणा ढाई करोड़ कदम आगे बढ़ सकता है। एक हरियाणवी एक कदम आगे बढ़े तो हरियाणा ढाई करोड़ कदम आगे बढ़ सकता है। अगर एक बार हरियाणा ढाई करोड़ कदम आगे बढ़ जाए इस स्वर्णिम जयंती में, तो हिन्दुस्तान में किसी राज्य में दम है जो हरियाणा से आगे निकल सके?

क्या हरियाणा के लोगों ने संकल्प करना चाहिए कि नहीं करना चाहिए? हमें हरियाणा को नम्बर एक बनाना चाहिए कि नहीं बनाना चाहिए? हमारा जो सामर्थ्य है उसमें तो हम आगे हैं, लेकिन बहुत सी शक्तियाँ ऐसी हैं, जिसको अभी हम पहचान नहीं पाए हैं, हमारी उन शक्तियों को पहचानें, और हम, सिर्फ हमी आगे बढ़ें; ऐसा नहीं, ये दिल्ली, उसके चारों तरफ आप ही तो हैं, और अगर आप आगे बढ़ोगे तो दिल्ली पीछे थोड़ा रह जाएगा। आपकी ताकत का लाभ, दिल्ली भी आगे बढ़ जाएगा। और अगर दिल्ली आगे बढ़ता है, तो देश की राजधानी है, हिन्दुस्तान को आगे बढ़ने का अवसर देने की ताकत, ये हरियाणा में है।

भौगोलिक रूप से आप ऐसे स्थान पर हैं, जहां से आप देश को ताकत दे सकते हैं। और इसलिए ये स्वर्णिम जयंती का अवसर उन नए सीमा-चिन्हों को पार करने वाला बने, जन-सामान्य के लिए संकल्प का बने, बदलाव हमारे गांव से हो, बदलाव हमारे इलाके से हो, और उसका परिणाम सम्पूर्ण हरियाणा के बदलाव से प्रभावित करने वाला हो। अगर इस भाव को ले करके इस स्वर्णिम जयंती को हम मनाएंगे, अनेक कार्यक्रम करेंगे, जन-भागीदारी से करेंगे, और कार्यक्रम, कार्यक्रम के लिए नहीं करेंगे, कुछ न कुछ achieve करने के लिए करेंगे, कुछ न कुछ पूर्ति करने के लिए करेंगे।

आप देखिए हरियाणा में इतनी ताकत है, इतनी ताकत है वो देश को भी आगे ले जाने के लिए एक growth engine के रूप में काम कर सकता है।

मैं फिर एक बार विश्वभर में फैले हुए सभी हरियाणावासियों को, हरियाणा में रहने वाले सभी नागरिकों को, इस स्वर्णिम जयंती के अवसर पर अनेक-अनेक शुभकामनाएं देते हुए ये अपेक्षा करता हूं कि हम शांति, एकता, सद्भावना के मंत्र को ले करके, कंधे से कंधा मिला करके, आने वाली पीढ़ियों के भाग्य को सुनिश्चित करने के लिए सही दिशा में चलें।

जिन सपनों को ले करके हरियाणा बनाया था, उन सपनों को पूरा करने के लिए एक बहुत बड़ा jump लगाने का उद्देश्य ले करके चलें, और हरियाणा में ताकत है ये मेरा पूरा विश्वास है। हरियाणा ये कर सकता है, ये मेरा पूरा भरोसा है। और जिसके ऊपर भरोसा होता है उसी से अपेक्षा होती है। और मुझे विश्वास है कि स्वर्णिम जयंती के अवसर पर आप इन नई ऊंचाइयों को पार करेंगे, मेरी आपको बहुत-बहुत शुभकामनाएं। धन्यवाद।

अतुल कुमार तिवारी/ अमित कुमार/ निर्मल शर्मा

पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय

01-नवंबर-2016 17:20 IST

छत्तीसगढ़ राज्योत्सव - 2016 के उद्घाटन पर प्रधानमंत्री के भाषण का मूल पाठ

मंच पर विराजमान छत्तीसगढ़ के राज्यपाल श्रीमान बलराम दास जी टंडन, छत्तीसगढ़ के जनप्रिय मुख्यमंत्री डॉ. रमण सिंह जी, केन्द्र में मंत्री परिषद के मेरे साथी श्रीमान विष्णु देव जी, छत्तीसगढ़ विधनसभा के अध्यक्ष श्रीमान गौरीशंकर अग्रवाल जी, छत्तीसगढ़ सरकार के सभी मंत्री वरय, सांसद श्री रमेश जी, मंच पर विराजमान सभी महानुभाव और विशाल संख्या में पधारे हुए छत्तीसगढ़ के मेरे प्यारे भाइयों और बहनों।

अभी तो देश दीपावली के त्योहार में डूबा हुआ है। सब ओर दिवाली मनाई जा रही है और ऐसे समय मुझे छत्तीसगढ़ आने का अवसर मिला। मैं आप सबको दीपावली के इस पावन पर्व की बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूँ। आज मेरा एक विशेष सौभाग्य है, जब माताएं, बहने आशीर्वाद देती हैं, तो आपके कार्य करने की शक्ति अनेकों गुणा बढ़ जाती है। आज पूरे छत्तीसगढ़ से भाईदूज के इस त्योहार पर लाखों की तादाद में बहनों ने मुझे आकर के आशीर्वाद दिया है। विशेषकर मेरी आदिवासी बहनों ने मुझे आशीर्वाद दिया है। मैं इन सभी बहनों को नमन करता हूँ। और मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ आपका ये भाई मां भारती के कल्याण के लिए सवा सौ करोड़ देशवासियों की भलाई के लिए आपके आशीर्वाद से कार्य करने में कोई कमी नहीं रखेगा।

आज छत्तीसगढ़ के हमारे गवर्नर हम सबके वरिष्ठ नेता श्रीमान बलराम दास जी का भी जन्मदिन है। मैं उनको बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। और आज एक ऐसा महत्वपूर्ण दिवस है, जिसके लिए हम भारत के पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपयी जी का जितना धन्यवाद करें उतना कम है। आज पूरे छत्तीसगढ़ की तरफ से, पूरे मध्यप्रदेश की तरफ से, पूरे उत्तर प्रदेश की तरफ से, पूरे उत्तराखंड की तरफ से, पूरे बिहार की तरफ से, पूरे झारखंड की तरफ से हम सब अटल बिहारी वाजपयी का बहुत-बहुत धन्यवाद करते हैं। उनका अभिनन्दन करते हैं कि उन्होंने छत्तीसगढ़ का निर्माण किया।

किसी राज्य की रचना इतने शांतिपूर्ण ढंग से हो, प्यार भरे माहौल में हो अपनेपन की भावना को और अधिक ताकत दे इस प्रकार से हो, आने वाली हर पीढ़ी को छत्तीसगढ़ का निर्माण हो, झारखंड का निर्माण हो, उत्तराखंड का निर्माण हो दीर्घ दृष्टि से सबको साथ लेकर के हर किसी का समाधान करते हुए लोकतांत्रिक परम्पराओं का और मर्यादाओं का पालन करते हुए राज्य रचना कैसे की जाती है, ये वाजपयी जी ने बहुत बड़ा उदाहरण प्रस्तुत किया है। वरना हम जानते हैं। हमारे देश में राज्यों के निर्माण ने कैसी-कैसी कटुता पैदा की। कैसा विखवाद पैदा कर दिया। अलग राज्य बनकर के विकास की यात्रा के बजाय अगर सही ढंग से काम नहीं होता है, तो हमेशा-हमेशा वैर भाव के बीच फलते फूलते रहते हैं। हम भाग्यशाली हैं कि वाजपयी जैसे महान नेता उन्होंने हमें छत्तीसगढ़ दिया। कौन सोचता था कि 16 साल पहले जब छत्तीसगढ़ बना, किसने सोचा था कि हिन्दुस्तान के राज्यों की विकास की यात्रा में ये आदिवासी विस्तार वाला नक्सल प्रभावी इलाका भी हिन्दुस्तान के विकसित राज्यों के साथ भी टक्कर लेगा। और विकास के मुद्दे पर आगे बढ़ेगा। 13 साल तक डॉ. रमण सिंह जी को सेवा करने का मौका मिला है। और हम लोगों का मंत्र रहा है। विकास का। देश की हर समस्या का समाधान सिर्फ और सिर्फ एक ही मार्ग से हो सकता है और वो मार्ग है विकास का।

हमें जहां-जहां सेवा करने का अवसर मिला है। उन सभी राज्यों में और वर्तमान में भारत सरकार में हम विकास के पथ पर आगे बढ़ने का पूरा समर्पित भाव से प्रयास कर रहे हैं। आज मेरा ये भी सौभाग्य है। के हम सबके मार्गदर्शक जिनके चिंतन की आधारशिला पर उनके चिंतन के प्रकाश में हम हमारी नीतियां बनाते हैं रणनीति तैयार करते हैं। और समाज के आखिरी छोर पर बैठे इंसान के कल्याण के लिए हम पवित्र भाव से, सेवा भाव से अपने आपको खपाते रहते हैं। वो हमारे प्रेरणा पुरुष पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी, जिनकी जन्मसदी का वर्ष है। और हमने पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी की जन्मशताब्दी वर्ष को गरीब कल्याण वर्ष के रूप में साल भर सरकारें, समाज, स्वच्छिख संगठन, गरीबों के कल्याण के कार्यक्रमों पर अपना समय केन्द्रित करें। आज उस महापुरुष पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी की प्रतिमा का मुझे लोकार्पण करने का सौभाग्य मिला। और जनपद से राजपथ तक एक आत्मपथ का भी जो पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के चिंतन का एक परिचय एक शब्द में करना है तो है एकात्मता वो एकात्म पथ का निर्माण किया है। मैं आज सुबह जब से आया हूँ। हर जगह पर जाकर के योजनाओं को देख रहा था। बड़े मन को प्रभाव पैदा करने वाली योजनाओं की रचना हुई है। निर्माण कार्य उत्तम हुआ है। और आज नहीं जब 50 साल के बाद कोई छत्तीसगढ़ आएगा, नया रायपुर देखेगा, एकात्म पथ देखेगा, तो उसे लगेगा कि हिन्दुस्तान का एक छोटा सा राज्य भी क्या कमाल कर सकता है। आदिवासी इलाका भी कैसी नई एक रौनक ला सकता है। इसका संदेश कि आज एक प्रकार से शिलान्यास हुआ है। ये 21वीं सदी, छत्तीसगढ़ में आज जो नींव रखी जा रही है। आज जो योजनाओं को आगे बढ़ाया जा रहा है। गरीब से गरीब के कल्याण के कार्यों को बल दिया जा रहा है। Make In India के द्वारा यहां की जो प्राकृतिक संपदा है। उसे मूल्यवृद्धि करके भारत की अर्थव्यवस्था में भी बल देने का प्रयास छत्तीसगढ़ की धरती से, छत्तीसगढ़ के नागरिकों द्वारा, छत्तीसगढ़ की सरकार के द्वारा डॉ. रमण सिंह जी की टीम के द्वारा जो काम हो रहा है। उसका प्रभाव पूरी शताब्दी पर रहने वाला है। ये ऐसी मजबूत नींव तैयार हो रही

है। जो छत्तीसगढ़ का भाग्य बदलने वाली है। इतना ही नहीं वो हिन्दुस्तान का भाग्य बदलने में भी अपनी अहम भूमिका अदा करने वाली है।

मुझे आज डॉ. रमण सिंह जी अपने प्रिये प्रोजेक्ट जंगल सफारी में भी घूमने के लिए ले गये थे। और लग रहा था कि टाइगर उनको पहचानता था। आंख में आंख मिलाने के लिए चला आया था। मुझे विश्वास है कि न सिर्फ छत्तीसगढ़ के लोग देश के अन्य भागों से भी Tourism के दृष्टि से ये प्राकृतिक माहौल में तैयार किया गया जंगल सफारी को देखने के लिए लोग आएंगे। Tourism के विकास की बहुत संभावना है। और छत्तीसगढ़ के पास Tourism को बल देने के लिए अंतरनिहित बहुत सी ताकत पड़ी हुई है। यहां की शिल्प कला Tourism के आकर्षण का एक महत्व अंग होती है। यहां के जंगल, यहां के प्राकृतिक संपदा टूरीस्ट लोग आज Back to Basic की तरफ जाने के मूड के बने हैं। जब उनको Eco Tourism के लिए Invite किया जाए तो एक बहुत बड़ी संभावना छत्तीसगढ़ के जंगलों में Eco Tourism की पड़ी हुई है। और Tourism ऐसा क्षेत्र है कि जिसमें कम से कम पूंजी निवेश से अधिक से अधिक लोगों को रोजगार मिलता है। एक कारखाना लगाने में जितनी पूंजी लगाएं। उससे जितनों को रोजगार मिलता है। उससे दसवें हिस्से की पूंजी लगाकर के अधिक लोगों को रोजगार Tourism से मिलता है। और Tourism एक ऐसा क्षेत्र है गरीब से गरीब कमाता है। ऑटो रिक्शा वाला भी कमाएगा। खिलौने बेचने वाला कमाएगा, फल फूल बेचने वाला कमाएगा, चॉकलेट बिस्किट बेचने कमाएगा, चाय बेचने वाला भी कमाएगा। ये गरीब से गरीब को रोजगार देता है। और इसलिए ये नया रायपुर ये जंगल सफारी एकात्म पथ विकास के धाम तो है ही है लेकिन भविष्य में Tourism के Destination बन सकते हैं। और जिस प्रकार से डॉ. रमण सिंह जी मुझे लगातार इन चीजों का ब्यौरा दे रहे थे। मुझे विश्वास है जिन सपनों को उन्होंने संजोया है वो बहुत ही निकट भविष्य में पूरा छत्तीसगढ़ के आंखों के सामने होंगे। और रमण सिंह जी के नेतृत्व में होंगे। ये बड़े संतोष की बात है।

भाइयों बहनों में जब पंडित दीनदयाल उपाध्याय जन्मशदी की बात कर रहा हूं तब इस देश में गरीबी को मिटाने के लिए गरीब से मुक्ति के लिए, केन्द्र हो राज्य हो, पंचायत हो या पालिका हो। हम सबने मिलकर के पूरी ताकत लगाकर के गरीबी से मुक्ति का जंग कंधे से कंधा मिलाकर के लड़ना है। और गरीबी से मुक्ति का मार्ग गरीबी में जिनको जिन्दगी गुजारनी पड़ी है। उनको सौगातें बांट कर नहीं रोक सकता है। उनको सामर्थवान बनाने से हो सकता है। अगर उसे शिक्षित किया जाए। उसे हुनर सिखाया जाए। उसे कार्य करने के लिए औरजार दिये जाएं, उसे काम करने का अवसर दिया जाए तो वो सिर्फ अपने परिवार की गरीबी हटाएगा ऐसा नहीं वो अड़ोस पड़ोस के भी दो परिवारों की गरीबी हटाने की भी ताकत उसमें आ जाती है। और इसलिये Empowerment of Poor उस दिशा में हमने काम को बल दिया है।

हम जानते हैं गरीब बच्चों को सरकार की योजनाएं तो चलती हैं टीकाकरण की, आरोग्य के लिए लेकिन उसके बावजूद भी जो मां पढ़ी लिखी है थोड़ी जागरूकता है वहां के स्थानीय लोग जरा सक्रीय हैं, तो तो टीकाकरण हो जाता है गरीब का बच्चा आने वाली बीमारी से बचने के लिये सुरक्षा कवच प्राप्त कर लेता है। लेकिन अभी भी हमारे देश में अशिक्षा है। गरीब मां को पता नहीं है बच्चे को क्या क्या टीका लगवाना होता है। और लाखों बच्चे सरकारी योजनाएं होते हुए भी बजट का खर्च होते हुए भी टीकाकरण से बच जाते थे। हमने एक इन्द्रधनुष योजना बनाई है। इस इन्द्रधनुष योजना के तहत routine में टीकाकरण होता है। वहां अटकना नहीं है। गांव गांव गली गली गरीब के घर जाकर के खोजना है। कौन बच्चे हैं जो टीकाकरण से छूट गए हैं। मेहनत चल रही है लेकिन हमारे सारे साथी लगे हैं। और लाखों की तादाद में ऐसे बालकों को ढूंढ कर निकाला और उसका टीकाकरण कर के उनके आरोग्य के लिए ताकत देने का प्रयास हमने किया। सफलतापूर्वक अभियान चलाया। सिर्फ योजना आंकड़ों से नहीं परिणाम से प्राप्त करने तक जोड़ना इस बात में बल दिया है।

एक जमाना था Parliament के Member को 25 गैस कनेक्शन की कूपन मिला करती थी और सैकड़ों लोग, बड़े – बड़े लोग उन एमपी साहब के अगल बगल में घूमते रहते थे कि अरे साहब जरा एक गैस कनेक्शन का कूपन दे दो। घर में गैस कनेक्शन लगाना है। बड़े – बड़े लोग सिफारिश लगाते थे। और कभी अखबारों में आया करता था कि कुछ एमपी तो गैस के कूपन ब्लैक में बेच देते थे। ऐसी भी खबरें आती थी। गैस कनेक्शन पाना कितना कठिन था। ये बहुत पुरानी बात नहीं दस पंद्रह साल पहले भी लोग ये जनता थी। भाइयों बहनों मैंने बीड़ा उठाया कि मेरी गरीब माताएं जो लकड़ी के चूल्हे जलाकर के धूप में अपनी जिन्दगी गुजार दी। एक गरीब मां जब लकड़ी का चूल्हा जलाकर के खाना पकाती है तो चार सौ सिगरेट जितना धुआं उसके शरीर में हर दिन जाता है। आप कल्पना कर सकते हैं। एक गरीब मां अगर हर दिन उसके शरीर में चार सौ सिगरेट का धुआं जाए, तो उस मां की तबीयत का हाल क्या होगा। उन बच्चों का क्या हाल होगा। और मेरे देश के भविष्य का क्या हाल होगा। क्या हम हमारी गरीब माताओं को ऐसी जिन्दगी जीने के लिए मजबूर करते रहेंगे या उनको उनके नसीब में छोड़ देंगे। हमने बीड़ा उठाया है। आने वाले तीन साल में इन गरीब परिवारों में पांच करोड़ परिवारों में लकड़ी के चूल्हे और धूप से मुक्ति दिलाकर के प्रधानमंत्री उजवला योजना के तहत गैस का कनेक्शन पहुंचाना गैस का

चूल्हा पहुंचाना और जंगलों को काटने से बचाना लकड़ी लेने के लिए जो माताओं को मेहनत करनी पड़ती थी उससे बचाना जब जरूरत पड़े तब बच्चों को खाना खिला सके ऐसी व्यवस्था देना बड़ा पुजोश काम चालया है।

भाइयों बहनों जिसके मूल में एक ही विचार है एक ही भावना है। देश को गरीबी से मुक्ति दिलाना। भाइयों बहनों हम मेक इन इंडिया का अभियान चला रहे हैं। क्यों? हमारे देश के पास नौजवान हैं। इनके पास मजबूत भूजाएं हैं। दिल भी है दिमाग भी है। अगर उनको अवसर मिले तो दुनिया में उत्तम से उत्तम चीज बनाने की ताकत ये हमारे नौजवान रखते हैं। उनको हुनर सीखना है अगर हुनर सिखाया। Skill Development किया मेरे नौजवान अपने पैरों पर खड़े रहने की ताकत रखते हैं। हमारी सरकार बनने के बाद हमने skill development का अलग मंत्रालय बनाया। अलग minister बनाया। अलग बजट आवंटित किया। और पूरे देश में सरकार के द्वारा राज्यों के द्वारा केन्द्र के द्वारा उद्योग के द्वारा public private partnership द्वारा जो भी model जहां भी लागू हो सकता है लागू करके skill development का बड़ा अभियान चलाया। skill development कहां से चलाया सुखी परिवार के बच्चे तो अच्छी से कॉलेजों में जगह पा लेते हैं। विदेशों में जाकर ये गरीब का बच्चा है जो तीसरी कक्षा तक, पांचवी कक्षा तक बड़ी मुश्किल से पढ़ता है और पढ़ना छोड़ देता है। और फिर Unskilled Labour के नाते जिन्दगी गुजार देता है। हम ऐसे बालकों को ढूंढ ढूंढ कर के Skill Development की ओर काम कर रहे हैं। ताकि गरीब से गरीब का बच्चा भी सम्मान के साथ अपने हाथ के हुनर के बल पर अपना भविष्य निर्माण कर सके। उस दिशा में हम काम कर रहे हैं। क्योंकि हमें देश को गरीबी से मुक्ति दिलानी है। काम कितना ही कठिन क्यों न हो। लेकिन देश का भला गरीबी की मुक्ति में ही है। अगर गरीबी से मुक्ति नहीं लाते बाकि पचासों चीजें कर लें देश का भाग्य नहीं बदल सकता। और इसलिए हमारा पूरा जोर पूरी ताकत गरीब के कल्याण के लिए लगी है। हमारा किसान परिवार बढ़ता चला जा रहा है। जमीन का दायरा कम होता जाता है। जमीन का बंटवारा होता रहता है पीढ़ी दर पीढ़ी। कम जमीन में पेट भरना घर चलाना कभी-कभी मुश्किल हो जाता है। किसी किसान के तीन बेटे हैं और बाप को पूछो, क्या सोचा है तो कहेंगे कि एक बेटे को तो खेती रखूंगा दो को कहीं शहर में भेज दूंगा रोजी-रोटी कमाने। हमें हमारी कृषि को हमारी खेती को viable बनाना है। छोटी जमीन में भी ज्यादा उत्पादन हो। मूल्यवान उत्पादन हो। और प्राकृतिक आपदा में भी मेरे किसान को संकटों से जुझने की ताकत मिले। ऐसी अर्थव्यवस्था कृषि अर्थव्यवस्था हो। किसान जो पैदा करता है उसको पूरे देश में मार्केट मिलना चाहिए। अड़ोस पड़ोस के कुछ दलाल व्यापारी उसकी मजबूरी का फायदा उठाकर के माल छीन लें। ये स्थिति बंद होनी चाहिए। और इसके लिए हमने E-NAM से पूरे देश में मंडियों का ऑनलाइन नेटवर्क खड़ा किया। अपने मोबाइल फोन से किसान कहां ज्यादा दाम मिलता है वहां अपना माल बेच सकता है ऐसी व्यवस्था को विकसित किया है।

मैंने आज यहां देखा कृषि का स्टोर इन्होंने भी E-NAM लोगों को समझ देने की व्यवस्था छत्तीसगढ़ ने की है। पूरे देश में किसानों को एक समान मार्केट मिले। किसान की मरजी से उसको दाम मिले। उस पर बल देने का काम किया। आजकल प्राकृतिक आपदाएं कभी अकाल तो कभी भयंकर बारिश कभी फसल तैयार होने के बाद बारिश किसान तबाह हो जाता है। पहली बार प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत मेरे देश के किसानों को सुरक्षा का एक गारंटी दिया गया। और बहुत कम पैसों से बीमा की योजना है। किसान को बहुत कम देना है। अधिकतम पैसा सरकार देगी। भारत सरकार देगी। अगर जून महीने में उसको फसल बोना है, लेकिन जुलाई तक बारिश ही नहीं आई। उसने फसल बो ही नहीं पाया। तो फसल तो खराब नहीं हुई। उसको तो बीमा नहीं मिल सकता। हमने ऐसी प्रधानमंत्री बीमा योजना बनाई है कि प्राकृतिक संकट के कारण वो बो नहीं पाया। तो भी उसका हिसाब लगा करके उसने एक इंच भी जमीन बोई नहीं होगी। तो भी उसके साल भर की आय का हिसाब लगाकर के उसको बीमा का पैसा मिलेगा। पहली बार देश में ऐसा हुआ है।

फसल तैयार हो गई फसल तैयार होने तक बारिश वारिश सब अच्छा रहा। सोला आने फसल हो गई खेत में फसल का ढेर पड़ा है। बस एक दो दिन में किसी का ट्रैक्टर मिल जाए फिर तो मार्केट में जाना ही जाना है और अचानक बारिश आ जाए। पूरा फसल तैयार की गई बर्बाद हो जाए। अब तक ऐसा होता था तो insurance वाले कहते थे। भई जब तुम्हारी फसल खड़ी थी तो तुम्हारा कोई नुकसान नहीं हुआ तो पैसा नहीं मिलेगा। हम एक ऐसी प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना लाए हैं। कि फसल की कटाई के बाद ढेर पड़ा है। और 15 दिन के भीतर भीतर कोई प्राकृतिक आपदा आ जाए और नुकसान हो गया तो प्रधानमंत्री फसल योजना बीमा के जरिये किसान को पैसा मिलेगा। यहां तक की व्यवस्था है। मेरे देश के किसान को सुरक्षित करना साथ साथ किसान के लिए मूल्यवृद्धि करना। किसान जो पैदावार करता है। उसकी मूल्यवृद्धि हो। Value addition हो। अगर वो आम पैदा करता है तो आम का आचार बनता है। तो ज्यादा मंहगा बिकता है। अगर वो टमाटर पैदा करता है लेकिन टमाटर का कैचअप बनता है तो ज्यादा मंहगा बिकता है। वो दूध पैदा करता है। और दूध बेचता है तो कम पैसा मिलता है। दूध की मिठाई बना बेचता है तो ज्यादा पैसा मिलता है। ये मूल्यवृद्धि होनी चाहिए। Value addition होना चाहिए। छत्तीसगढ़ ने कई ऐसे कार्यक्रम शुरू किए हैं मैं देख रहा था। जिसमें किसान जो पैदा करता है। उसमें Value addition है। अगर गन्ना पैदा करने वाला किसान गन्ने बेचता रहेगा तो कमाएगा नहीं। लेकिन शुगर तैयार हो जाती है। गन्ने से किसान भी कमाता है। और इसलिए हमारा बल गांव, गरीब, किसान, मजदूर, नौजवान इनके सामर्थ्य को

कैसे बढ़ावा मिले देश विकास की नई ऊंचाइयों को कैसे पार करे। उस दिशा में एक के बाद एक कदम उठाए जा रहे हैं। देश की सरकार cooperative federalism को लेकर के cooperative competitive federalism को बल दे करके आगे बढ़ रही है। हम चाहते हैं कि राज्यों राज्यों के बीच में स्पर्धा हो। विकास की स्पर्धा हो। अगर एक राज्य open defecation free हुआ तो दूसरे राज्य का मिशन भी बन जाना चाहिए कि हम भी पीछे नहीं रहेंगे। हम भी कर के रहेंगे। अगर एक राज्य उद्योग की एक धारा को पकड़ता है तो दूसरा राज्य दूसरी धारा पकड़ कर के कि हां देखो मैं आपसे आगे निकल गया। हम स्पर्धा चाहते हैं राज्यों के बीच में। विकास की स्पर्धा चाहते हैं। और भारत सरकार इस विकास के यात्रा में जो तेज गति से आगे आना चाहता है। ऐसे सभी राज्यों को किसी भी प्रकार के भेदभाव के बिना हर प्रकार की मदद करने के लिए हमेशा हमेशा प्रतिबद्धता है। छत्तीसगढ़ भविष्य के विकास के लिये जो भी योजना लाएगा। छत्तीसगढ़ ने जिन-जिन योजनाओं को लाया है। दिल्ली में बैठी हुई सरकार छत्तीसगढ़ के कंधे से कंधा मिलाकर के खड़ी है और आगे भी खड़ी रहेगी। और छत्तीसगढ़ को नई ऊंचाइयों में ले जाने में हम कभी भी पीछे नहीं रहेंगे। मैं फिर एक बार छत्तीसगढ़ के इस राज्योत्सव के समय पर छत्तीसगढ़ के कोटी कोटी जनों को अनेक अनेक शुभकामनाएं देता हूं। छत्तीसगढ़ के उज्ज्वल भविष्य के लिए भारत सरकार की तरफ से पूर्ण सहयोग के लिए आश्वासन देता हूं। और आइये हम सब मिलकर के छत्तीसगढ़ को विकास की नई ऊंचाइयों पर ले जाएं इसी एक शुभकामना के साथ मेरे साथ बोलिये भारत माता की जय। आवाज दूर दूर तक जानी चाहिए। भारत माता की जय। भारत माता की जय। भारत माता की जय। बहुत बहुत धन्यवाद।

अतुल तिवारी/अमित कुमार/ शौकत अली

